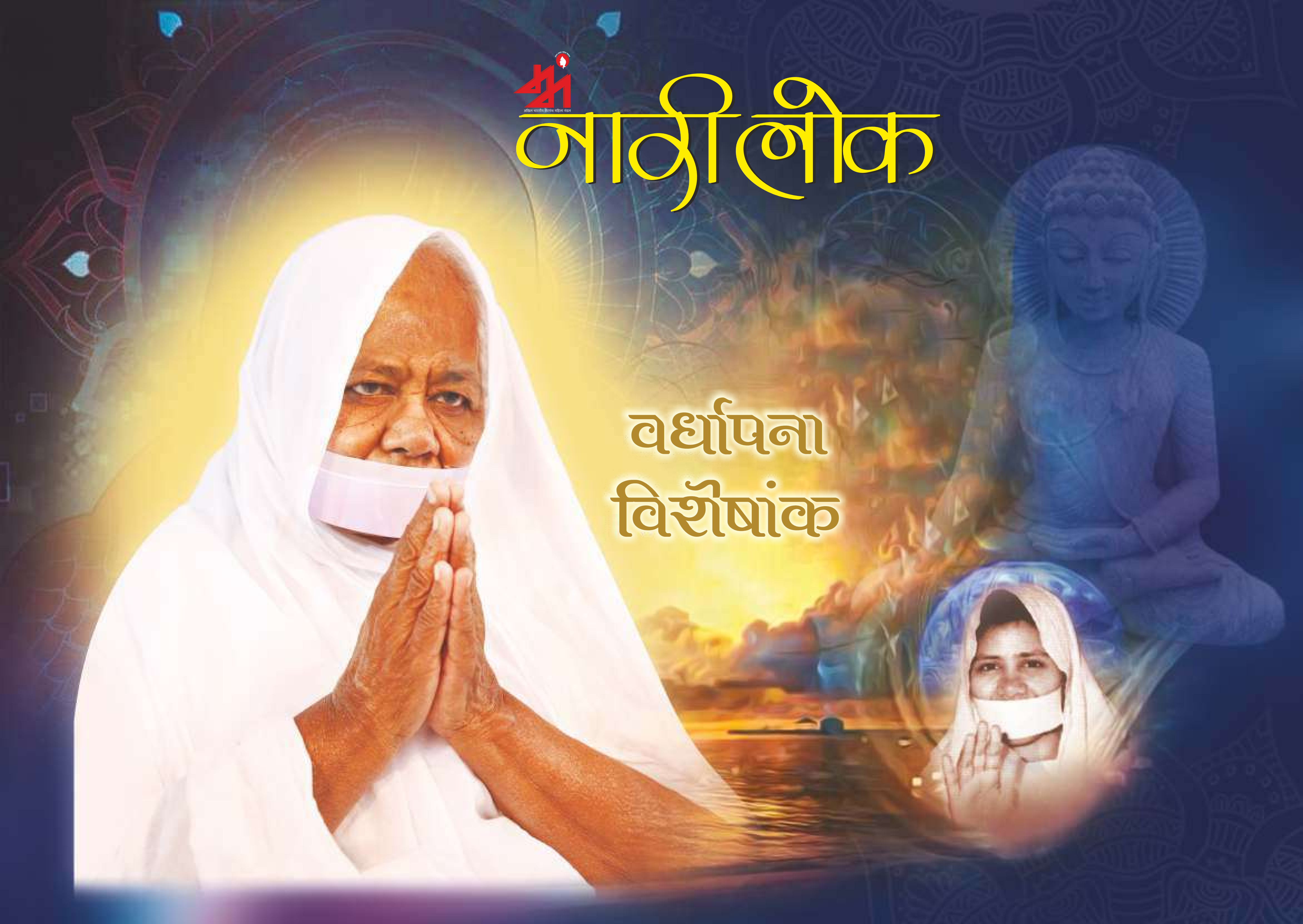
अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल
नारीलोक
वर्धापना
विशेषांक

तीन गुरुओं की कृपा

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा को मैंने जब से देखा, सहज भाव से विनम्र पाया। इसका समर्पण अनौपचारिक है। सत्यनिष्ठा और पापभीरूता इसे प्रकृति से प्राप्त है। अभिमान तो इसे छू भी नहीं सका। मैंने अपनी पारदर्शी दृष्टि से इन सबका आकलन किया। मुझे स्पष्ट दिखाई दिया कि यह साध्वी समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है। इसी चिंतन के आधार पर इसे साध्वीप्रमुखा का गरिमापूर्ण दायित्व मैंने सौंपा है।

आचार्य तुलसी

दायित्व उन्हें सौंपा जाता है, जिनमें क्षमता हो, योग्यता हो। कनकप्रभाजी में दोनों है। इनमें प्रबुद्धता है, कर्मठता है, लेखन की, वक्तृत्व की क्षमता है, कर्तव्यनिष्ठा है। मुझे प्रसन्नता है कि साध्वी प्रमुखा उत्तरोत्तर योग्यता को बढ़ा रही है। इनकी विनम्रता को प्रथम श्रेणी में रखा जा सकता है। साध्वी प्रमुखा ने योग्यता की कसौटी में शत प्रतिशत नहीं, सवा सौ नम्बर प्राप्त किए हैं, हर दृष्टि से खरी उतरी है। सहिष्णुता में ये नम्बर वन है। वैराग्य व साधुत्व के प्रति इनकी निष्ठा बेजोड़ है।

आचार्य महाप्रज्ञ

गुरुदेवश्री तुलसी ने साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा के रूप में एक व्यक्तित्व को धर्मसंघ के सम्मुख प्रस्तुत किया जो अष्टम साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा के रूप में संघ को अपनी सेवाएं दे रही है। गुरुदेवश्री तुलसी के समय आपको खूब सेवा और उनके चरणों में बैठकर कार्य करने का मौका मिला। ऐसा स्वर्णिम अवसर हर किसी को नहीं, किसी भाग्यशाली साध्वी को ही मिलता है। उसमें एक नाम साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी का है। गुरुदेवश्री तुलसी ने आपको आचार्यों के सामने पट्ट पर बैठने की बख्शीश प्रदान कर दी, इस प्रकार आप असाधारण साध्वी प्रमुखा है।

आचार्य महाश्रमण

अष्टभाषीय अभ्यर्थना गीत

विविधरूपधारिणी भूतले, प्रणमामि श्री कनकप्रभां
चित्तमधुराः गायन्ति महनीयां पुण्ययशोगाथां
गुरुतुलसीनां पुण्यकृतीमां प्रणमामि श्री कनकप्रभां
सहस्रशः प्रणमामि पादौ प्रणमामि श्री कनकप्रभां

हिन्दी

रूप अनेकों झलके महीतल गूंजे यश झणकारा,
श्रुतोपासिका स्तवना तेरी, गाए मन बन्जारा।
गुरु तुलसी कृति कनकप्रभा को नमन हजार हमारा,
श्रुतोपासिका स्तवना तेरी, गाए मन बन्जारा।।

राजस्थानी

अनगिण रूप घणेरा जग में, गूंजे जस रा झणकारा,
श्रुतोपासिका थारी स्तवना, गावै मन बंजारा।
गुरु तुलसी कृति कनकप्रभा ने, खम्मा घणी है म्हारा,
श्रुतोपासिका थारी स्तवना गावै मन बंजारा।।

पंजाबी

रूप कई झलके धरती विच गूंजे यश झनकारा,
श्रुतोपासिका स्तवना तोहड्डा, गाए मन बन्जारा।
गुरु तुलसी कृति कनकप्रभा नु लख लख नमन है साड्डा,
श्रुतोपासिका स्तवना तोहड्डा, गाए मन बन्जारा।।

गुजराती

रूप घणा छलके पृथ्वी पर, गाजे यश नु झणकारु,
श्रुतोपासिका स्तवन तमारू गाये मन वणझारू।
गुरु तुलसी कृति कनकप्रभा ने नमन हजार अमारू,
श्रुतोपासिका स्तवन तमारू गाये मन वणझारू।।

नेपाली

रूप अनेकौं झल्किन्छन, गुन्जिछन यश झणकारा,
श्रुतोपासिका महिमा तिम्रो, गाऊंछ मन बंजारा।
गुरु तुलसी कृत कनक प्रभालाई, नमन हजारौं हाम्रा,
श्रुतोपासिका महिमा तिम्रो, गाऊंछ मन बंजारा।।

मराठी

अनेक रुपे तुझी माऊली, गाई भूमी अमृतधारा,
गुण वर्णन मी कसे करू, चित्तात सदैव तुझी छाया।
गुरु तुलसी जीचे पाठिशी, माय माऊली कनकप्रभा,
गुण वर्णन मी कसे करू चित्तात सदैव तुझी छाया।।
कोटी कोटी प्रणाम तुजला, माय माऊली कनकप्रभा।।

कन्नड

भूमिय मेले विविध रूपगळ, प्रतिध्वनिसुत्तदे यश झेंकारा,
श्रुतोपासिके तम्म गुणवनु हाडुवे मनसु बंजारा।
तुळसी गुरुगळ पुण्य कृतियनु, कोटी कोटी नमस्कारा,
श्रुतोपासिके तम्म गुणवनु हाडुवे मनसु बंजारा।।

बंगाली

कोतोन रूपे धरिणी साजे, बाजै जस झणकार,
श्रुतोपासिका स्तवना तोमर गाही हृदय मझार।
गुरु तुलसी कृति कनकप्रभा के वन्दन कोरी शत बार,
श्रुतोपासिका स्तवना तोमर गाही हृदय मझार।।

कनकप्रभा

अध्यक्षीय अनुभूति

क्षण-क्षण की कड़ियां जब जुड़ती है, एक शृंखला बन जाती है और जब शृंखलाएं जुड़ती है तो इतिहास बन जाता है। कथाएं वही इतिहास बनती है जिनमें युग परिवर्तन, हृदय परिवर्तन की क्षमता हो। जिनकी कहानी के हर अध्याय का हर पृष्ठ जीवन परिवर्तन हेतु दर्पण बनता है। ऐसे विरल व्यक्तित्व ही होते हैं जो स्वयं के इतिहास के साक्षी खुद बन पाते हैं। पांच दशक की अनुपम शृंखला इतिहास के पन्नों पर अपने स्वर्णिम हस्ताक्षर करने को तैयार है। तेरापंथ धर्म संघ में 50 वर्ष पूर्व बोया हुआ बीज आज एक छायादार वृक्ष बनकर अपने विस्तार की कहानी, स्वयं की टहनी की कलम से लिख रहा है। कहानी का कथानक है, असाधारण साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी, कथाकार है आचार्यश्री तुलसी और उसे विस्तार दिया, जीवतंता दी परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत महोत्सव के रूप में। 'अमृत' जिसका शाब्दिक अर्थ है 'अमरता'। अमरता के महोत्सव की अगवानी को पूरा धर्मसंघ अति उत्साहित है।

पांच दशक के स्वर्णिम पन्नों पर श्रद्धासिक्त हस्ताक्षर

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी के जीवन के इतिहास के गवाक्षों में प्रथम सोपान से शिखर की यात्रा को पढ़ा, बिंदु से सिंधु की गाथा को सुना, साधारण से असाधारण की यात्रा के विभिन्न पड़ावों से साक्षात्कार किया, तब जाना कि कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनके व्यक्तित्व के विविध आयामों को शब्दों में समेट पाना आसान नहीं है। साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा एक ऐसा नाम, एक ऐसा महाधाम, जिनके हर आयाम आगामी नव आयाम की ओर इशारा करती है। कोई नहीं जान सकता कि उनके व्यक्तित्व की विशालता, व्यापकता कहां विराम लेगी। प्रमुखाश्रीजी मानों हिमगिरि के उत्तंग शिखर के तुल्य हैं जिनकी शृंखला में अनेक गगनचुंबी चोटियां दिखाई देती है। प्रमुखाश्रीजी पूर्णिमा के शशधर के समान शीतल ज्योत्सना प्रदान करती है, जिसकी स्निग्ध ज्योति में समस्त ग्रह, नक्षत्र, सितारे चमक उठते हैं। आपका जीवन पावन सदा नीरा गंगा की तरह है, जिसकी विविध धाराएं जन-जन के अंतर्मन को तृप्त करती है। आप सहस्र धाराओं का ऐसा अजस्र स्रोत है जो आत्मा की रुग्णता का उपचार तो करती ही है साथ ही सृजन की उत्कण्ठा भी उत्पन्न करती है। ऐसी अमृत धाराओं का सिंचन पाकर जीवन्तता की अनुभूति होती है। इन धाराओं का मेरे जीवन के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान है। इन धाराओं में से किसी एक धारा ने मेरे व्यवहार को, तो और एक धारा ने मेरे पुरुषार्थ को, एक धारा ने मेरी लेखनी को तो वहीं और एक धारा ने मेरे विचारों को परिष्कृत किया है। बौद्धिकता के साथ आत्म अनुभूति की कला वही सिखा सकता है जिसका स्वयं का जीवन कनक सा खरा हो। उनके जीवन को निकटता से देखने के अवसर मिलते रहे हैं और हर अवसर के बाद श्रद्धा घनीभूत होती चली गई।

आपकी परिकल्पना में केसरिया नारी शक्ति की उन्मुक्त उड़ान के साथ यथार्थ की ज़मीं के गहरे अनुबन्ध की तारतम्यता को जोड़ कर रख सकूं। संस्था के लिए आपने जो मंजिलें तय की है, उन अमाप्य ऊंचाइयों पर गतिमान रह सकूं। आपके आलेखों में निहित स्वर्ण-सूत्रों को स्वस्थ परिवार स्वस्थ समाज का सेतु बना सकूं। आपके काव्य सृजन के कुछ मोतियों को अपनी लेखनी में समेट सकूं। आपके व्यक्तित्व की आकाशी ऊंचाई और सागरसम गहराई की एकरूपकता को समझ सकूं। आपकी नेतृत्व रश्मियों के सूक्ष्मतम बिन्दुओं को आत्मसात कर सकूं। आपके सपनों के महिला समाज के निर्माण में कुछ योगभूत बन सकूं। आपकी विनम्रता, सौम्यता, सहजता, धैर्यता, क्षमता, बौद्धिकता के अंशों को अपने भीतर समेट सकूं। आपका स्नेहिल आशीर्वाद और कर्तृत्व की शीतल छांव तले जीवन को सहज बना सकूं। जीवन की हर उपलब्धि आपके चरणों में अर्पण... सर्वस्व समर्पण।

नीलम सेठिया

अध्यक्ष

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

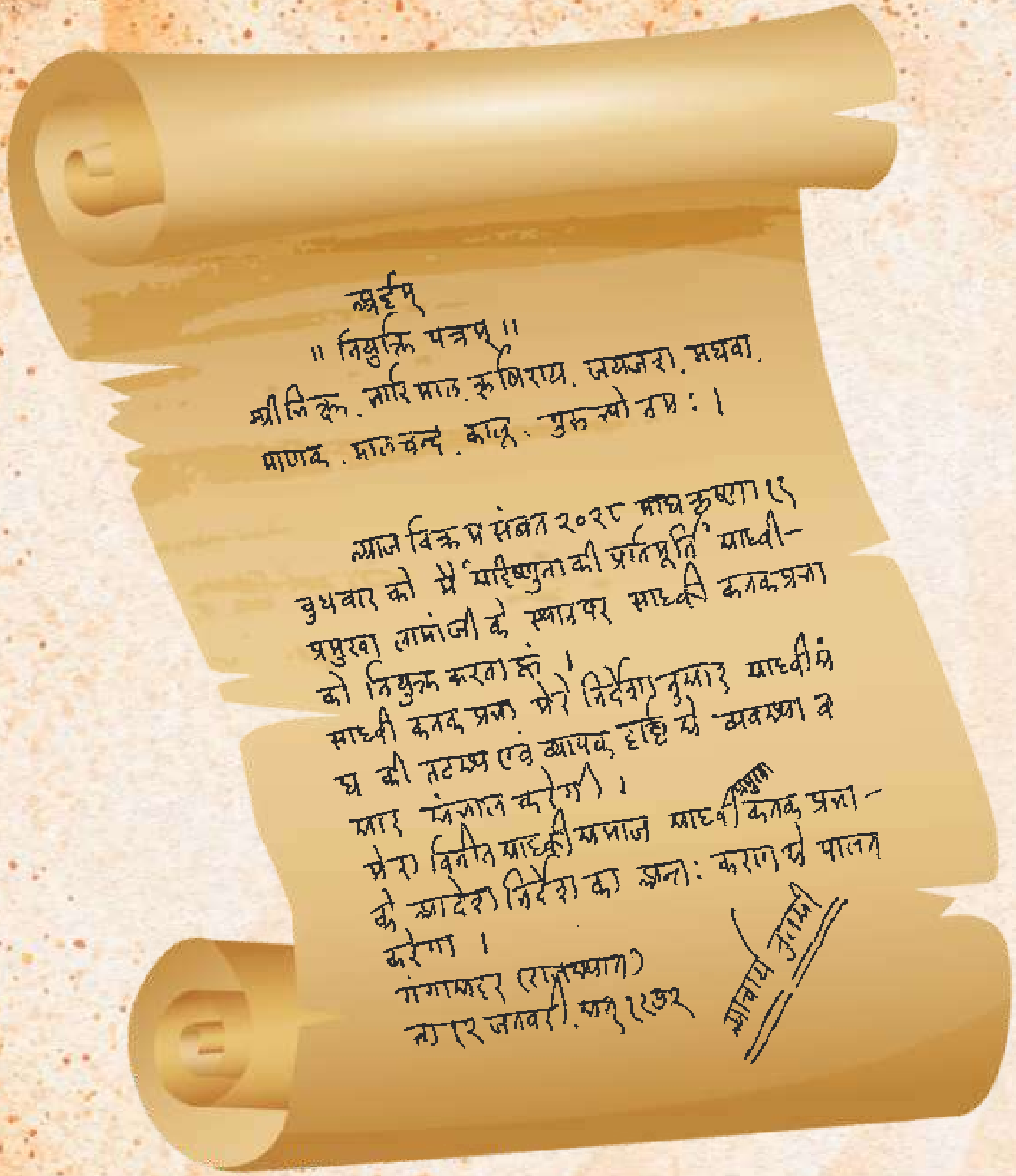
अर्हम्
॥ नियुक्ति पत्रम् ॥
श्री भिक्षु. भारीमाल. ऋषिराय. जयजश. मघवा.
माणक. डालचन्द. कालू: गुरुभ्यो नमः ।

आज विक्रम संवत २०२८ माघ कृष्णा १३
बुधवार को मैं 'सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति' साध्वी-
प्रमुखा लाडांजी के स्थान पर साध्वी कनकप्रभा
को नियुक्त करता हूं। मेरे निर्देशानुसार साध्वीसं
साध्वी कनकप्रभा
घ की तटस्थ एवं व्यापक दृष्टि से व्यवस्था व
सार संभाल करेगी।
मेरा विनीत साध्वी समाज साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा-
के आदेश निर्देश का अन्तः करण से पालन
करेगा।
गंगाशहर (राजस्थान)
ता. १२ जनवरी. सन् १९७२
आचार्य तुलसी

सादर बद्धांजलि नतमस्तक, काँप रहे थे दोनों पाँव।
वन्दन की मुद्रा में बैठी, कल्पवृक्ष की शीतल छाँव।
लिया एक परिपत्र हाथ में, किया स्वयं उसका वाचन।
लाडांजी के रिक्त स्थान पर, कनकप्रभा का निर्वाचन॥

गुरु की परख ने पहचाना अप्रतिम प्रतिभा को

साध्वीप्रमुखा पद नियुक्ति
पत्र लेखन – 12 जनवरी 1972
विधिवत् घोषणा – 14 जनवरी 1972

वि. सं. 2028 माघ कृष्णा त्रयोदशी का शुभ दिन। भारत के विभिन्न सुदूर प्रान्तों से पदयात्रा कर गुरु सन्निधि में पहुंचे सैंकड़ों अमल–धवल साधु–साध्वियों का समूह एवं सहस्रों श्रद्धालु श्रावक–श्राविकाओं की उपस्थिति में आचार्यवर ने प्रवचन के मध्य उद्घोषणा की, 'आज मैं स्वर्गीया साध्वीप्रमुखा लाडांजी के दिवंगत होने के पश्चात् रिक्त हुए स्थान को पुनः महिमा मंडित करना चाहता हूं।'

धर्म परिषद् में समुपस्थित सहस्रों नयन और कान उत्सुकतापूर्वक निर्निमेष बन गए। आचार्यवर ने जैसे ही साध्वी कनकप्रभाजी के नाम की घोषणा की, जनता के सक्रिय मस्तिष्क में प्रश्न कौंधा – कौन साध्वी कनकप्रभा? अकल्पित अपरिचित नाम सुन उत्कन्धर हो साध्वी कनकप्रभाजी की एक झलक पाने के लिए सभी उतावले हो उठे। साध्वी परिषद् की अन्तिम पंक्ति में बैठी साध्वी कनकप्रभाजी स्वयं का नाम सुन स्तब्ध रह गई। विश्वास कर पाना कठिन था कि वह स्वप्न है या यथार्थ। गुरुदेव का संकेत पा सहमाते–सकुचाते आचार्यवर के सामने बद्धांजलि मुद्रा में खड़े होने पर परमाराध्य आचार्यश्री ने उन्हें साध्वीप्रमुखा पद की वन्दना करवाई एवं लिखित नियुक्ति पत्र और नवीन रजोहरण प्रदान किया।

अपरिमित प्रज्ञा साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

'अमग्गं परियाणामि मग्गं उवसंपज्जामी'

मैं उन्मार्ग को छोड़ता हूं और सन्मार्ग पर आना चाहता हूं।

आगम के इस वाक्य के अनुत्तर महत्त्व को आत्मीकरण करते हुए जीवन को आदर्श पथ पर प्रशस्त करने का कार्य विरल व्यक्ति ही कर सकते हैं। ऐसे मंत्र पर अपेक्षिता अनुशीलन कर जीवन निर्माण का मंत्र मानना जितना सहज दर्शित होता है, आचरण में लाना उतना ही कठिन है। इसकी पृष्ठभूमि में संस्कारों के उद्भव, निर्माण और उन्नयन में प्रेरणा, प्रशिक्षण, परम्परा, पारिवारिक मूल्य और परिवेश का वैशिष्ट्य सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता है।

स्वतः स्फूर्त जागरूकता और तन्मयता का समीचीन परिचय देना सार्वत्रिक नगण्य रूप से उपलब्ध है। जीवन में आचार-विचार-व्यवहार को परिपक्वता प्रदान करने के सोद्देश्य अपनी योग्यता, प्रतिभा एवं प्ररुचिता का निरन्तर विकास करना ही असाधारण वैयक्तिकता का द्योतक है। स्वयं को तराशना और दूसरों के जीवन को समन्नुत करना मनुष्य जीवन की सार्थकता है। सप्रयोजन इस मूल्यवत्ता को जीवन में गुणग्राह्य करने वाले ही औरों के जीवन में तेजस्विता प्रदान करते हैं।

प्रतिभा पल्लवन के लिए भौगोलिक या पारिवारिक परिवेश कोई आत्यंतिक मायने नहीं रखता। कलावती अपने पारिवारिक बन्धन एवं तत्कालिक प्रचलित रूढ़िवाद के प्रतिकूल वस्तुस्थिति में भी आंतरिक जीवन-निर्माण के लिए उद्दिष्ट रही।

कलावती ने जीवन की क्षणभंगुरता एवं नश्वरता के बोध एवं आत्मा के पुनरुद्धार उद्देश्य से संयम जीवन मार्ग पर प्रशस्त किया। दीक्षा महात्याग है, आध्यात्मिक अभ्युत्थान का प्रगुणी पथ है, संबंधातीत जीवन की नई शुरुआत है, प्रशस्य पराक्रम है। जीवन में स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ के समंविति की समीचीन प्रतिष्ठापना का अहम् महत्व है, दीक्षा इसकी प्रयोग भूमि है। स्व-पर-कल्याण की क्षिप्र साधना में प्रवृत्त होना, श्रेयस सौभाग्य की बात है।

राग से विराग, अव्रत से महाव्रत, बहिर्मुखता से अंतर्मुखता एवं आगार से अणगार धर्म का अनुशीलन विलक्षण है। इसकी पुष्कल परिणति में आत्मोद्धार तो निहित है ही, साथ ही साधक की संस्कार-आचार-व्यवहार की परिष्कृत दिशाएं उद्घाटित होती है। इन सभी गुणों का समावेश करती साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने जीवन को त्यागमय, समर्पणमय और ममतामय बनाते हुए लोक-कल्याण में अपना सर्वस्व न्यौछावर किया एवं तीन आचार्यों का सामीप्य प्राप्त करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ में अमिट छाप का मुद्रांकन किया है।

जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा श्रेष्ठ एवं महान व्यक्तियों के जीवन से ही मिलती है। कोई भी व्यक्ति जिसने अपने जीवन में हमेशा सही रास्ते पर रहते हुए महान उपलब्धियां हासिल की हो, वे हमारे लिए सदृश महान हैं। तेरापंथ धर्मसंघ का भण्डार सैंकड़ों चारित्रिक रत्नों से परिपूर्ण है।

किसी के तेज, शोभा, प्रभाव या अन्य किसी भी गुण के अत्यन्त विकसित होने से ही वह व्यक्ति वन्दनीय बनता है। जहां तेज या प्रभाव है, वहां हम स्वतः नतमस्तक हो जाते हैं। प्रस्तुत प्रालेख साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के जीवनचरित को पल्लवित करती बहुमुखी प्रतिभाओं को उजागर करने का शिष्ट उद्यम है।

असाधारण व्यक्तित्व के जीवन वृत्तांतों को सचेत और कलात्मक ढंग से लिपिबद्ध करना दुष्कर संकर्म है। पर यदि हम ऐसे व्यक्तित्व की जीवनी से अपरिचित रहते हैं तो मानिए कि हम जीवन भर निरन्तर बाल्यावस्था में ही रहते हैं। महान व्यक्तियों की जीवनियां हमें याद दिलाती है कि हम भी अपने पदचिह्न समय की स्थ पर छोड़ सकते हैं। इसमें पाठकों के वैयक्तिक चरित्र गठन की संजीवनी प्राप्त होती है। **महाश्रमणी कनकप्रभाजी जैसी महान विभूति के साध्वीप्रमुखा पदासीनता के 50 वर्ष परिसम्पन्नता पर प्रस्तुत है उनका संक्षिप्त जीवन वृत्त।**

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा : परिचय

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी का जन्म 22 जुलाई 1941 को कोलकाता में हुआ। पिताश्री सूरजमलजी बैद एवं मातुश्री छोटी बाई ने बालिका का नाम कला रखा। कला बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि, विवेकशील एवं संकोची स्वभाव की थी। सन् 1956 में 15 वर्ष की अल्पायु में उन्होंने पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रवेश किया। लगभग 4 वर्षों की प्रशिक्षण अवधि के दौरान कला ने विनम्र एवं मेधावी मुमुक्षु के रूप में अपना स्थान अर्जित किया।

8 जुलाई 1960, गुरु पूर्णिमा के पावन दिवस, उम्र के 19वें पायदान पर, तेरापंथ की उद्गम स्थली केलवा में आचार्य श्री तुलसी से दीक्षा ग्रहण की। गुरु की पवित्र सन्निधि में व्याकरण, कोश, तर्कशास्त्र, आगम, दर्शन आदि अनेक विद्या शाखाओं का तलस्पर्शी अनुशीलन कर, सप्तवर्षीय संघीय पाठ्यक्रम में प्रथम स्थान प्राप्त किया। अध्ययन-अध्यापन और लेखन के साथ सहस्रों पद्य परिमाण कण्ठस्थ कर साध्वियों की अग्रिम पंक्ति में अपना स्थान बना लिया।

12 जनवरी 1972, गंगाशहर की गौरवपूर्ण धरा पर आचार्य श्री तुलसी ने इन्हें साध्वीप्रमुखा पद पर नियुक्त किया। उस समय उनकी आयु मात्र 30 वर्ष की थी। तब से अब तक अनवरत तेरापंथ की अष्टम् साध्वीप्रमुखा के रूप में गुरुत्रयी (तुलसी-महाप्रज्ञ-महाश्रमण) के पावन निर्देशन में विशाल साध्वी समुदाय को गरिमापूर्ण नेतृत्व प्रदान कर रही है।

प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के बहुआयामी व्यक्तित्व, नेतृत्व और कर्तृत्व को विविध रूपों में अभिव्यक्त किया जा सकता है :

अपरिमित प्रज्ञा साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

प्रभावी वक्ता

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी एक प्रभावशाली वक्ता हैं। इनके वक्तव्य में एक-एक वाक्य प्रेरणा-दीप बनने वाला प्रतीत होता है। शब्दों का सहज प्रवाह, रोचक उदाहरण, संक्षिप्तता और नवीनता इनके वक्तृत्व की विरल विशेषताएं हैं। अनेकशः अनुभव होता है कि एक बार साध्वीप्रमुखाजी का प्रवचन सुनने वाला व्यक्ति सदा के लिए इनके प्रभाव-क्षेत्र में आ जाता है। विशेष संघीय उपक्रम हो या सार्वजनिक कार्यक्रम, सभा-संस्था के अधिवेशन हो या दैनिक प्रवचन, गंभीर वक्तृत्व शैली श्रोताओं के अन्तःकरण को परिवर्तन की दिशा में प्रस्थित कर देती है।

प्रबुद्ध साहित्यकार

साध्वीप्रमुखाजी साहित्य-क्षितिज पर एक परिपक्व लेखिका के रूप में प्रतिष्ठित हैं। प्रांजल भाषा, प्रभावी लेखन शैली, कसे हुए वाक्य तथा तथ्य-कथ्य की पूर्ण अभिव्यक्ति देने वाला शब्द-शिल्पन इनकी सृजन चेतना के अपूर्व वैशिष्ट्य है। भाव, भाषा और शैली का यह अद्‌भुत सौष्ठव पाठक को अथ से इत तक बांधे रखता है। गद्य, पद्य, इतिहास, उपन्यास, यात्रावृत्त, जीवनवृत्त आदि विविध विधाओं में इनकी लेखनी निर्बाध रूप से प्रवाहित हुई हैं।

नैसर्गिक कवयित्री

साध्वीप्रमुखाजी को निसर्गतः काव्य प्रतिभा प्राप्त है। इनकी कविताओं में संवेदनशीलता, सौन्दर्य बोध, क्रान्ति की गूंज और भक्ति का प्रवाह स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है। 'सांसों का इकतारा' तथा 'धूप-छांव' दो प्रसिद्ध काव्य-संग्रह हैं, जिनमें विविध विषयस्पर्शी 200 से अधिक कविताओं का समाहार है। इनके द्वारा रचित शताधिक गीतों में भक्ति एवं समर्पण के साथ-साथ युगीन समस्याओं का समाधान भी समाहित है। संस्कार-निर्माण एवं नारी सशक्तिकरण के सन्दर्भ में भी इन्होंने अन्तःस्पर्शी गीत रचे हैं। 'तुलसी प्रबोध' एवं 'विकास की वर्णमाला' इनकी गागर में सागर तुल्य सरस गेय कृतियां हैं।

कुशल संपादिका

लेखिका और कवयित्री होने के साथ-साथ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ख्यातिप्राप्त संपादिका भी हैं। आचार्य श्री तुलसी ने हिन्दी, संस्कृत और राजस्थानी भाषा में तत्त्वविद्या, दर्शन, योग, काव्य-साहित्य, जीवन-चरित्र, आध्यात्मिक-औपदेशिक गीतों में सम्बद्ध शताधिक ग्रन्थों का सृजन किया। उनके अधिकांश ग्रन्थों का संपादन साध्वीप्रमुखाजी ने किया। सन् 2014 में तुलसी जन्म शताब्दी के अवसर पर तुलसी वाङ्मय को नए परिवेश में प्रस्तुत कर ऐतिहासिक कार्य किया। वाङ्मय में समाहित आचार्य श्री तुलसी की आत्मकथा 'मेरा जीवन : मेरा दर्शन' (25 खण्ड) को कालजयी ग्रन्थमाला माना जा सकता है। आगम संपादन कार्य में भी आप संपृक्त रही। विशालकाय भगवती सूत्र की जोड़ (7 खण्ड) का श्रमसाध्य संपादन इनकी स्थितप्रज्ञता का प्रतीक है।

व्यक्तित्व निर्मात्री

साध्वीप्रमुखाश्रीजी का आध्यात्मिक व्यक्तित्व चतुर्विध धर्मसंघ के अनेक व्यक्तियों को नई दृष्टि और नई दिशा देने वाला है। साध्वियों की प्रतिभा को निखार कर, युगानुरूप उन्हें आगे बढ़ा कर, संस्कारों की सुरक्षा-संवर्धन कर ये अपना दायित्व निर्वहन कर रही है। संघीय धरातल पर साध्वी-समाज और महिला-समाज के अनेक सक्षम व्यक्तित्व इनके कर्तृत्व की फलश्रुति है। साध्वीप्रमुखाजी ने नारी की नैसर्गिक विशेषताओं, क्षमताओं और सेवाओं को उभार कर उनके व्यक्तित्व को अपरिमेय ऊंचाई प्रदान की है। अस्तित्व बोध से लेकर दायित्व बोध तक प्रशिक्षण प्रदान किया है। अपने क्रान्त विचारों और सशक्त लेखनी द्वारा ये सम्पूर्ण महिला समाज का आध्यात्मिक पथदर्शन कर रही हैं।

प्रशासन एवं प्रबन्धन वेत्ता

साध्वीप्रमुखाजी का प्रशासन एवं प्रबंधन कौशल बेजोड़ है। इनकी मृदु अनुशासन साध्वियों के विकास का पथ प्रशस्त करती है। अयाचित कृपा, वत्सलता और आत्मीयपूर्ण प्रेरणा इनकी प्रशासन शैली के आधारभूत अंग हैं।

प्रशासनिक दक्षता के साथ-साथ इनकी प्रबन्धन पटुता भी विलक्षण है। समय-प्रबन्धन, कार्य-प्रबन्धन एवं व्यक्ति-प्रबन्धन में इनका वैशिष्ट्य विख्यात है। सद्यः स्फुरित मनीषा और सुनियोजित कार्यशैली ने इनके जीवन में कामयाबियों के कीर्तिमान स्थापित किए हैं।

संघीय सम्मान

तेरापंथ की तेजस्वी गुरुत्रयी युग में अपनी विनम्र सेवाएं समर्पित कर साध्वीप्रमुखाजी कृतार्थता का अनुभव कर रही हैं। समय-समय पर युगद्रष्टा आचार्यों के मुख कमल से निःसृत उद्‌गार इनके वजनदार व्यक्तित्व और कर्तृत्व के प्रतीक हैं।

आचार्य श्री तुलसी ने अपनी इस अद्वितीय कृति को 'महाश्रमणी' (9 सितम्बर 1989) और 'संघमहानिदेशिका' (8 नवम्बर 1991) जैसे महनीय पदों से तथा वर्तमान अनुशास्ता ने 'असाधारण साध्वीप्रमुखा' (सन् 2016) एवं 'अहिंसा यात्रा को विभूषित करने वाली विभूति' के रूप में प्रतिष्ठित किया।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी की जीवनयात्रा चेतना के ऊर्ध्वारोहण की, आध्यात्मिक उत्क्रान्ति की और सर्वांगीण विकास की कहानी है। पुरुषार्थ, प्रतिभा और गुरु-कृपा की त्रिपदी से रचित इनका आलोकधर्मी व्यक्तित्व प्रणम्य है, स्तुत्य है। साध्वीप्रमुखा पद के 50वें पायदान पर आचार्य श्री महाश्रमणजी के युगीन अनुशासन में धर्मसंघ के आध्यात्मिक विकास हेतु प्रयासरत हैं।

उपलब्धियां जिन्हें स्वयं ढूंढती है

दिशा असाधारणता की

असाधारण के शिखर पर प्रतिष्ठित आचार्यश्री द्वारा प्रदत्त 'असाधारण' संबोधन अपने आप में अनेकानेक विशेषताएं समेटे हुए है। आचार्यवर उत्कृष्ट प्रमोद भावना एवं महान उदारता सहित साध्वीप्रमुखाश्रीजी के विराट व्यक्तित्व को आदर के साथ प्रस्तुति देते हैं, तब इतिहास के नए पृष्ठ का सृजन स्वत: हो जाता है। पूर्व सात साध्वीप्रमुखाओं का गुणात्मक प्रतिबिंब अष्टम् साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी में परिलक्षित होता है। प्रस्तुत है असाधारणता के कुछ बिन्दु :-

1. साध्वीप्रमुखा का अभिधान पाने वाल पहली साध्वीप्रमुखा है। (पूर्व में महासती का संबोधन व्यवहृत था।)
2. तीन आचार्यों के युग में साध्वीप्रमुखा के रूप में सेवा का अवसर प्राप्त हुआ।
3. पचास वर्षों तक साध्वीप्रमुखा के रूप में सेवा प्रदत्त करने वाली प्रथम साध्वीप्रमुखा है।
4. पांच सौ से अधिक नवदीक्षित साध्वियों का केशलुंचन किया है।
5. 85 से अधिक पुस्तकों या ग्रन्थों की सम्पादिका रही है।
6. 31 पुस्तकों की लेखिका बन साहित्य सृजन में आधिपत्य बनाया है।
7. 80 हजार से अधिक किलोमीटर की यात्रा की है।
8. राजकीय अतिथि सम्मान भी इन्हें उपलब्ध हुआ है।
9. विदेश यात्रा करने वाली प्रथम साध्वीप्रमुखा है।
10. कोलकाता से कन्याकुमारी तक यात्रा एवं दक्षिण की दो बार यात्रा करने वाली एकमात्र साध्वी हैं।
11. साध्वीप्रमुखा, महाश्रमणी एवं संघमहानिदेशिका - इन तीनों पदों को सुशोभित किया है।
12. युवाचार्य मनोनयन पत्र में साक्ष्य रूपी हस्ताक्षर करने वाली प्रथम साध्वी है।
13. आचार्य पदाभिषेक समारोह में संचालन का दायित्व भी निभाया है।
14. असाधारण साध्वीप्रमुखा का संबोधन प्राप्त हुआ है।
15. सेवाकेन्द्र में सेवा देने वाली प्रथम साध्वीप्रमुखा है।
16. आचार्य की उपस्थिति में पट्ट पर बैठने की अनुज्ञा प्राप्त है।
17. बहुश्रुत परिषद् की सम्माननीय सदस्य हैं।
18. हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत एवं गुजराती भाषा पर अधिकार है।
19. कवयित्री, साहित्यकार, सम्पादिका, वक्ता आदि गुणों भरा व्यक्तित्व है।
20. संघ के समस्त सेवाकेन्द्रों की सार-संभाल के लिए अधिकृत बन 51 दिवसीय प्रेक्षा यात्रा की है।
21. आचार्यवर की सन्निधि में साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका खड़े होकर अभिवादन करने की अनुज्ञा प्राप्त साध्वीप्रमुखा है।

सप्त प्रमुखा से ज्योतित आठवीं ध्रुवतारा

सरदारांजी
अपूर्व प्रबन्धन कौशल,
दूरगामी सोच,
मनोवैज्ञानिक दृष्टि

गुलाबांजी
व्याख्यान विशारद,
मधुर वाणी,
लेखनी एवं
अवधारण कौशल

नवलांजी
पांच आचार्यों की सेवा,
तीन आचार्यों की छत्रछाया
में श्रमणीगण का नेतृत्व,
स्वाध्याय प्रियता

जेठांजी
सेवा भावना,
तपश्चर्या,
नेतृत्व क्षमता,
पू. डालगणी की
अपार कृपा

कानकंवरजी
अप्रमत्तता,
वचनसिद्धि,
व्याख्यान कौशल

झमकूजी
कलाकार,
मीठा जीकारा,
स्मृति तीव्रता

लाडांजी
प्रगतिशीलता,
वात्सल्य,
उच्च चिन्तन,
रूढ़िवादिता से दूर

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी

व्यवस्था कौशल, अनुशासन कौशल, दूरगामी सोच, मधुर वाणी, सेवा भावना, तपस्विता, अप्रमत्तता, भक्ति भावना, कला और व्यवहार कौशल, मीठा जीकारा, प्रगतिशीलता, उच्च चिन्तन, प्रवचन शैली, वात्सल्य की प्रतिमूर्ति, प्रखर लेखनी आदि

पूर्व प्रमुखाओं के अनेकानेक गुणों की खान – साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा महान!

अध्यात्मदर्शी
वन्दना है आपकी अनुपम आभा को!
अभिवन्दना अद्भुत जीवन शैली को!
वन्दना है आपके उज्ज्वल चारित्र को!
अभिवन्दना है आपके पवित्र आभामंडल को!
क्षमादर्शी
भेद-विज्ञानदर्शी
कान्तदर्शी
धर्मदर्शी
श्रेष्ठदर्शी
अभयदर्शी
विधिदर्शी
सक्रियदर्शी
पर्यावरणदर्शी
समानदर्शी
परिणामदर्शी
व्यवहारदर्शी
दिशादर्शी
भावदर्शी
शान्तदर्शी
सूक्ष्मदर्शी
संतुलनदर्शी
अर्हम्दर्शी
कर्तव्यदर्शी
परिवर्तनदर्शी
ध्यानदर्शी
अहिंसादर्शी
अप्रमाददर्शी
अनासक्तदर्शी
कुशलदर्शी
सम्यक्दर्शी
साधनादर्शी
संस्कारदर्शी
कर्मदर्शी
देवदर्शी
महानदर्शी
संवरदर्शी
प्रेमदर्शी
योगदर्शी
दूरदर्शी
गुरुदर्शी
सौम्यदर्शी
संतोषदर्शी
सुखदर्शी
भाग्यदर्शी
अमरदर्शी
अलौकिकदर्शी
प्रत्याख्यानदर्शी
अनुपमदर्शी
विश्वासदर्शी
अनाग्रहदर्शी
निर्जरादर्शी
अनावेशदर्शी
क्रान्तदर्शी
जिज्ञासादर्शी
पुरुषार्थदर्शी
उन्मेषदर्शी
लक्ष्यदर्शी
निष्ठादर्शी
प्रियदर्शी
निर्मलदर्शी
मर्यादर्शी
ज्ञानदर्शी
संवेदनदर्शी
दायित्वदर्शी
जीवनदर्शी
संस्कृतिदर्शी
समदर्शी
संवाददर्शी
पारदर्शी
आत्मदर्शी
भक्तिदर्शी
सापेक्षदर्शी
पावनदर्शी
समन्वयदर्शी
कार्यदर्शी
ऊर्जादर्शी
सफलदर्शी
सिद्धान्तदर्शी
समयदर्शी
त्रिगुप्तिदर्शी
न्यायदर्शी
नियमदर्शी
संयमदर्शी
ध्यानदर्शी
एकाग्रदर्शी
स्वाध्यायदर्शी
विचारदर्शी
स्वाभिमानदर्शी
निर्माणदर्शी
साहसदर्शी

साध्वीप्रमुखाश्रीजी द्वारा आलेखित साहित्य

यात्रा साहित्य

01. रण की गोद में
02. जा घर आए संत पाहुने
03. तीन समुद्रों के तट पर
04. नए प्रदेश : नए अनुभव
05. जोगी तो रमता भला
06. बहता पानी निरमला
07. पांव–पांव चलने वाला सूरज
08. पंजाब में अध्यात्म का उजाला
09. संत चरण गंगा की धारा
10. जब महक उठी मरुधर माटी
11. परस पांव मुसकाई माटी
12. गांधी के गुजरात में
13. धर कूंचां : धर मजलां
14. अरावली के अंचल में
15. उत्सव : आधी शताब्दी का
16. अमृत घट छलके
17. भारत ज्योति बनाम आत्मज्योति
18. अमृत पुरुष : जन्मभूमि में
19. यमुना के तीर पर
20. परिक्रम प्रकाश की

गद्य साहित्य

21. अकथ कथा गुरुदेव की
22. लिखन बैठि जाकी छवि
23. करत–करत अभ्यास
24. कदम–दर–कदम
25. आधी दुनिया
26. बदले युग की धारा
27. विकास पुरुष ऋषि हेम
28. स्मृति के दर्पण पर
29. गणं सरणं गच्छामि
30. आयरियं सरणं गच्छामि
31. धम्मो दीवो पइट्ठा
32. एस धम्मे धुवे
33. सोपान निर्माण के
34. सत्यं शिवं सुन्दरं
35. सफर सम्पादन का – 1
36. सफर सम्पादन का – 2
37. प्रेरणा का दरिया

काव्य साहित्य

38. सांसों का इकतारा
39. धूप–छांव
40. बिन बाती बिन तैल
41. तुलसी–प्रबोध
42. विकास की वर्णमाला

संस्मरण साहित्य

43. प्रेरणा : पल दो पल की – 1
44. प्रेरणा : पल दो पल की – 2
45. प्रेरणा : पल दो पल की – 3
46. प्रेरणा : पल दो पल की – 4
47. प्रेरणा : पल दो पल की – 5
48. प्रेरणा : पल दो पल की – 6

पत्र साहित्य

49. धरोहर अक्षरों की – 1
50. धरोहर अक्षरों की – 2
51. धरोहर अक्षरों की – 3

आरोहण की पृष्ठ भूमि... हस्ताक्षर वर्तमान के

FIVE DECADES OF INFINITE WISDOM

1972 - 1982

- तेरापंथ धर्मसंघ में 'साध्वीप्रमुखा' अलंकरण की प्राप्ति
- साध्वियों की चित्त समाधि पर विशेष कार्य ध्यान
- ज्येष्ठ सहोदरी के संघमुक्त होने के प्रसंग पर संघनिष्ठा के अद्भुत उदाहरण की प्रस्तुति
- आचार्य तुलसी द्वारा 'महाश्रमणी' अलंकरण
- विशेष समारोह में आचार्य के समक्ष पट्ट के प्रयोग की स्वीकृति
- राजधानी दिल्ली में 'अनुशासन सभा' में अनुशासन के प्रत्यक्ष उदाहरण की प्रस्तुति

1983 - 1992

- तेरापंथ धर्मसंघ में 'योगक्षेम वर्ष' प्रज्ञा पर्व की सफलता एवं क्रियान्विति (1981)
- 'महाश्रमणी' पद पर नियुक्ति (1989)
- संघ महानिदेशिका के रूप में नियुक्ति (1981)
- श्रुत अभिवंदना समारोह का सफलतम आयोजन (1990)
- लाडनूं सेवाकेन्द्र में गुरुकुलवासी साध्वियों की चाकरी का नेतृत्व (1991)

पांच दशकों तक अपने कर्तृत्व से साध्वीप्रमुखा पद को अधिक गरिमापूर्ण बनाया। पूज्यवरों के इंगित को शिरोधार्य करते हुए आपने ऊंचाइयों को छुआ एवं धर्मसंघ को व्यापकता प्रदान की।

अपने स्नेहासिक्त व्यवहार से आपने गण उपवन को महकाया है। अमृत महोत्सव पर समर्पित है आपकी प्रज्ञा के पांच दशक...

1993 - 2002

- आचार्य की पंक्ति में अर्थात् उनके बराबर पट्ट पर बैठने की स्वीकृति (1994)
- संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव तक पहुंचायी महिलाओं के सशक्तिकरण की गूंज (1995)
- उपलब्धियों भरी संघ-प्रभावक प्रेक्षा यात्रा का नेतृत्व
- श्रीडूंगरगढ़ में एक दिन में 108 घरों में चरण स्पर्श कर शतक का कीर्तिमान (1998)
- गुरु संदेश को पट्ट पर प्रतिष्ठित कर प्रस्तुत की गुरु भक्ति एवं निष्ठा का अनुपम उदाहरण
- साध्वियों के श्रृंखलाबद्ध संघप्रभावक संथारे (1999)
- अनशनरत श्राविका को दीक्षा देकर तेरापंथ धर्मसंघ में जोड़ा स्वर्णिम पृष्ठ
- आचार्य तुलसी के साहित्य का वृहद संख्या में संपादन
- आचार्य तुलसी की आत्मकथा 'मेरा जीवन : मेरा दर्शन' का पांच खण्डों में जन प्रस्तुतीकरण
- आचार्य की उपस्थिति में पट्टासीन होकर प्रवचन कर नए इतिहास का सृजन (1997)

2003 - 2012

- 'मेरा जीवन : मेरा दर्शन' के अधिकांश ग्रंथ (9-23)
- बहुश्रुत परिषद की सदस्य
- विकास की वर्णमाला तुलसी प्रबोध
- पंजाब हरियाणा यात्रा
- साहित्य एवं काव्य सृजन

2013 - 2022

- 5 दशक का चतुर्विध धर्मसंघ के नाम लाखों संदेश
- 5 दशक में 80 हजार किलो मीटर से ज्यादा पदयात्रा
- भारत के दक्षिण छोर कन्याकुमारी की द्वितीय यात्रा
- मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में राजकीय अतिथि
- विदेश यात्रा
- आचार्य तुलसी का इतिहास लेखन प्रवर्द्धमान

अ.भा.ते.म.मं. - Five Decades of Golden Era

महिला मंडल का विकास... था आपको सदा विश्वास

1972 - 1982

- संविधान
- प्रतिवेदन
- नारी रत्न अलंकरण
- शाखाओं का विस्तारीकरण
- अधिवेशन
- शाखा सार सम्भाल शुभारम्भ
- त्रैमासिक नारी लोक

1983 - 1992

- गणवेश
- मासिक नारी लोक
- ट्रस्ट मण्डल का गठन
- कन्या रत्न अलंकरण
- निर्धन शिक्षा योजना, विकलांग योजना
- योग क्षेम वर्ष में मनुहार जलपान गृह का वार्षिक दायित्व
- निर्वहन एवं परिसर जैन विश्व भारती परिसर रख-रखाव

गुरु कृपा से दिग्दर्शित राह पर श्रद्धा समर्पण के साथ आगे बढ़ते हुये अ.भा.ते.म.मं. ने जिन ऊचांइयों का वरण किया है, उसकी नींव को सुदृढ़ किया है श्रद्धेया साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी ने। पूज्यवरों के पाथेय के साथ-साथ संस्था को प्रतिपल आपने मातृत्व की महक से महकाया है। अमृत महोत्सव पर समर्पित है संस्था की उपलब्धियां जिसे प्राप्त करने का साहस हौसला और पुरुषार्थ की प्रेरणा आपसे ही प्राप्त हुई है... तेरा तुझको अर्पण...

1993 - 2002

- तुलसी स्मारक के निर्माण का दायित्व
- विकलांग समारोह
- जैन जीवनशैली के अनुरूप जन्म दिवस प्रारूप को मान्यता
- पंच दिवसीय जैन जीवन शैली प्रशिक्षण
- संस्कार निर्माण शिविर
- प्रतिभा पुरस्कार
- प्रेक्षा यात्रा में महिलाओं की मुखरित प्रतिभा
- रजत जंयती समारोह का अस्मिता का प्रकाशन
- भिक्षु चेतना वर्ष में जैन जीवन शैली का प्रचार दायित्व
- लातुर भूकम्प में प्रधानमंत्री राहत कोष में सहयोग
- बाल शिविर, चित्त समाधि शिविर, प्रबुद्ध महिला सेमिनार
- नारी लोक प्रश्नोत्तरी
- विसर्जन दिवस
- लाडनूं प्रवास व्यवस्था का पूर्ण दायित्व निर्वहन

2003 - 2012

- तत्त्वज्ञान तेरापंथ दर्शन पाठ्यक्रम शुभारम्भ
- जैन जीवनशैली शाकाहार बुलेटिन
- कन्या विभाग स्वतंत्र, कन्या अधिवेशन एवं प्रतिवेदन
- श्राविका गौरव अलंकरण
- आचार्य तुलसी कर्तृत्व पुरस्कार
- तेरापंथ डॉक्टर्स सेमिनार, प्रबुद्ध महिला दिग्दर्शन
- UNFPA द्वारा अर्थ राशि एवं उनके कैलेण्डर के 4 पृष्ठों में मंडल की योजना
- Logo Registration
- Jain Scholar Course
- डाक विभाग के साथ कन्या सुरक्षा विशेष आवरण की प्रतियां
- आचार्य तुलसी स्मारक

2013 - 2022

- राष्ट्रीय महिला आयोग द्वारा सम्मान
- Outstanding Excellence Award
- आचार्य महाश्रमण कन्या सुरक्षा सर्कल
- आचार्य महाश्रमण फिजियोथेरेपी सेन्टर
- भारत सरकार द्वारा स्वच्छ भारत ब्राण्ड अम्बेस्डर
- चित्त समाधि केन्द्र
- 40 वर्षीय यात्रा की डोक्युमेन्ट्री एवं इतिहास
- 6 मासिक पाठ्यक्रम हेतु 400 स्कूलों से सम्मान पत्र

अ.भा.ते.म.मं. द्वारा अमृत महोत्सव पर उपहृत श्रद्धा समर्पण

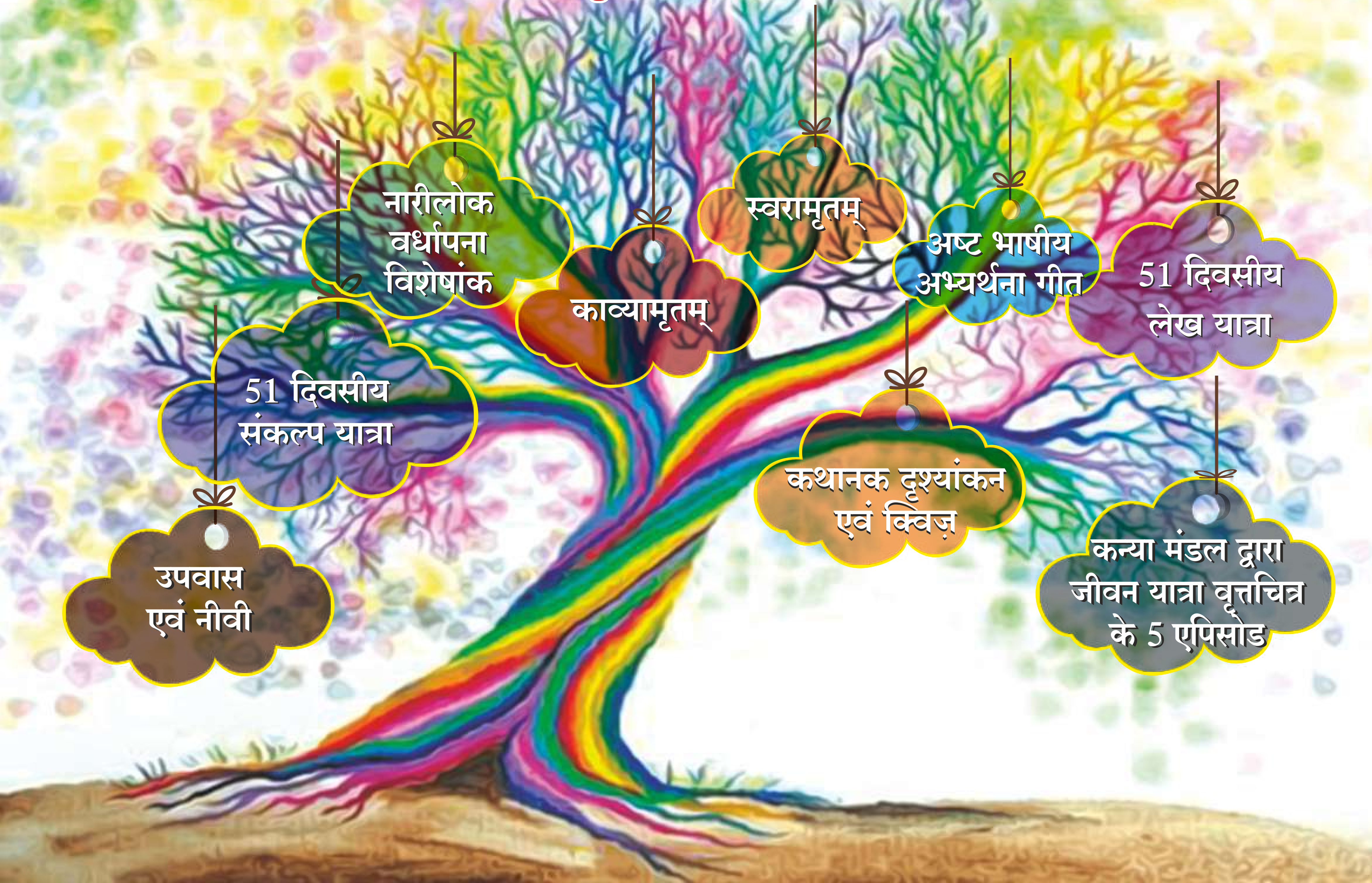

अ.भा.ते.म.मं. द्वारा अमृत महोत्सव पर उपहृत श्रद्धा समर्पण

उपवास एवं नीवी

नीवी–उपवास तप महिला मंडल का, संयम का अनूठा अर्पण
स्नेहाशीर्वाद दो ऐसा, रहें समर्पित हम हर क्षण ।
सादगी और सेवा का आप हो अनुपम संगम
अमृत महोत्सव मंगलकारी, अर्पित श्रद्धा तव चरणम् ।।

अमृतम् कैलेण्डर 51 दिन प्रतिदिन संकल्प

51 दिवसीय संकल्प यात्रा

सोच रहे क्या भेंट दें? तन–मन–प्राण करें सब अर्पण
51 दिवस संकल्प यात्रा, श्रद्धामय सौगात अमृत सिंचन ।
मंगलमय सन्निधि सुखकारी, स्वीकारो वन्दन महाश्रमणीवरम्
अमृत महोत्सव मंगलकारी, अर्पित श्रद्धा तव चरणम् ।।

काव्यामृतम्

साहित्य सृजन सारा, निर्मल सी जल धारा
धूप छांव हो या हो सांसों का इकतारा ।
नई चेतना, करें जागृति, अनुपम काव्यामृतम्
अमृत महोत्सव मंगलकारी, अर्पित श्रद्धा तव चरणम् ।।

स्वरामृतम्

शब्दों को गीतों में पिरोकर, दिया मंडल को अभिनव उपहार
हर गीत शक्ति जगाए, भरें कण–कण में नव संचार ।
शक्ति और भक्ति की युति, स्वर लहरी स्वरामृतम्
अमृत महोत्सव मंगलकारी, अर्पित श्रद्धा तव चरणम् ।।

51 दिवसीय लेख यात्रा

स्वर्ण रश्मियों के प्रकाशन से, जन–जन में अभिनव पुलकन
प्रेरणादायी लेख आपके, विकासोन्मुख है दिशा दर्शन ।
51 दिवसीय लेख यात्रा, गौरवान्वित अ.भा.ते.म.मं
अमृत महोत्सव मंगलकारी, अर्पित श्रद्धा तव चरणम् ।।

कथानक दृश्यांकन एवं क्विज़

उल्लास है छाया चहुं दिशा, हर शाखा मंडल की सहभागिता
कथानक दृश्यांकन, क्विज़ हो या हो भाषण प्रतियोगिता ।
चयन दिवस का अर्द्धशतक मनाएं, स्वीकारो हमारा वर्धापन
अमृत महोत्सव मंगलकारी, अर्पित श्रद्धा तव चरणम् ।।

कनकप्रभा अष्टभाषीय अभ्यर्थना गीत

हे जग कल्याणी, अमृतवाणी, नमन हमारा शत्–शत् बार
आठ भाषाओं में रचित गीत, अनन्त भक्ति भाव उद्गार।
सृजन आपका शुभ मंगल, सरस वाणी सुन्दरतम
अमृत महोत्सव मंगलकारी, अर्पित श्रद्धा तव चरणम्।।

कन्या मंडल द्वारा जीवन यात्रा वृत्तचित्र के 5 एपिसोड

दिव्यता का अवतरण, नव इतिहास की संरचना
कन्या मंडल पांच एपिसोड संग कर रहा अभ्यर्थना।
आपके आशीर्वर से सफल हो कन्या मंडल का यह उपक्रम
अमृत महोत्सव मंगलकारी, अर्पित श्रद्धा तव चरणम् ।।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा
एक नाम -
दुर्लभ विशेषताओं के संचित कोष का

कन्या मंडल : पांच एपिसोड द्वारा अभ्यर्थना

अवतरण चैतन्य रश्मि का (प्रथम एपिसोड)

अक्षय तिथि श्रावण कृष्णा तेरस, बंग धरा कलकत्ता संवत् 1980 सुखदाई,
मां छोटी, तात सूरज के आंगन कन्या सौभागी आई,
चंद्रकला सम वर्द्धमान कला, कलावती, और कल्लू नाम।
विनम्र, मितभाषी, अनुशासित, मुख पर मुस्कान।
छोटी उम्र में समझ बड़ों सी, समय प्रबन्धन का पूरा अभ्यास।
बड़ी बहन की दीक्षा ने, वैराग्य भाव को मुखर कर, भरा नया उल्लास।
दृढ़ संकल्प, उच्च मनोबल से किया पिता की परीक्षाओं को पार।
दीक्षा हेतु निवेदन सुगुरु चरणन में पिता भी गए आखिर हार।
तुलसी गुरु की अनहद कृपा पाई संस्था में ज्ञान ज्योति जली।
वीर जिनेश्वर के मुक्ताधाम में साधु प्रतिक्रमण की आज्ञा मिली।
तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह, आषाढ़ी पूनम प्रख्यात
दोहराया इतिहास भिक्षु का, तेरह दीक्षाएं बनी विख्यात।
अवसर था शुभ, मिली आर्यदेव को अमोलक हिरकणी सी कनकप्रभा।
प्रांगण में प्रफुल्लित सब जन मानों लग रही थी इंद्रसभा।
साध्वी प्रमुखा लाड़ सती का सुधासिक्त जो वात्सल्य पाया।
जीवन में अध्यात्म कमल देखो कनक प्रभा ने खिलाया।
गुरु निष्ठा का महा-महाव्रत ले चरण हुए गतिमान।
एकलव्य सा सहज समर्पण, बना लक्ष्य महान।

विकास की कहानी प्रभावी व्यक्तित्व की निशानी (द्वितीय एपिसोड)

आर्यवर गुरु तुलसी से पा संयम रत्न अनूठा,
कनकप्रभा जीवन में रंग चढ़ा मजीठा ।
श्रमणी से संयम यात्रा की शुभ शुरुआत हुई,
पुरुषार्थ, प्रतिभा प्रखर अब मुखर हुई।
नवनीत नूतन नित्य मिले मन में भरा उत्साह,
अध्ययन से आत्मोन्नति की पाई सुंदर राह ।
गुरु करुणा से किया विकास सीखा प्रवचन लेखन काम,
कलम उठाई सतीवर ने दिया विश्वास को सार्थक अंजाम।
कार्यकुशलता, जागरुकता निश्छल सेवा की सुवास,
सुघड़ व्यक्तित्व बहुआयामी सहज कोई नहीं प्रयास ।
दक्षिण यात्रा का अवसर आया गुरु सेवा के क्षण अनमोल,
मत्त मयूर प्रसंग खुला आज्ञाचक्र मानो शक्ति अतोल।
मिली यात्रा लेखन की प्रेरणा गुरु तुलसी की महर नजर
श्रद्धा की स्याही से लिपिबद्ध यात्रा पथ स्मृतियां मधुर।
दक्षिण के अंचल में उगाया देखो सूर्य लेकर नूतन भोर,
सन्यस्त व्यक्तित्व रश्मियां फैली, शांत नीलाभ नहीं कोई शोर।।

नेतृत्व की नूतन भोर (तृतीय एपिसोड)

सुखद परिसंपन्न यात्रा दक्षिण अंचल की हुई,
लाड सती की कमी पूज्य वर को थी अखरी।
माघ महोत्सव गंगाण त्रयोदशी की उगी उजली भोर,
'कनक प्रभा' आगे आओ तुलसी वाणी जय घोष चिंहु ओर।
अंतर्मुखी, संकोच शील, पदलिप्सा से जो कोसों दूर,
रही प्रार्थना करें दायित्व मुक्त मुझे हे तेरापंथ के कोहिनूर।
तुलसी वत्सलता की छाया मिला प्रेरणा पाथेय पावन,
ओढ़ चुनरी दायित्व की स्नेह सम्मान का बरसा सावन।
जागरूक संघ समर्पित जीवन में आए कई मोड़,
प्रथम संघ गुरु भक्ति, लिया बहन से नाता तोड़।
'योगक्षेम वर्ष' साध्वी प्रमुखा की मांग बनी संघ हित वरदान।
शिक्षण प्रशिक्षण सभा सुधर्मा में चला सुंदरतम अभियान।
महाश्रमणी संघ महानिदेशिका धर्मसंघ में नूतन अभिधान।
अखंड राजयोग कर में कलापूर्ण नेतृत्व सफल कला गुण खान,
सेवा का मांगा वरदान, खींची अनूठी सचमुच लकीर नई।
सेवा निष्ठा का नूतन रूप साध्वी प्रमुखा चंदेरी की करे चाकरी।
प्रेक्षायात्रा महाश्रमणी जी की रच स्वस्तिक मंगल बनी पौरुष की परिभाषा।
तुलसी युग की तरुणिमा बनी नई सृजन की नूतन आशा।

संघ विकास की सजग प्रहरी (चतुर्थ एपिसोड)

असाधारण व्यक्तित्व तुम्हारा, कर्तृत्व देता सबको बोध,
रुचि अध्ययन अध्यापन की देती हर पल सबको संबोध।
मधुर स्वर में कहां, कब, कैसे कहना, हो भूल का परिष्कार,
साध्वी अशोक श्री भक्ति उदाहरण से, सिखलाया विनय व्यवहार।
पद का ना अभिमान, अवसरज्ञ स्वयं करती सभी काम,
ना कोई छोटा ना बड़ा, मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षण दिया समान।
शाब्दिक सांकेतिक उद्बोधन के पढ़े, सुने प्रसंग अनेक,
तब जीवन व्यवहारों से मिले शिक्षण, अरु जगे सुविवेक।
अनुशासन बेजोड़ तुम्हारा, श्रमणी गण विकास सुमन सरसा,
गुरु दृष्टि से पा संरक्षण प्रमुखाश्री का, समणी शतदल भी विकसा।
श्रम सेवा सहनशीलता, उन्नत आचार सदा प्रशिक्षण देता,
श्वेत रश्मियां साध्वी वृंद का, तभी आज जीवन जगमगाता।
महिला समाज का हो विकास, स्वप्न दृष्टा ने देखा सपना,
श्लथ पावों में गति डालनी, मिशन बना लिया आपने अपना।
जाग उठी अब सोई शक्ति, कर सकती है हम सभी काम,
वरद हस्त गुरुवर का, मिले वात्सल्य तव हमें प्रकाम।।

अभिवंदना अभिनंदना (पंचम एपिसोड)

तेरापंथ शासन सौरभ, कनक प्रभा केसर की क्यारी,
अमल धवल चंद्रिका भू पर, उजली विभा आज बिखरी।
वात्सल्य झलकता नयनों में, ममता की बहती निर्झर धार,
मुख मुद्रा करती सबको मोहित, महाश्रमणी श्रमणीगण शृंगार।
खोले पट विकास के अनगिन, छवि पुरषार्थ की आज निखरी,
अमल धवल चंद्रिका भू पर उजली विभा आज बिखरी।
गुरुत्रय की तुमने पाई अनुकंपा, स्वर्ण जयंती पर मिला उपहार,
अमृत महोत्सव की अमृत बेला, मां बांटो तुम अमृत अपार।
अभ्यर्थना में मुखरित स्वर पंचम, चंदना सम भक्ति भारी,
अमल धवल चंद्रिका भू पर उजली विभा आज बिखरी।
हृदय लोक की ललित लालसा, हीरक का बने भव्य नजारा,
करो संप्रेषित अक्षय ऊर्जा, हममें चमके तुम ज्यूं ध्रुव तारा।
स्वीकारो श्रद्धायुत वंदन अभिनंदन, हे नारी जाति की तुम उपकारी,
अमल धवल चंद्रिका भू पर उजली विभा आज बिखरी।।

INTERNATIONAL CONFERENCE

कविता के केनवास पर जीवन के रंगों का समावेश

काव्य समीक्षा

साकार होते सपनों का निराकार संसार – 'धूप छांव'

तेरापंथ धर्मसंघ की साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी की किसी भी काव्य कृति को पढ़ना एक अलग तरह का अनुभव होता है जिसमें कल्पना और यथार्थ के बीच का एक ऐसा संसार रूपायित होता है कल्पना की तमाम कमजोरियों और यथार्थ की कुल जमा कटुताओं से सर्वथा अलग होता है, 'धूप-छांव' भी इसका अपवाद नहीं है।

प्रस्तुत कृति के 'पुरोवचन' के आरम्भ में कवयित्री स्वयं लिखती है- 'मनुष्य स्वप्न देखता है और उन्हें साकार करने के लिए प्रयास करता है। कवि कल्पना करता है और अपनी कल्पना को शब्दों में पिरोने का प्रयत्न करता है। कुछ लोगों के सपने साकार हो जाते हैं और कुछ के पूरा होने के पहले ही बिखर जाते हैं। इसी प्रकार कुछ कवि अपनी कल्पना को शब्दों के फ्रेम में फिट कर प्रस्तुत कर देते हैं और कुछ कल्पनाएं उपयुक्त शब्दों के अभाव में शून्य में खो जाते हैं। बल्कि इन्होंने तो अपनी कल्पनाओं को माकूल शब्दों के साथ-साथ सुनहरे और सुदृढ़ पंख भी दिये हैं ताकि वे विस्तृत अम्बर में मनोनुकूल उड़ान भर सकें, लेकिन नयी पीढ़ी के अधिकांश रचनाकारों के जेहन में ना तो सपने हैं और ना ही सपने देखने का समय। यहां पाकिस्तान की मशहूर शायरा परवीन शाकिर का एक शेर बेसाखता याद हो आता है-

नींद जब सपनों से प्यारी हो तो ऐसे अहद में।
ख्वाब देखे कौन और ख्वाबों को दे ताबीर कौन।।

बहरहाल कनकप्रभाजी के प्रस्तुत काव्य संग्रह 'धूप-छांव' में कुल 101 रचनाएं शामिल हैं जिनमें से सभी छन्दोबद्ध और गेय है। लगभग सभी रचनाओं में कल्पना और यथार्थ का समानुपात दृष्टव्य है जो कृति के शीर्षक 'धूप-छांव' को सार्थकता देता है।

हालांकि 'पुरोवचन' में कवयित्री ने बड़ी विनम्रता के साथ लिखा है कि उनकी कविताओं में न गुप्त जी की तरह की राष्ट्रीयता की अलख है, न प्रसादजी के जैसा दर्शन गाम्भीर्य है, न निरालाजी जैसा अद्भुत कल्पना संसार है, न पन्तजी के जैसा अप्रतिम सौन्दर्य बोध है, न दिनकर जी सरीखी शौर्य रचना है, न महादेवीजी की तरह का भाव बोध है, न बच्चन जी की 'मधुशाला' जैसी समाधायकता है ओर न ही सेठियाजी जैसी अनुभव प्रवण दार्शनिकता है लेकिन वस्तुत: यह उनका बड़प्पन ही है वर्ना उनकी रचनाओं का कला पक्ष और भाव पक्ष दोनों ही विलक्षण है, बेजोड़ है।

यहां अगर मैं यह कहूं कि उनकी रचनाओं की दार्शनिकता और बोध गम्यता सुभद्रा कुमारी चौहान और महादेवी वर्मा के समकक्ष है तो भी कुछ अत्युक्ति नहीं होगी। उनका कल्पना लोक अपने आप में अद्भुत है, अद्वितीय है –

अकुलाई धरती जब सूरज के आतप से,
कजरारे बादल बनकर तुम नीश पर छाये।
बेबस धर्म बना बन्दी धर्मस्थानों में,
धर्म-क्रान्ति की ले मशाल तुम आगे आये।।
देख कलाएं पूर्ण चन्द्र की बन उन्मादी,
उथल पुथल सी मचा रही सागर की लहरें।
आवर्तो में फंसी नाव घबराये यात्री,
पर झंझावातों में नाविक कैसे ठहरे।।

कवयित्री की सभी रचनाएं छान्दिक अनुशासन में आबद्ध हैं। उन्होंने गीतिका, हरि गीतिका से लेकर वीर (आल्हा), पद्धरि, रोला, उल्लाला और सार जैसे मात्रिक छन्दों से लेकर मन्द्राक्रान्ता, पंच चामर (नाराच) और मालिनी जैसे वर्णिक छन्दों तक में रचनाएं लिखी हैं वहीं कुछ नये छन्दों का प्रवर्तन भी किया है। इसके अलावा उनकी कुछ रचनाएं फारसी की बहरे-हजज, बहरे-रमल और बहरे-मुतकारिब जैसी लोकप्रिय बहरों के भी करीब हैं। वे एक प्रयोग धर्मी कवयित्री हैं। उन्होंने भारतीय काव्य शास्त्र के प्रचलित मानदण्डों के इतर कुछ नवीन स्थापनाएं भी की है। इन नवाचारों में एक प्रयोग अनेक कविताओं में जैन दर्शन के सूत्र वाक्यों को पिरोना है। हालांकि आम तौर पर भी इस प्रकार की 'गिरह बन्दी' (गांठ लगाना) पर्याप्त श्रम साध्य होती है लेकिन जब यह 'गिरह बन्दी' हिन्दी कविता के साथ प्राकृत के वाक्यांशों की हो तो और भी मुश्किल हो जाती है; इसके बावजूद इन्होंने जिस निपुणता के साथ हिन्दी के साथ प्राकृत की जो गिरहबन्दी की है वो बेजोड़ है, बेमिसाल है-

'समय गोयम मा पमायए' महावीर का मंत्र महान।
सिखलाते रहते निष्ठा से उपकृत है यह सकल जहान।।
'जाए सद्धाए निक्खन्तो' महावीर का यह संकेत।
तुमने ही समझाया उनको बने हुए हैं जो अनिकेत।।
'अरइं आउठे से मेहावी' महावीर का यह उद्घोष।
जब जब भी सुनते हैं तुम से मिलता है पूरा परितोष।।

इनके अलावा कुछ और पंक्तियां भी दृष्टव्य है जिनमें स्वर्णाभूषणों पर की जाने वाली मीनाकारी की मानिन्द कुछ चुनिन्दा धर्मसूत्रों को बड़ी कुशलता से जड़ा गया है-

'बहुसुभोग वरिसो वइक्कंतो' खिला खिला अंबर भूतल है 'उपशमसारं खलु श्रामण्यं' साक्षात जीवन में देखा 'देह दुक्खं महाफलं' का मर्म सिखाओ।

अलंकार किसी भी काव्य रचना के सौन्दर्य को कई गुणा बढ़ा देते हैं। हालांकि एक धर्मसंघ की निदेशिका के अनुरूप संयमित और सादगीपूर्ण जीवनशैली की जीवन्त प्रतिमूर्ति कनकप्रभाजी अपने रचना कर्म में भी इसी सादगी की पक्षधर है और इसलिए अलंकारों का मोह उन्हें छू भी नहीं सका है तथापि उनकी रचनाओं में अनुप्रास से लेकर उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा तथा अनन्वय और अन्योक्ति से लेकर दृष्टान्त, अर्थान्तरन्यास और विभावना जैसे अलंकार अनायास ही आ जाते हैं।

कविता के केनवास पर जीवन के रंगों का समावेश

उनकी लगभग हर रचना में अनुप्रास अलंकार की उपस्थिति दृष्टव्य है। अनुप्रास में भी खास तौर पर श्रुत्यानुप्रास, वृत्यानुप्रास और अन्त्यानुप्रास की छटा दर्शनीय है:-

- सत्य की निष्ठा प्रतिष्ठा त्याग तप की
- नहीं सहायक सबल साथ में, प्रबल मनोबल का विश्वास
- उस विलक्षण पुरुष की कमनीय रचना पूर्व के दिन गर्व से उसको बधाएं।
- अंखुवाया मन में विराग का, बिरवा विरल विलक्षण
- चंड कौशिक सर्प का कर दर्प खंडित
- द्वैत में अद्वैत का निरूपम निदर्शन,
- आंजते हर नयन में अनुपम उजाले।
- ज्योति पुंज के ज्योति वलय से,
- ज्योतिर्मय हो सकल जहान।
- आंखों को संस्कृति से आंजें
- जीवन को मांचे धृति से

जहां तक 'धूप-छांव' की भाषा का प्रश्न है वो बेहद सहज और सरल है और यहीं सरलता इसे विलक्षण बनाती है। इस कृति में कनकप्रभाजी की भाषा जहां भावानुरूप है वहीं उनका शब्द चयन भी अनूठा है। यह उनके अद्भुत शब्द चयन का ही करिश्मा है कि उनकी काव्य पंक्तियां नदी की धारा की तरह प्रवाहमान है। भाषा के इसी प्रवाह की बानगी के तौर पर कुछ पंक्तियां :-

दूर मंजिल पथ विषम अरमान ऊंचे,
साधना के शिखर पर चढ़ते गये तुम।
हर कदम पर रोकने तूफान आये,
मुश्किलों को चीरकर बढ़ते गये तुम।।
भिक्षु-वाणी पर विशद व्याख्या तुम्हारी,
बन गया विद्वज्जगत उसका पुजारी।
उच्चता के अनुपम आदर्श, झांकता आंखों में उत्कर्ष।
जीतना जंग तुम्हें दुर्घर्ष, बने विजयोत्सव पर संघर्ष।।
सुवासित आत्म संयम से सफल सन्यास हो जाये।
शिशिर हेमन्त उष्णागम सहज मधुमास हो जाये।।

- कनकप्रभाजी की कविता का वर्ण्य विषय मूलरूप से अपने आराध्य के प्रति अटूट आस्था का उद्घोष है। वे अपने परम आराध्य भगवान महावीर, तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु, गणाधिपति गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी, महान दार्शनिक आचार्यश्री महाप्रज्ञ तथा वर्तमान आचार्यश्री महाश्रमण के प्रति अपने मनोभावों को गीतों और कविताओं में रूपायित करती रही हैं। कुछ पंक्तियां दृष्टव्य है:-

हे प्रभो! यह पंथ तेरा हम पथिक हैं,
पंथ निर्माता स्वयं ही कह गये थे।
बल दिया आचार निष्ठा पर निरन्तर,
शिथिलता के गढ़ पुराने ढह गये थे।।
पीर को तकदीर अपनी मानता जो।
रोशनी उससे अनूठी आज पायें।।
जिस प्रज्ञा ने महाप्रज्ञ सा रूप उकेरा।
जिस प्रज्ञा ने तोड़ दिया जड़ता का घेरा।।
जिस प्रज्ञा ने नये क्षितिज उन्मुक्त कर दिये।
जिस प्रज्ञा ने रीते जीवन-कुम्भ भर दिये।।
दीप्तिमान उस प्रज्ञा को है नमन हमारा ...

'धूप-छांव' कनकप्रभाजी की ऐसी कृति है जिसमें भारतीय काव्य शास्त्र की पारम्परिक अवधारणाओं का अनुसरण भी है तो कतिपय मौलिक काव्य सिद्धान्तों का प्रस्फुटन भी है। भाषा और शिल्प की दृष्टि से भी यह विलक्षण काव्य कृति है जिसमें कदम-कदम पर नये मुहावरों और अछूते बिम्ब संयोजन की छटा इसे विशेष बनाती है।

– राजेश विद्रोही, लाडनूं (कवि एवं साहित्य समीक्षक)

भावप्रवणता और लयात्मकता से सराबोर 'सांसों का इकतारा'

तेरापंथ धर्मसंघ की अष्टम साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभा जी का समग्र जीवन रचनात्मक कर्मशीलता और सृजनात्मक ऊर्ध्वारोहण का पर्याय है। देव गुरु धर्म की अनन्य आराधिका आपश्री का श्रमणत्व संधनिष्ठा, गुरु भक्ति और कर्तव्य चेतना का सुन्दर समन्वय है। आध्यात्म के पथ पर निरंतर गतिमान बनी रहकर आप साहित्य सृजन के प्रति भी अहर्निश जागरूकता के साथ तेरापंथ धर्म संघ के गण भंडार की श्री वृद्धि कर उसे समृद्ध बना रही है। आपके व्यक्तित्व का कवित्व पक्ष और पद्यात्मक साहित्य पाठक और श्रोता को मंत्र मुग्ध करने वाला है। आपकी काव्य कृति 'सांसों का इकतारा' की रचनाओं से गुजरते हुए मैं न केवल ह्दय की गहराइयों से अभिभूत ही हुआ अपितु इन रचनाओं में गुंथी हुई भावप्रवणता और लयात्मकता ने मुझे सात्विक आह्लाद से आप्लावित कर दिया। जहां एक ओर आध्यात्मिक दृष्टि बोध की गहराई और भावपूर्ण गहन गंभीर अर्थ सौन्दर्य के निकर्ष पर मुझे आप में मीरा का उत्कृष्ट समर्पण भाव दिखाई देता है वहीं दूसरी ओर शाब्दिक और शैल्पिक संयोजन व भाषिक प्रवाह की दृष्टि से महादेवी की काव्य शैली के दिग्दर्शन आपके काव्य व्यक्तित्व में सहज ही होते हैं - एक तरह से साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा की कविता यात्रा मीरा और महादेवी के सन्धि स्थल पर खड़ी है जहां चिन्तन का अपरिमित आकाश है - भावों का उन्मुक्त वितान है और है शब्दों का कलात्मक कोश। आपकी कविताओं में शब्द चयन और उनको बरतने के प्रति सजगता काव्य पंडितों को अचंभित करने के लिए पर्याप्त है। भाषा की ऐसी प्रांजलता और सरसता गहरी साधना से ही अर्जित हो सकती है। 'सांसों का इकतारा' कृति शीर्षक ही बिम्बात्मक और रूपक प्रधान (metaphoric) है। अंग्रेजी के ख्यात कवि William

कविता के केनवास पर जीवन के रंगों का समावेश

Wordsworth कविता को 'spontaneous overflow of powerful feelings' – 'सशक्त प्रबल अनुभूतियों का उपस्थापन' मानते हैं। वहीं वॉल्टेयर के अनुसार कविता आत्मा का संगीत है। साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा का आलोच्य कविता संचयन 'सांसों का इकतारा' अपने आराध्य आचार्य तुलसी को सर्वस्व विसर्जित आत्म संगीत ही कहा जाये तो कोई अत्युक्ति न होगी। अपने अस्तित्व का संपूर्ण समर्पण जब गुरु चरणों में नत हो जाये और प्राणों को गुरु इंगित पर न्यौछावर करने की अदम्य आत्म शक्ति स्फुरित बन जाये तभी ऐसी कालजयी कृति का प्रणयन और सृजन होता है। कुल 131 कविताओं के वृहद् संग्रह की पठनीयता और छान्दिक अनुशासन विद्वत जगत को विस्मय विमुग्ध करता है। आपके अंतर्भाव कुछ इस तरह अभिव्यक्ति पाते हैं :

चरण तुम्हारे टिके जहां पर पतझर भी ऋतुराज बने
तुम्हें देखकर जनम रहे हैं आंखो में नूतन सपने
पल पल गीत तुम्हारे गाता सांसों का इकतारा है।

पहली ही कविता में यह समर्पण भाव घनीभूत होकर विचार सरिता को जैसे समन्दर में समाना चाहता है। एक अंश :

क्यों सींचूं तुलसी का पौधा
तुलसी मेरे सम्मुख ललाम
क्यों पूजूं अनदेखा ईश्वर
जब खड़े सामने स्वयं राम

ये कविताएं आराध्य में अपने अस्तित्व को गोया विलय करने का महान उपक्रम रचती है – एक ऐसा सार्वभौम आत्म अनुष्ठान जहां निज पहचान को आराध्य की अस्मिता में पूरी तरह से उंडेलना ही इष्ट है। तिस पर रह कोरा भावुक प्रस्थान बिंदु नहीं अपितु प्रति पल अप्रमत्त रहकर आलोकित आत्मप्रकाश देने वाले आराध्य के लिए सतत अहोभाव से अभिभूत ठोस कदम है । इस तथ्य का दिग्दर्शन 'सांसों का इकतारा' की हर स्वर लहरी से जैसे झंकृत होता है। एक उदाहरण देखें –

अर्थवान हर ओर मुबारक नई कीर्ति के हस्ताक्षर को
चन्दन चर्चित नए स्वप्न सब अर्पित है इस जयोतिर्धर को

और इस यात्रा में महामनस्विनी कनकप्रभा सृष्टि की हर उपस्थिति में गुरु का ही प्रतिबिम्बन देखती है – चेतन और अचेतन में, दृश्य और अदृश्य में, विचार और निर्विचार में, हर पल और वर्तना में अपने आराध्य आचार्य तुलसी के प्रति यह समर्पण भाव कविता दर कविता प्रगाढतर हुआ है। देखें :-

तुम्हारा रूप हो जिसमें मुझे दे दो वही दरपन
तुम्हारे स्वर जहां गूंजे मुझे दे दो वही मधुवन ।

और और उत्कर्ष तक जाता है यह वर्धमान समर्पण भाव। कुछ इस प्रकार अभिव्यक्ति पाकर धन्य होता है :-

अमल हो अनिकेत हो तुम, सिद्धि के संकेत हो तुम
श्वेत है परिवेश सारा, द्वैत में अद्वैत हो तुम।

साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभा की काव्य प्रातिभ ऊर्जा अनन्त गुणों से सुशोभित है। कथ्य (content), भाषा और शिल्प तीनों ही स्तरों पर कविता के सर्वमान्य सिद्धांतो की कसौटियों पर ये कविताएं खरे सोने से भी अधिक उज्ज्वल है। भाव संपदा और शब्द संपदा के मनोहारी प्रयोग की आधारशिला है उनकी काव्य संपदा। यह काव्य संपदा कविता के सुदीर्घ कालखण्ड में तनिक भर निस्तेज न हुई अपितु विदुषी कनकप्रभा का काव्य सौष्ठव अनेकानेक कोणों को संस्पर्श करता हुआ अधिक समृद्ध और दीप्तिमय बना है। इस संग्रह रूपी रत्नाकर की भाव ऊर्मियों में गोता लगाते हुए मै कुछ काव्य मोती चुनकर निकाल बाहर ला सका। कुछ कवितांश देखें :-

बांधने मन मोम के बंधन बहुत हैं
लोह की जंजीर लेकर क्या करूंगी
तीर का अनुबंध है पक्का अगर जो
मै भुजाओं में समंदर को तरूंगी
पंथ में पाथेय तुम देते रहो तो
आपदा का हिमशिखर गलता रहेगा ।

एक और अंश :-

काव्य लिखना चाहती हूं जिन्दगी का
आदि तुम उसके विपुल विस्तार हो तुम
कर नहीं सकती अलग तुमको कहीं भी
मध्य की क्या बात उपसंहार हो तुम
तिमिर को आलोक तुम करते रहे तो
कारवां यह श्वास का चलता रहेगा

साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभा रचित आलोच्य कविता संचयन 'सांसों का इकतारा' की कविताएँ आत्म अन्वेषण की कविताएँ हैं। एक ऐसा अर्ध्य जो हृदय की अंजुरियों से पूज्य गुरुदेव के लिए अर्पित किया है। समर्पण के पथ पर आगे बढ़ने वाले आत्म साधकों के लिए ये कविताएं परम पाथेय है। गागर में सागर भरने वाली सहज सरल और सुबोध दिखने वाली ये कविताएं अपने अंतः व्यक्तित्व में जटिल और दार्शनिक जान पड़ती है, लेकिन भक्ति का प्रबल संवेग इन कविताओं को सहज अनुभूत और सहज गम्य बना देता है। छायावादी अनुगूँज होते हुए भी ये कविताएं जैसे सहज संवाद और गुफ्तगु करती है जहां आराध्य और भक्त के प्रति द्वैत समाप्त होकर अद्वैत का महान सूर्योदय होता है। अनन्य शब्द शिल्पी साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभा का गणाधिपति तुलसी को समर्पित भाव सुमनों से सजा गुलदस्ता है सांसों का इकतारा। यह आध्यात्म क्षेत्र की युगांतरकारी घटना है, वहीं साहित्य और बौद्धिक जगत को भी आपका महनीय योगदान है। ये कविताएं और आपश्री का समग्र पद्य साहित्य युग की अमूल्य धरोहर है। हृदय की अनन्त गहराइयों से आपकी भागीरथी रचना यात्रा का अनुमोदन। शत शत अभिवन्दन।

विजय सिंह नाहटा, जयपुर (साहित्य समीक्षक)

महाश्रमणीवरम् अभ्यर्थना

चयन दिवस पर सती शेखरे!!! कर रहे अभिवंदना।
संघ तुमसे है अलंकृत
अत्युत्तम तुम्हारी साधना।।
स्वाति नक्षत्र की बूंद जैसे
सीप पर मोती बन जाती है।
संक्षेत्र से निःसृत श्वेत रंग
जैसे सप्त रश्मि बन जाती है।।
यह विलक्षण आभा मंडल
मानो अंतःशक्ति जगाता है।
जीवन आपका सारा अविरल पुरुषार्थ की महागाथा है।
तिलक लगा जब भाल आपके
जागृति की जगी दीपशिखा।
संघ को प्रदान किया जो आपने स्वर्णाक्षरों में है लिखा।।
भक्ति, ज्ञान और कर्म का विलक्षण संयोग
त्रिवेणी के मंथन से मिला अमृत सुयोग।
हर क्षण का किया संघ हित निस्पृह उपयोग
दिव्यता से अमृतमय बना आध्यात्मिक राजयोग।।
हर समस्या का सुखद समाधान विनोद में भी मिलता संबोध।
प्रशिक्षक और समीक्षक बनकर
दिया हमें सत्य शिव सुंदर प्रतिबोध।।
ऋजुता और विनम्रता से सराबोर आचरण,
समत्व योग का दिया उत्कृष्ट उदाहरण।
अद्भुत है धृति, अलौकिक है सृजनशक्ति,
मानो सरस्वती का हुआ साक्षात् अवतरण।।
मनोनयन शारदा के प्रतिरूप का,
मनोनयन प्रबल शौर्य पुरुषार्थ का,
मनोनयन संघ भक्ति के प्रतीक का,
मनोनयन नारी के बिंद से सिंधु की दिशा का।।
अध्यात्म की चैतन्य रश्मि, पैनी दृष्टि की कलाकार
मातृत्व का महाधाम, वत्सलता का भण्डार।
अनमोल श्रम सींचन से, दिया नारी शक्ति को नव-निखार
ऐसी असाधारण साध्वीप्रमुखा को वन्दन शत शत बार।।
जुग जुग जीओ सती शिरोमणि
अमृत वर्षा से संघ पोषित होता रहे।
लहर का कर पकड़ उस पार जाने का
अदम्य साहस मिलता रहे।

सौभाग बैद	**नीलम सेठिया**	**मधु देरासरिया**
चीफ ट्रस्टी	**अध्यक्ष**	**महामंत्री**

अभिनन्दन श्वेत रश्मि का... जिनसे रोशनी का वरदान मिला

मुक्ता-मणि ज्यों गुम्फित सबके, भावों की मणिमाला सुंदर
अ.भा.ते.म.मं. संग परिकर जुड़कर, वर्धापन करता नतमस्तक होकर

महाश्रमणी संज्ञा शुभंकर, फैली चहूँ दिशि उजली भोर है।
तुलसी की कृति माँ तुम, भक्ति का नहीं कोई छोर है,
रहें निरामय रचें नव ऋचाएँ, जुड़ी रहे सदा श्रद्धा की ये डोर है।।
चंदेरी की चंद्रकांतमणि, करती सबका पथ आलोकित,
शशि सम समुज्वल आभा से तुम अभिमंडित।
स्वर्णिम वर्ष अमृतमय, मैं अज्ञानी, किस विध करूँ तुम्हें अर्चित।
सविनय, समर्पण श्रद्धा से, बस करती भाव सुमन अर्पित।।

चीफ ट्रस्टी सौभाग बैद, जयपुर

अमृत महोत्सव का पावन अवसर,
अभिवंदना के स्वर हो रहे मुखर।
श्रद्धासिक्त वंदन स्वीकारो सतीवर,
सौभागी संघ मिले आप से महाश्रमणीवर।
युगों-युगों तक मिलती रहे आपकी अनुशासना,
दीर्घायु और चिरायु रहो यही मंगल कामना।।

महामंत्री मधु देरासरिया, सूरत

धरती पर कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं, जो असाधारण और विलक्षण होते हैं। साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का असाधारण व्यक्तित्व, जिसमें त्याग, तपस्या, तितिक्षा और तेजस्विता का अप्रतिम समन्वय है। तेरापंथ धर्मसंघ में साध्वी समाज की तथा नारी समाज की उच्चतम पदवी से सुशोभित अर्द्धसदी का यह सफरनामा श्रम के मोतियों से सजा हुआ है। आपके चरण-युगल में श्रद्धासिक्त अभिवन्दना।

संरक्षिका तारा सुराना, कोलकाता

मातृहृदया के विराट व्यक्तित्व, वात्सल्य से परिपूर्ण अद्‌भुत निर्णय की धनी वंदन अभिवंदन।
करती हूँ हृदय की अनंत गहराईयों से श्रद्धा सुमन अर्पण।

संरक्षिका सुशीला पटावरी, दिल्ली

जिनकी पावन सन्निधि पाकर, यह हृदय हिलोरें खाता है,
जिनके अनगिन उपकारों से, यह शीष स्वयं झुक जाता है।
देदीप्यमान तव तेज पुँज, से जन-जन ऊर्जा पाता है,
मंगल -मंगल महासती शिरोमणी, धरती अम्बर गुंजाता है।।

संरक्षिका सायर बैंगानी, दिल्ली

श्रद्धा समर्पण करते हैं हम श्रद्धेया मातृ हृदया साध्वी प्रमुखा श्री जी के ज्योतिर्मयी जीवन को, उनकी प्रज्ञा को, उनकी चारित्रिक उज्ज्वलता को। तेरापंथ धर्मसंघ, समाज, संस्थाएं और सकल महिला समाज आप जैसी चैतन्य रश्मि को पाकर धन्यता का अनुभव करता है। आप इसी प्रकार हम सबका सदैव पथ प्रदर्शन करती रहें। आपके चयन दिवस की शताब्दी मनाएं।

संरक्षिका शांता पुगलिया, मुम्बई

अभिनन्दन श्वेत रश्मि का... जिनसे रोशनी का वरदान मिला

अमृत बेला अमृत महोत्सव, प्रमुदित सृष्टि का पोर-पोर है। मातृहृदया, संघ महानिदेशिका, महाश्रमणी, साध्वीप्रमुखाश्री जी आपने नारी शक्ति को ऊंचाइयों पर पहुंचाया है। आप तेरापंथ धर्मसंघ की असाधारण साध्वीप्रमुखाश्रीजी है। अमृत महोत्सव के अवसर पर शत्-शत् अभिवंदना। आप पूर्ण स्वस्थ रहते हुए हमारा मार्गदर्शन करवाती रहे, यही मंगल भावना।

ट्रस्टी प्रकाश देवी तातेड़, मुम्बई

अभिवंदना उस ज्ञान-ज्योति की, जिसका ज्ञान प्रखर सूर्य बन चमका है।
अभिवंदना उस संघ-महानिदेशिका की, जिसके निर्देशन में सकल साध्वी समाज विकासमान है ।
अभिवंदना उस महाश्रमणी की जिसने समता, ममता और क्षमता के उत्तुंग शिखर का आरोहण किया है।
अभिवंदना उस असाधारण साध्वीप्रमुखा की, जिसकी श्रद्धा, भक्ति, समर्पण और विनय प्रणम्य है, बेमिसाल है।।

ट्रस्टी कनक बरमेचा, सूरत

नारी जगत के मानचित्र पर दृश्यांकित गौरवशाली व्यक्तित्व - श्रद्धेय महाश्रमणी साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभाजी, आत्म आराधना का अमृतायन है, संघ व संघपति के प्रति समर्पण का महासागर है। ममता, समता, क्षमता की त्रिवेणी है।
अमृत जैसी पवित्रता, वत्सलता का हो भण्डार।
विद्वता की हो विभूति, ममता का तुम हो मंदार।
धर्मसंघ की अमर ज्योति हो, संघ समर्पण श्रेयष्कार।
सति शेखरा, नमन आपको, अभिवन्दन करते शत बार।

ट्रस्टी डॉ सूरज बरड़िया, कोलकाता

स्वर्णिम बेला चयन दिवस की, दीर्घ समर्पण का है गगन,
बैदों की हे सूर्यपुत्री, आप गुणों का उपवन।
सत्य हो आपकी हर कल्पना, कल्पना की है यह भावना,
आरोग्य का करो वरण, अन्तर्मन से यही मंगलकामना।

ट्रस्टी कल्पना बैद, कोलकाता

श्रुत की विमल शारदा ,मलयगिरी का सुरभित चंदन।
संयम की शुभ्र ज्योत्सना, श्रमणत्व का मधुबन ।।
सहज मधुरिमा, प्रेरक गरिमा, तेरा चिंतन चिरंतन।
स्नेहिल शीतल पावन गंगा, देती सद्गुण सिंचन ।।
तुलसी युग की ब्राह्मी, राजीमती, चंदनबाला ।
अमृतोत्सव की पावन बेला में, श्रद्धामय अभिवंदन ।।

ट्रस्टी पुष्पा बैगानी, दिल्ली

करुणामूर्ति, असाधारण महाश्रमणी का जीवन बहुआयामी होते हुए भी विनम्रता, सरलता, सहजता और निश्छलता से ओतःप्रोत है। आपकी अप्रमतता और गुरुनिष्ठा अद्वितीय है। आपकी प्रशासन शैली, अध्ययन और अध्यापन की कुशलता बेजोड़ है। इतनी विशेषता एक ही व्यक्ति में मिलना अति दुर्लभ है। आपने अनुभव और दक्षता से संघ को और विशेषकर साध्वी समाज को अनेक ऊंचाइयां दी। चयन दिवस की 50वीं वर्षगांठ पर इस दिव्य एवं विलक्षण व्यक्तित्व को हृदय से नमन करती हूं।

परामर्शक लता जैन, बेंगलुरु

संघ महानिदेशिका के लिए हम यही मंगलकामनाएं करते हैं कि आपने जो राहें हमें दिखाई, उस पर चलते हुए आगे बढ़ते रहें। आपकी आध्यात्मिक यात्रा उत्तरोत्तर प्रवर्द्धमान बनें।
आपके निरामय स्वास्थ्य की मंगल कामना।

परामर्शक विमला नाहटा, मुंबई

अध्यात्म की उच्चतम परम्परा, संस्कार और मूल्यों से प्रतिबद्ध एक महान विभूति, एक चैतन्य रश्मि, एक आध्यात्मिक व्यक्तित्व, एक ऊर्जा का नाम है - असाधारण साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा। वैचारिक उदात्तता, ज्ञान की अगाधता, आत्मा की पवित्रता, सृजनधर्मिता, अप्रमत्तता और विनम्रता आपके असाधारण व्यक्तितव और कर्तृत्व के अभिन्न अंग हैं। अमृत महोत्सव के मंगल अवसर पर श्रद्धासिक्त अभिवंदना।

परामर्शक संतोष चोरड़िया, कोलकाता

हे सतिशेखरे! करती तव चरणों में शत शत वंदन,
तव कृपा से जीवन बना हमारा कुंदन।
माँ तेरी वत्सलता से खिला मण्डल का गुलशन,
अमृत महोत्सव पर अर्पित तुम्हें श्रद्धा का चंदन ।।

परामर्शक विजया मालू, दिल्ली

ज्ञान की साक्षात् मूरत,
सरल हृदय सर्व विख्यात हो।
महान गुरु की महान शिष्या को,
वन्दन शत्-शत् बार हो।।

परामर्शक लता गोयल, कोलकाता

जिनके चरण कमल में समर्पण का प्रवाह है, हस्त कमल पुरुषार्थ के पर्याय है और आभा मंडल किरणों से आप्लावित है, उस देदीप्यमान साध्वीप्रमुखाश्रीजी की अभिवंदना में समर्पण की एक सीपी मेरी और से समर्पित। श्री से संबुद्ध, धी से उपमित, सर्वस्विता से आच्छादित मां सरस्वती की अभिवंदना के शब्द शब्दकोश के शोध बिंदु है। शक्ति की पर्याय, तेजस्विता की प्रतीक, सति शेखरा के अमृत महोत्सव पर अंतर्मन से वंदन, अभिवंदन अभिनंदन।

वरिष्ठ उपाध्यक्ष सरिता डागा, जयपुर

अभिनन्दन श्वेत रश्मि का... जिनसे रोशनी का वरदान मिला

ग्रंथों का सम्पादन कर-कर, निज जीवन ग्रंथ बना लिया है,
आलोकित करके जन-जन को, सबके मन को बांध लिया है।
डोर पकड़ कर पौरुष की, कितनों को नभ तक पहुंचाया है,
आज गगन के उन तारों ने, ध्रुव तारा तुझे मान लिया है।।

उपाध्यक्ष विजयलक्ष्मी भूरा, जयपुर

आदर्शों की अजस्र स्रोत, तुलसी गुरुवर की कृति।
नमन तुम्हें हे सती शेखरे, पाये हम समता वृत्ति।
त्याग संयम तुम्हारा, जीवन का पाथेय बने।
अमृत महोत्सव पर यह अमृत, हम सबका आदेय बने।।

कोषाध्यक्ष रंजू लुणिया, शिलोंग

त्रिकालदर्शी, त्रिलोकपूजित श्रमण भगवान महावीर के धर्मतीर्थ में एवं तुलसी महाप्रज्ञ व महाश्रमण गुरुत्रय के शासन में साध्वी समुदाय की अधिनायिका, सतीशिरोमणि - साध्वीप्रमुखाजी के प्रमुखा पद मनोनयन के अमृत महोत्सव पर श्रद्धासिक्त अभिवंदना।

सहमंत्री नीतू ओस्तवाल, भीलवाड़ा

सृजनशीलता, श्रमशीलता, कर्मठता एवं विवेकशीलता से ही गुरु कृपा प्रसाद स्वरूप 'असाधारण साध्वीप्रमुखा' का अलंकरण मिला। प्रबल पुरुषार्थमय एवं यशस्वी जीवन में मनोनयन के अमृत महोत्सव पर शुभ भावों की सौगात समर्पित है।

सहमंत्री निधि सेखानी, सूरत

शुभ भावों से करती हूँ वन्दन,
हे महाश्रमणी! हे मातृ हृदया!
तेरी वत्सलता की छाँव तले,
अभातेमम ने स्वयं को विकसित कर पाया।।

प्रचार प्रसार मंत्री सरिता बरलोटा, रायपुर

अरुण की हर किरण में तुम्हारे तेज का दर्शन,
पवन की हर लहर में तुम्हारे स्नेह का स्पर्शन ।
ममता की महास्रोत, मनोहर मूरत मन को भाए,
तेरी देख समर्पण शैली, शीश स्वयं नत हो जाए।।

निवर्तमान अध्यक्ष पुष्पा बैद, जयपुर

ममतामयी मां के गुणों की महिमा का अंकन करना पानी को छलनी में भरने के समान दुष्कर है। विराट गुणों का गुलदस्ता है जिसमें अप्रमत्ता, सतत जागरूकता, बेजोड़ अनुशासन, गुरु निष्ठा, संघ समर्पण प्राणों से भी अधिक प्रिय है। इसी कारण आपश्री ने जीवन की अमाप्य ऊंचाइयों का स्पर्श किया है।

कन्या मंडल प्रभारी अर्चना भंडारी, नोएडा

तेरापंथ की तरुण तरुणिमा, साध्वी समाज की अरुण अरुणिमा,
सप्त प्रमुखा के असीम गुणों से, निर्मित है तव दिव्य प्रतिमा।
अमृत महोत्सव वर्धापन बेला, भावों का शुभ थाल सजाया,
हे जगवत्सला! हे मातृहृदया! युगों युगों हमें प्राप्त हो अनवरत तेरी परछाया।

रा.का.स. कुमुद कच्छारा, मुम्बई

साध्वीप्रमुखाश्रीजी समूचे महिला इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय है, जिसे आने वाला कल एक दिशा सूचक की तरह संजो कर रखेगा। उनसे जुड़ी अनेक स्मृतियां हैं, जिनमें प्रोत्साहन और सीख दोनों व्याप्त हैं। संगठन में दायित्व का निर्वहन हो, समस्याओं को शांत भाव से निपटाना हो या अपने पथ पर आगे बढ़ना, इन सबकी प्रेरणा हमें साध्वीप्रमुखाश्रीजी से मिलती है। वे व्यावहारिक जीवन का विश्वविद्यालय है, जो वर्षों से ज्ञान का प्रवाह कर रहा है। तेरापंथ समाज के धार्मिक विकास में आपका योगदान अतुलनीय है।

रा.का.स. सुमन नाहटा, दिल्ली

मातृरूपा! आपकी दिव्य और सकारात्मक ऊर्जा से यह संघ यूं ही प्रदीप्त होता रहे। आपके भव्य व्यक्तित्व द्वारा प्रवाहित स्नेह-सुधा की पुण्य सलिला गंगा में हम युगों- युगों तक अवगाहन कर जीवन मूल्यों का प्रसाद प्राप्त करते रहें। पचासवें मनोनयन वर्ष पर श्रद्धासिक्त अभिवंदना।

रा.का.स. सुनीता जैन, दिल्ली

साधारण नहीं है आप, तभी असाधारण कहलाई,
पच्चास वर्ष तक गण को संभाला, साध्वियों की बन परछाई।
आपके हर रूप में समाहित, नारी का सम्मान,
नमन करें हम हर रूप को, अनूठी बनाई है पहचान।
चयन दिवस का पर्व सुहाना, देते हैं हम बधाई,
बारम्बार करें वंदन, ये स्वर्णिम घड़ियां हैं आई।

रा.का.स. तरुणा बोहरा, मुम्बई

महाश्रमणीजी सृजन की देवी है। चित्रकार की कल्पना से भी ज्यादा सुन्दर कृति है। आपकी वरदायी कलमें युग बोध का सामर्थ्य लिए चलती है। ऐसे पवित्र गुणों से ही कला का महासागर बनता है। पवित्रता का यह जुनून आपको स्त्री-पुरुष के भेद से ऊपर उठाकर आत्मीय स्तर पर पूजनीय बनाता है। भविष्य की आंख में आलोक आंज देता है, आस्था को आस्थान मिलता है।

रा.का.स. वीणा बैद, बेंगलुरु

कला से कनकप्रभा बनी, साध्वी संघ में सरताज।
तुलसी महाप्रज्ञ महाश्रमण युग में छायी, लिए नित नये अंदाज।।
श्रद्धा का अक्षत ले हाथों, आज तुम्हें बधायें महासतीवरा ।
50वें मनोनयन वर्ष पर, स्वीकारो श्रद्धासिक्त वंदन मेरा।।

रा.का.स. मंजु भूतोडिया, दिल्ली

शासना तेरी युगों तक,
शौर्य के स्वस्तिक सजाएं ।
मिले पल-पल पीढ़ियों को,
तुमसे राहें व दिशाएं ।।

सैलाब खुशियों का अनवरत
तोड़ कर तटबन्ध सारे ।
छू रहा आकाश को,
आध्यत्म की देता सदाएं ।।

अभिनन्दन श्वेत रश्मि का... जिनसे रोशनी का वरदान मिला

पल उत्सव के झलक रहे हैं, घट अमृत के छलक रहे हैं,
अभिवंदना की इस बेला में, उजले मोती धुलक रहे हैं।
जन जन के मन पुलक रहे हैं।।

रा.का.स. बिमला दुग्गड, जयपुर

अर्द्धसदी साध्वीप्रमुखा पद अमृत महोत्सव आया है,
महाश्रमणी संघ महानिदेशिका का उत्तम पद पाया है।
धन्य धन्य चैतन्य रश्मि, तव शुभ्र भावना भाऊं मैं,
असाधारण साध्वीप्रमुखा, गुण गरिमा तव गाऊं मैं।।

रा.का.स. शशिकला नाहर, बेंगलुरु

गुरु की प्रतिमा है दिल में समाई।
चाहती हूँ कि युगों युगों तक, चल सकूँ बन आपकी परछाई।।
प्रमुखा पद मनोनयन के अमृत अवसर पर बारम्बार बधाई।।

रा.का.स. नीतू पटावरी, दिल्ली

संजीवनी सी सधी लेखनी, भक्तिरस भाव भरा।
हे! हंसवाहिनी-प्रियात्मजा, है प्रज्ञा तव ऋतम्भरा।।
शीतल शशि सम समुज्ज्वल, आभा अभिमंडित ।
श्रद्धा, विनय, समर्पण संग जीवन गुण गुंफित ।।
ममतामयी मन्दाकिनी, करुणामृत झरे कल-कल ।
हृदयलोक की ललित लालसा, भाव-भ्रमर तव चरण रहे हर पल।।

रा.का.स. जयश्री जोगड़, इचलकरंजी

तुलसी युग की तरुणिमा महाश्रमण युग अरुणिमा ,
बन चैतन्य रशिम चंदेरी की, चांदनी ने बदली युग की धारा।
जगतवत्सला असाधारण महाश्रमणीवरा साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के 50वें मनोनयन वर्ष पर श्रद्धासिक्त अभिवंदना।

रा.का.स. सीमा बैद, गुलाबबाग

प्रमुखा पद की अर्द्धसदी पर, खुशियों के नव दीप जले।
नई उमंगे, नई तरंगें, सबके अन्तर कमल खिले।।
यह स्वर्णिम भोर है पावन, अमृत उत्सव मनभावन।
गण आंगण में रंगोली, भर दो हम सबकी झोली।।

रा.का.स. उषा जैन, जगराओं

देख आपकी झलक सुहानी, पतझड़ भी खिल जाते हैं।
दर्शन एक आपका पाकर, पत्थर भी तर जाते हैं।
मां आपके गुणों का क्या करूं बखान, नहीं तनिक सा मुझमें ज्ञान।
आप स्वस्थ रहे, दीर्घायु रहे, जुग जुग जीएं, यही हम सबका अरमान।
स्वीकारों हम सबका प्रणाम।।

रा.का.स. डॉ. नीना कावड़िया, राजसमंद

आपश्री से मिल रही है ऊर्जा,
सांसो में है स्पन्दन।
मिलते ही आशीर्वाद आपका,
खिल जाता है जीवन उपवन।।

रा.का.स. सोनम बागरेचा, कोलकाता

चंदेरी की पुण्य धरा पर, तुलसी चरण-रज-चंदन है,
महाप्रज्ञ की कर्म-भूमि यह विश्वभारती वन-नंदन है ।
महाश्रमण वटवृक्ष छाया में अमृतवर्ष प्रमुखाश्रीपद का,
महाश्रमणी गज-मुक्तक 'माला', शत शत वंदन, अभिनन्दन है।

रा.का.स. माला एस. कातरेला, चेन्नै

गाते हैं महिमा महाश्रमणी तेरी,
भीखण के गण में फूंकी जो रण भेरी।
तेरे पूर्ण समर्पण को, तेरी उज्ज्वल आभा को,
आतुरता से जाने हम, आत्मसात कर लें हम ।
साहित्य सृजन सारा, निर्मल सी जल धारा,
गण का स्रोत मानें हम, आओं बाँचे, जाने हम।
आचार्य तुलसी की विश्वासी तुम, साध्वियों की काशी तुम।

रा.का.स. मधु कटारिया, बेंगलुरु

असाधारण है जिनके, जीवन के हर पल की परिभाषा,
असाधारण है जिनके, साहित्य के हर शब्द की भाषा।।
असाधारण है जिनके, आभामंडल से निकली प्रत्येक प्रभा,
ऐसी अनंत असाधारण विशिष्टताओं का समवाय है
तेरापंथ धर्मसंघ की असाधारण साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा।।

रा.का.स. डॉ. वन्दना बरडिया, काठमांडु

महाश्रमणी साध्वी प्रमुखा चयनोत्सव प्यारा,
श्री रूप को नमन हमारा,
कमनीय मूर्ति ज्योतिर्मयी आभा,
नयनों से बरसे स्नेहिल नीर,
भास्कर सा तेजस्वी जीवन,
जीवन दर्शक आदर्श तस्वीर,
संघमहानिदेशिके! जगत करता अभिनंदन सारा!
असाधारण रूप तुम्हारा सबसे न्यारा।

रा.का.स. सुधा नौलखा, मैसूरु

अभिनन्दन श्वेत रश्मि का... जिनसे रोशनी का वरदान मिला

अनुकम्पा की अविरल प्रज्ञा से,
संघ चतुष्टय विकसाती हो।
भैक्षव गण की मालिन कुशला,
पुष्प पुष्प सरसाती हो।
लेखक चिंतक अभिवक्ता तुम,
महाश्रमण युग की मुक्ता तुम।
श्रद्धाप्रणत भावभीनी अभिवन्दना।।

रा.का.स. शिल्पा बैद, दिल्ली

तुमने दिखलाई पावन राहें हमें,
तुमने बतलाई आगम की बातें हमें।
तुमने तत्त्वों की भाषा सिखाई हमें,
धर्म चर्चा भी तुमने सुनाई हमें।

रा.का.स. ज्योति जैन, कोलकाता

भाग्य व पुरुषार्थ का उत्तम योग हैं आप,
योग्यता व शक्ति का सर्वोत्तम प्रयोग हैं आप।
प्रशासन व प्रबंधन का कुशल कर्तृत्व हैं आप,
सहजता व निष्पक्षता का निपुण नेतृत्व हैं आप।

रा.का.स. शशि बोहरा, पटना

जिनके पुरुषार्थ को देखकर है सारी दुनिया दंग,
जिनकी पावन रश्मियों से प्रकाशित है संघ।
ज्ञान और विनय का संगम है जिनके जीवन के रंग,
साहित्य जिनका अदभुत और अंदाज है दबंग।
ऐसी ममतामयी माँ को हमारा भाव भरा वंदन,
अमृत महोत्सव पर श्रद्धानत अभिनंदन।।

रा.का.स. प्रभा घोड़ावत, इन्दौर

श्रद्धा, समर्पण और साधना की दिव्य प्रतिभा साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभाजी का अद्वितीय व्यक्तित्व नारी जाति का गौरव है। अनुशासन के फूलों में विनय की सौरभ भरकर आपने पूरे समाज का अगाध विश्वास प्राप्त किया है। कुशल लेखिका, महादेवी वर्मा, अमृता प्रीतम सी कवयित्री, श्रमशीलता, सजगता, निर्विकारता की जीवंत साक्षी महाश्रमणीजी ने विकास में अपूर्व कीर्तिमान स्थापित किए हैं। ऐसे असाधारण साध्वीप्रमुखाश्रीजी को 50 वें मनोनयन वर्ष पर शतशः नमन।

रा.का.स. निर्मला चण्डालिया, मुंबई

कनक कांति सम कोमल काया,
सूर्य से बढ़कर प्रभा अपार।
विपुल ऊर्जा के भण्डार,
निर्मल निश्छल निरहंकार ।।
स्फटिक से उजले चयन दिवस पर,
गगन धरा पर नई बहार।
आज नया दिन नयी उमंगें,
श्रद्धा भक्ति का चिन्मय उपहार।
बाँटो महाश्रमणीवर मुक्ताहार।।

रा.का.स. रमण पटावरी, कोलकाता

हे महाश्रमणी !
अपूर्व है व्यक्तित्व तुम्हारा, असीम है कर्तृत्व तुम्हारा ।
अमाप्य है साधना तुम्हारी, अनंत है उपकार तुम्हारा ।
अमृत महोत्सव है प्रमुखा पद का –
सचमुच! असाधारण हो तुम साध्वी कनकप्रभा !
निर्बाध यात्रा पथ, स्वस्थ-मंगल-दीर्घायु सदा ।।

रा.का.स. ललिता धाड़ीवाल, रायपुर

कविता भी है और क्रांति भी
अनुशासन भी और शांति भी
कनक-प्रभा सी कनकप्रभा है
ममतामयी जैसे एक मां है।

रा.का.स. ममता रांका, गंगाशहर

श्रद्धा-सेवा-समर्पण की त्रिवेणी, नारी शक्ति की अनुपम मिसाल, दृढ़ संकल्पी, वात्सल्यमय मातृहृदया, सृजनकर्ता है असाधारण साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी। अनेकशः विशेषताओं से मंडित आप शतायु हों, निरामय हों। स्वर्णिम मनोनयन दिवस पर स्वीकारो श्रद्धा भरा अभिवंदन, कोटि-कोटि वन्दन।

रा.का.स. बबीता भुतोड़िया, कोलकाता

हे महाश्रमणीवरम्!
आपके गुणों की महिमा अपरम्पार, आपको बधाते शत्-शत् बार। विलक्षण प्रतिभाओं की धनी, नारी संसार के मानचित्र पर उभरने वाली, पल-पल उजाला बाँटने वाली अनुपम दीपशिखा को अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में श्रद्धासिक्त वंदन अभिनंदन। आप नित नये स्वस्तिक परम पूज्य आचार्य महाश्रमणजी की सन्निधि में उकेरते रहें, यही मंगल कामना एवं शुभभावना ।

रा.का.स. अमिता नाहटा , काठमांडू

हे महाश्रमणीवरा, हे मातृहृदया
करबद्ध भावभीनी वंदना-अभिवंदना
यह मेरा अहोभाग्य है कि मुझे ऐसे असाधारण व्यक्तित्व की धनी के गुणगान का अवसर प्राप्त हुआ जो हर रूप में सम्पूर्ण है। आपकी रश्मियों की आभा से रोशन है आज नारी समाज। आपकी अमृतवाणी का सोपान करना हमारे लिए गौरव की बात है।

रा.का.स. अनुपमा नाहटा, कोलकाता

अभिनन्दन श्वेत रश्मि का... जिनसे रोशनी का वरदान मिला

नाम कनक, काम कनक , कनक सा ही है आपका स्वभाव
गुरु की भक्ति, गुरु की शक्ति, सच मे हर गुरुवर का आप गौरव हो।
जुग-जुग जियो प्रमुखाश्रीजी, आज करूं आपके अमृत महोत्सव पर प्रार्थना,
शुभ कामना मंगल भावना, श्रद्धासिक्त अभ्यर्थना, भावभीनी अभिवंदना।

रा.का.स. श्रेया बाफना, उधना

हैं गुरु तुलसी- महाप्रज्ञ शिल्पी जिनके,
कण-कण में छलके वात्सल्य जिनके।
असाधारण है नाम और काम जिनके,
साध्वीप्रमुखा है संघ की, अभिनव है आयाम नित इनके।।

रा.का.स. मंजुला डूँगरवाल, सेलम

उपमाएं सब बाट जोहती,
पर तुम सब उपमा से उपर।
धरती सूरज चांद सितारे,
तुम्हें नमन करते सब झुक कर।

रा.का.स. संतोष गिड़िया, बेंगलुरु

तुम ममत्व की अजस्र धारा,
पुष्पित कर दे हर कली को।
तुम साहित्य सृजनकर्त्ती,
विकसित कर दे जीवन को।
तुम तलसी-महाप्रज्ञ की कृति,
प्रेरित करें कण-कण को।
तुम असाधारण करुणामयी,
वरदायी कर दे हर क्षण को।

रा.का.स. शालिनी लूँकड़, सेलम

ज्ञान की गंगोत्री हो तुम,
विद्वता की हो भंडार
तुम हो तत्वेषु निपुणा,
सृजन का नहीं है पार।
गुरु भक्ति का अद्भुत उदाहरण,
प्रज्ञा तुम्हारी अपरंपार
वात्सल्य व ममता की मूर्ति,
मनोनयन वर्ष पर वंदन मेरा सौ-सौ बार।।

रा.का.स. जयन्ती सिंघी, सूरत

अद्‌भुत विनय समर्पण, है अद्‌भुत कार्य कुशलता।
अद्‌भुत है निर्माणकला, निस्पृहता और निश्छलता।
अद्‌भुत जादू वाणी में, सुन सभी आनंद पाए।
जिस पर दृष्टि पड़े आपकी, वह निहाल हो जाए।

रा.का.स. प्रज्ञा बांठिया, जयपुर

हे अमृत्व की अमृतदायिणी! ज्योतिपुंज कनकप्रभा, आचार्य तुलसी, महाप्रज्ञ, महाश्रमण की प्राण हो आप,
हर नारी की सांसों में बसा अभिमान हो आप,
कण-कण में प्राप्त है आपकी हर एक गाथाओं का पन्ना,
आलोकित कर रही है आप तेरापंथ जिनशासन प्रमुखा बनकर, कर रही हूं आपको भाव भरी अभिवंदना।

रा.का.स. सुचित्रा छाजेड़, गुवाहाटी

चंदेरी की दिव्य विभूति, करूणा का निर्मल झरना हो।
महान साधिका, मातृवत्सला, संघ की अमूल्य धरोहर हो,
तुलसी की अनुपम कृति, नारी जाति की पहचान हो।
अमृत महोत्सव के शुभ अवसर पर वन्दन बारम्बार हो।

रा.का.स. इन्दिरा लुणिया, कटक

साहित्य सृजन का है अखूट भंडार, संघ संघपति के प्रति समर्पण अपरंपार।
जिनके हृदय से बहती है ममता की धार, हे असाधारण साध्वी प्रमुखा श्री जी करें हमारा वंदन स्वीकार।
अमृत महोत्सव पर करते हैं अभिनंदन बारंबार।।

रा.का.स. सरिता डागा, नागपुर

समभाव, सहिष्णुता, कर्मठता, समर्पण, सकारात्मक सोच और विद्वत्ता का महाकुंभ है - साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी। आप दीर्घायु हों, शतायु हों एवं गुरु आज्ञा को आराधती हुई प्रकाश स्तंभ सदृष्य समस्त साध्वीगण एवं नारी समाज की राह प्रशस्त करती रहें। अमृत महोत्सव पर यही मंगल कामना।

रा.का.स. दीपा पारख, चेन्नै

गुरु तुलसी के सृजन की अनुपम कृति हो आप,
गंगा यमुना सरस्वती का महासंगम हो आप।
चीरकर दिल खोल हम कैसे दिखाएं,
हर धड़कन में हो बसी, यह कैसे बताएँ।
युगों-युगों तक साया तेरा हर पल अपने साथ पाएँ,
चयन दिवस की अर्द्धसदी पर शुभ भावों के दीप जलाएँ।।

रा.का.स. सरिता गोठी, बेंगलुरु

मनोनयन अमृत महोत्सव की शुभ बेला, नव उन्मेष जगायें।
दूर दृष्टि से नारी शक्ति में सृजन के नव दीप जलायें।
अगम्य क्षमता, अनुपम सौरभ से संघ बगिया लहलहाए।
दिव्य रश्मियाँ महाश्रमणीवरा आपकी गौरव गाथा गायें।

रा.का.स. रचना हिरण, मुंबई

ज्योति के निर्झर! तुम्हीं से
ज्योति का वरदान पाकर ।
कर रहें अर्चा तुम्हारी,
ज्योति के नवगान गाकर ।।

प्राण, तन, मन है समर्पित,
एक तेरा पा इशारा ।
जिंदगी के इस सफर को
मिल गया ज्योतित सहारा ।।

अभिनन्दन श्वेत रश्मि का... जिनसे रोशनी का वरदान मिला

चैतन्य नारी
शारदा अवतारी
गुणों से कालजयी
आप बनी हैं
प्रेरणा सुहावनी
युगों-युगों कहेगा
इतिहास कहानी।

रा.का.स. अदिति सेखानी, अहमदाबाद

परमार्थ के प्रकाश से प्रकाशित होता है 'जीवन' आपका,
पर पदार्थ के प्रभाव से मुक्त है 'मनन' आपका।
चिन्मयता कि चांदनी से चलकर चमकता है 'चिंतन' आपका,
गुण गौरव की गरिमा से गुंजित है 'प्रमुखा पद' आपका।।

रा.का.स. संतोष वेदमुथा, हुबली

नारी की कामयाबी जहां दिखाई देती है,
वात्सल्य की मूरत सबका मन हर लेती है।
जिनकी लेखनी हृदय के हर कोने को झंकृत कर दे,
जिनका उठा हुआ हाथ सबकी झोली भर दे।
साध्वीप्रमुखा के अमृत महोत्सव पर आध्यात्मिक मंगलकामना।।

रा.का.स. सारिका वागरेचा, बालोतरा

सुनहरी धूप के तेज सा व्यक्तित्व जिनका,
पूनम के शीतल चांद सा ममत्व उनका!
श्रद्धा, निष्ठा व निष्पक्षता सा है नेतृत्व जिनका,
साहित्य की अद्‌भुत रश्मियाँ बिखेरता व्यक्तित्व उनका!
ऐसे शत् गुणित व्यक्तित्व का कैसे शब्दों में व्याख्यान करूं,
स्वर्णिम मनोनयन दिवस पर महाश्रमणीवरम् को भाव वंदना करूं!

रा.का.स. वंदना विनायकिया, विशाखापट्टनम

मनोनयन का अमृत वर्ष, लाया जीवन में नव उत्कर्ष,
पाकर गुरु दृष्टि अनूठी, अभूतपूर्व हैं आत्महर्ष।
देती हूं दिल से, भावों की बधाई,
नारी जाति के लिए आप हो अद्‌भुत आदर्श।

रा.का.स. सोनिका बैंगानी, नोएडा

सदा ऋणी आकण्ठ आपका, महिला सकल समाज।
आप सरीखे रहबर पाकर, करें स्वयं पर नाज।।

रा.का.स. कुसुम बैंगानी, दिल्ली

जिनकी काया में अपरिमित आत्म शक्ति की देदीप्यमान ज्योति प्रज्वलित,
जिनके जीवन का क्षण-क्षण योग साधना और अध्यवसाय की त्रिवेणी से संसिक्त।
जिनके उर्वर और तलस्पर्शी चिंतन से सद्‌साहित्य सरिता प्रवाहित,
जिनके व्यवहार में नवीनता, जिनके मातृ तुल्य हृदय निर्झर से अगाध वात्सल्य अमृत निर्झरित।
असाधारण साध्वी प्रमुखा के मनोनयन के स्वर्ण जयंती अवसर पर शत् शत् नमन्।

रा.का.स. नीतू बैद, अहमदाबाद

ओज अजब पाया तुलसी से, जुड़ी अजब इकतारी।
बरसे महाश्रमण की करुणा, कीर्तिमान मनहारी।
तपा-तपाया स्वर्ण सुगन्धित, क्या सौगात सजाएं।
सरस्वती की वरदसुता, महाश्रमणीवर आज बधाएं।

रा.का.स. विनीता बैंगानी, पाली

मेरी निष्ठाएं-आस्थाएं महाश्रमणी चरणों में अर्पित,
मेरे सारे शब्द-भावनाएं श्रद्धा विश्वास समर्पित।

रा.का.स. योगिता जैन, हिसार

कलम आपकी रचनात्मक है,
युक्ति आपकी तथ्यात्मक है।
विचार आपके अहिंसात्मक है,
व्यक्तित्व आपका सकारात्मक है।
सुषमा का वंदन स्वीकारो।।

सुषमा पींचा, सरदारशहर

क्या गाऊं मैं तेरी गरिमा, असाधारण व्यक्तित्व तुम्हारा,
संघ संपदा के कण-कण में है कर्तृत्व तुम्हारा।
नारी जगत का हो उजियारा, तुमने बदली युग की धारा,
संघ भाल पर कोहिनुर ज्यों चमक रहा पुरुषार्थ तुम्हारा।
अमृत महोत्सव की शुभ बेला में अभिवंदन शत बार हमारा।।

शारदा डागा, गंगाशहर

गुरुवर्य तुलसी की महनीय कृति और आचार्य महाप्रज्ञ की दार्शनिक उज्ज्वल संस्कृति महासतिवर कनकप्रभाजी!
महातपस्वी महाश्रमण के कर्तृत्व की उज्ज्वल आश्वस्ति संघमहानिदेशिका कनकप्रभाजी!
धर्मसंघ के साध्वी समुदाय की तेजस्विता की प्रतीक हम सबकी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी!
तेरापंथ की नारीशक्ति को तल से शिखर पर स्थापित करने वाली तेजस्विता की प्रतिमूर्ति सतीशेखरे कनकप्रभाजी!
अमृत महोत्सव पर पवित्र पादपंकजों में वन्दना! अभिवंदना !!

हीरा संचेती, दिल्ली

अध्यात्म अम्बर की उज्ज्वल चंद्रिका, महाश्रमणी मतिमान,
ऊर्जस्वल आभा अभिमंडित, मुखारविंद मनमोहक मुस्कान।
कनक सम कान्तिमय कोहिनूर,उदित हुआ स्वर्णिम प्रभात,
चयनदिवस के स्वर्णिम कल्पतरु पर अंतर भावों की सौगात।।

कमला छाजेड़, साउथ कोलकाता

अभिनन्दन श्वेत रश्मि का... जिनसे रोशनी का वरदान मिला

चन्देरी की चन्द्रकला को गण उपवन का ताज बनाया,
ऐसी निखरी स्वर्ण प्रभा सी हर मन पमुदित बन सरसाया।
नारी जगत का तिलक भाल तुम, तुमसे सारा जग हरसाया,
ममता सी मूरत मनहारी, नयनों से अमृत छलकाया।
हर मन का आकर्षण हो तुम, कण कण पुलकन से इतराया,
आज नमन है उस चयन पर, जिनकी आंखों से तुमसा हीरा पाया।

लीना दुग्गड, उत्तर हावड़ा

नभ में लाली है छाई,
धरती भी है मुसकायी।
घर घर में ख़ुशियाँ है छाई,
अभिवंदना की बेला आई।।

सुशीला चौपड़ा, जयपुर

हे महाश्रमणी नारी शिरोमणि
युगल चरणों में कोटि नमन।
अमृत महोत्सव, चयन दिवस का अमृत बूंदों का सिंचन
उपकृत है यह महिला शक्ति, पा तेरा दिग्दर्शन,
कोटि कोटि अभिनन्दन, कोटि कोटि अभिवन्दन।

अंजू बैद, हैदराबाद

संघ समर्पिता श्री चरणों में, ज्योतिर्मया को वंदन अभिनंदन।
आशीर्वर से आलोकित हो, नारी जागृति का कण-कण।
हर संध्या अब भोर बने, कनकमणी से पाएं उजियारा।
जग कल्याणी अमृतवाणी, एकमात्र तेरा ही सहारा।।

विनीता बेगानी, पाली

लाडनूं की लाडली कला, भिक्षु शासन की कनक कहलाए,
तुलसी गुरु से शिक्षा दीक्षा पा, ज्ञान प्रकाश पुंज फैलाए।
अगम्य क्षमता, अनुपम सौरभ से संघ बगियाँ लहलहाए,
जागे स्वयं जगाए जग को नारी शक्ति को राह दिखाए।

कान्ता तातेड़, मुम्बई

इतने बड़े तेरापंथ समाज वह संपूर्ण साध्वी वर्ग की सार संभाल कुशलता से करना यह विलक्षण बात है। आपकी लेखनी से उकरा हुआ साहित्य बता देता है कि आप कितनी विचारशील, चिंतनशील व मननशील व्यक्तित्व की धनी है। अपने विचारों के माध्यम से समाज को मार्गदर्शन प्रदान करती है। वन्दन अभिवन्दन।

चंद्रा धोका, चेन्नै

कर रहे वंदन व अभिनंदन, तुम्हारे चरण में नत ।
दिपदिपाते भाल पर पुरुषार्थ की रेखाएं अंकित ।।
शासना तेरी युगों तक, शौर्य के स्वस्तिक सजाएं ।
मिले पल-पल पीढ़ियों को, तुमसे राहें व दिशाएं ।।
सैलाब खुशियों का अनवरत तोड़ कर तटबन्ध सारे ।
छू रहा आकाश को, आध्यत्म की देता सदाएं ।।

कंचन सेठिया, सेलम

साध्वी समाज की सरताज, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने अपनी सुमेधा, कर्त्तव्यपरायणता एवं कर्मठता से पद को गौरवान्वित करते हुए साध्वी समाज को युगानुरूप शैक्षणिक, कलात्मक एवं आत्मविश्वास की धाराओं से जीवन को विशिष्ट दिशा प्रदान की है। आपके ज्योतिर्मय आभावलय से निःसृत किरणों के आलोक में हम सबका मार्गदर्शन हो। अमृत महोत्सव पर पवित्र पादपंकजों पर नारी जाति की श्रद्धा से परिवेष्ठित वन्दना! अभिवंदना !!

मंजु सुराना, साउथ कोलकाता

तुम समता का महासागर हो, पवित्रता का तीर्थ धाम
तुम ममता का महासागर हो, सौ-सौ बार करें प्रणाम।
तुम आस्था की अक्षय धाम हो, ज्ञान चेतना का भंडार
तुम स्नेह की सरिता हो, शत्-शत् बार करें प्रणाम।

शोभा दुगड़, टॉलीगंज, कोलकाता

विलक्षण प्रतिभाओं की धनी वात्सल्य की मूरत महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के मनोनयन अमृत महोत्सव पर हार्दिक बधाई एवं अभिवन्दना।

चंपादेवी कोठारी, कोलकाता

कलावती से कनकप्रभा बन, दी कल्पतरु सी ममतामयी छाया
मुखरित हो उठी प्रज्ञा, चिन्तामणि सम चिन्मय जीवन
कामधेनु बन, संयम की मर्यादा का मंगल सोपान है पाया
त्रिवेणी की आभा से अलंकृत विराट व्यक्तित्व को नमन।
मनोनयन की स्वर्णिम बेला पर करते शत्-शत् वन्दन।

गुलाब सुराना, साउथ कोलकाता

करके प्रबल पुरुषार्थ, उद्घाटित हुआ प्रज्ञा का द्वार।
कुशल नेतृत्व की कला से सुशोभित महाश्रमण दरबार।
आलोकित हो उठा, जीवन का कण-कण
स्वीकारो म्हारा शत्-शत् वन्दन व अभिवन्दन।

सायर कोठारी, साउथ कोलकाता

गुरु त्रय इंगित आराधन अरु भक्ति सदा ही रही इकसार।
पांच दशक नेतृत्व कुशलता, किंतु रही हर पल निर्भार।
नारी जग का गौरव तुम, तुमसे पाया हमने विस्तार।
अमृत महोत्सव का शुभ दिन आया, अभिनन्दन वन्दन शत बार।

उषा बोहरा, चेन्नै

अभिनन्दन श्वेत रश्मि का... जिनसे रोशनी का वरदान मिला

जिनके वरद हस्त से निकली किरणें ऊर्जा देती है,
जिनके मुख से निकली वाणी हर शंका हर लेती है।
जिनके दर्शन से ही मन में जग जाते हैं सद्संस्कार,
उन महाश्रमणी के चरणों में करती वन्दन शत् शत् बार।

नीलम बोरड़, जयपुर

वात्सल्य और अनुशासन, वैदुष्य और सादगी, जहां एक साथ अठखेलियां करते हैं, सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए जिनकी हर सांसें संवेदना पिरोती है, तुलसी-महाप्रज्ञ-महाश्रमण के सपनों का महिला समाज गढ़ने में जो रोम-रोम अहोनिशी प्रतिबद्ध है - उन अप्रतिम, अनिवर्चनीय, अतुल्य व्यक्तित्व संघ महानिदेशिका साध्वीप्रमुखाश्रीजी के मनोनयन अमृत महोत्सव पर श्रद्धासिक्त प्रणियात।

गुलाब बोथरा, जयपुर

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी का जीवन तीन गुरुओं के प्रकाश से प्रज्ज्वलित रहा है। संस्कृत, प्राकृत एवं हिन्दी में लिखी हुई आपकी सारी पुस्तकें ज्ञान का सागर है। अपने कंधों पर विशाल साध्वी संघ का दायित्व सहजता एवं सरलता से निभाना आपके अतुल्य व्यक्तित्व को दर्शाता है।

मोहिनी देवी चोरड़िया, मुम्बई

भिक्षु नंदनवन में सदैव बसती श्रद्धा और समर्पण की बहार,
कला से कनकप्रभा की यात्रा, खुले संभावनाओं के नए द्वार।
कनकप्रभा केसर की क्यारी गुरु तुलसी के उद्‌गार,
उत्कृष्ट कृति संघ को दे कहलाए वे सृजनहार।
वात्सल्यमयी प्रेरणा, विकासशील चिंतन, जीवन का आधार,
अमृतमय स्वर्णिम चयन दिवस पर श्रद्धानत वंदन बारंबार।।

जयश्री बड़ाला, मुंबई

ममतामयी, कल्याणमयी कल्याणी, वात्सल्य की प्रतिमूर्ति, सति शेखरा साध्वीप्रमुखाश्री की एक दृष्टि पाकर ही भक्त निहाल हो जाता है। ऐसी महान विभूति के पचासवें मनोनयन दिवस पर ऐ मां तुझे सलाम - आपश्री की प्रबल प्रेरणाओं से हमारी प्रगति होती रहे और गुरुदेव के सपनों में नित नए रंग भरते रहें। अभिवन्दना।

प्रेमलता सिसोदिया, मुम्बई

महावीर युग की चन्दनबाला सम महाश्रमण युग की महाश्रमणी, जिनका जीवन नारी शक्ति व जागृति का अभिनव उन्मेष है। दीर्घ संयमी जीवन, दीर्घ प्रमुखा पद, दीर्घ यात्राएं, व्यापक जन सम्पर्क और जन जागरण, इतना आध्यात्मिक विकास, इतना साहित्य सृजन, इतना पुरुषार्थ और साथ ही इतनी विनम्रता, सहिष्णुता, गंभीरता एवं श्रावक-श्राविकाओं के प्रति इतनी वत्सलता, ममता व कृपादृष्टि। वस्तुतः अद्‌भुत अनुपम और दुर्लभ है।

आशादेवी रामपुरिया, बेंगलुरु

कनक ने किया कनक को पावन,
आपसे तेजोमय यह संघ मनभावन।
अमृत महोत्सव बेला का मधुर गुंजन,
जीवन आपका हो सरस और सावन।

सुमन नाहटा , लाडनूं

साध्वीप्रमुखा की यात्रा सुगम तो नहीं थी पर आपकी विनम्रता, सरलता, ऋजुता, समर्पण एवं श्रद्धा का भाव अटूट है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र की त्रिवेणी से अभिस्नात् हो आप साध्वी समाज का नेतृत्व करते हुए पूरे श्रावक समाज को मातृतुल्य संभालती हैं।

सुमन बैद, हावड़ा

मन यही करता पखारें नित महाश्रमणी चरण।
जीवन के पृष्ठों को संवारें आपकी लेकर शरण।

सुमन बच्छावत, मुम्बई

खिल उठा वसुन्धरा का कणकण, उदित हुआ स्वर्णिम प्रभात,
मनोनयन की मंगल बेला पर अर्पित मंगल भावों की सौगात।
कलम की खनक अनूठी परम विदुषी अद्वितीय रचनाकार,
असाधारण साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा को वंदन शतशत बार।

सरला बोथरा, दिल्ली

कहते हैं व्यक्ति नहीं बोलता, उसका कर्तव्य मुखर होता है। गुण ही वातारण में महक पैदा करता है। कर्मजा शक्ति ही इतिहास रचती है। साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने अपना सम्पूर्ण जीवन तेरापंथ धर्मसंघ को देकर, भक्ति में लीन होकर, अपना सर्वस्व समर्पण किया है। आपके आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना।

राजलक्ष्मी गोलछा, विराटनगर, नेपाल

इस धरा से उस गगन के
पार तक तेरी कहानी ।
हे प्रभा के वलय ! चारों
ओर देती है सुनाई ।।

रच दिया इतिहास स्वर्णिम
शासना की अर्द्ध सदी का ।
भर दिया आलोक उसमें
सत्य, शिव, सुंदर मति का ।।

अभिनन्दन श्वेत रश्मि का... जिनसे रोशनी का वरदान मिला

असाधारण साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के चरणों में नमन।
परम सौभाग्य है कि बैद कुल का गौरव, विलक्षण व्यक्तित्व की धनी साध्वी का तेरापंथ धर्मसंघ में साध्वी प्रमुखा के रूप में प्रतिष्ठित हुई। आपके प्रमुखा पद पर मनोनयन के 50 वर्ष परिपूर्ण होने पर हार्दिक अभिनंदन एवं शुभकामना कि आप लंबे समय तक स्वस्थ रहें एवं संघ एवं संघपति की सेवा में लगे रहे।

संसारपक्षीय अनुज – कमल सिंह बैद

परम वंदनीया असाधारण साध्वी प्रमुखा श्री जी के पावन चरण कमलों में अमृत महोत्सव पर मेरी तरफ से अनंत अनंत बधाई व शुभकामनाएं। मुझे नाज़ है कि मैं आपकी संसार पक्षीया भाभी हूं आप युगों युगों तक धर्मसंघ की संभाल कराती रहें।

संसारपक्षीय भाभी – विमला बैद

विराट व्यक्तित्व की धनी, तुलसी की निर्मित इस कृति, संस्कृति का सौन्दर्य भरा। श्रद्धा, समर्पण, गुरु निष्ठा से पद निखरा। सहनशीलता, पापभीरूता, अप्रमत्तता की पहचान बनी संघ की अभिनव शान। दृष्टि से सृष्टि सरसाए, तेरी प्रज्ञा का शीतल चंदन। नित स्वस्थ रहे, युगों-युगों तक शासन को शिखरों चढ़ाएं।

संसारपक्षीय भाभी – सरोज बैद

महासतीवर तुम में, तेज सूर्य सा, रूप चांद सा,
तारों की छवि सिमट समाई।
वेग वायु का, धैर्य धरा का, सागर की सी है गहराई।
कुल की किरीट, कुल की शोभा, कुल पर नव कलश चढ़ाया है।
शहर लाडनूं, बैद घराने को कैसा चमकाया है।
आप अर्ध दुनिया की सरताज हैं। मुझे गौरव है कि आपकी संसार पक्षीया छोटी बहन होने का सौभाग्य मिला है।

संसारपक्षीय अनुजा – निर्मला पुगलिया

असाधारण साध्वीप्रमुखाश्रीजी द्वारा पचास वर्षों तक दायित्व को संभाले रखना आपके कर्तृत्व की मिसाल है। अतुलनीय है आपका प्रबंधन, प्रबोधन और प्रशासन।

संसारपक्षीय बहनोई – सुमेर पुगलिया

मरुस्थल की धरा, धरा में गाँव लाडनूँ।
निकला एक चांद चंदेरी में दिखाते हुए सबको कला।
कला की धवल रश्मि में सेठ सदासुखजी का परिवार खिला।
प्रमुखा पद का स्वर्ण जयंती वर्ष, सेवाएं धर्मसंघ को देती सहर्ष।
हे तुलसी युग की तरुणिमा करते हैं शत्-शत् वंदन अभिनंदन।

संसारपक्षीय भतीजे – राकेश, नीलम, मृणाल, अलका, आयुष, कोयल, नैतिक, रुद्राक्ष बैद, बंबुवाला

अमृत महोत्सव का स्वर्णिम प्रभात आया,
भुआसा महाराज को दिल का इक-इक तार बधाया।
कला की हीरकणी को गुरु तुलसी ने ढूंढ निकाला,
सर्व कलाएं विकसित कर जीवन को खूब उजाला।
कनकप्रभा बन ज्ञान प्रभाओं का आलोक है पाया,
बनें शतायु, स्वस्थ रहें, दिल ने शुभ भाव सजाया।
रजनीश सीमा कृति कहे बैद कुल स्वर्णिम कलश चढ़ाया,
हम सब ने गौरव पाया।।

संसारपक्षीय भतीजा-बहू – रजनीश सीमा बैद

चंदेरी नगरी के चांद सी है आभा,
बैद परिवार की आप कनकप्रभा।
पचासवां मनोनयन दिवस आपका,
मन प्रफुल्लित है हम सबका।
करबद्ध हो करते आपका अभिनंदन,
हे महासतीवर! आपको बार-बार वंदन।

संसारपक्षीय भतीजा बहू – नीलम बैद

मातृहृदया, अद्वितीय व्यक्तित्व, गुरुदेव तुलसी की अनुपम कृति, आपश्री ने अपने समय का, शक्ति का, श्रम का जो विसर्जन किया, वह अद्भुत है। इतने बड़े साध्वी समाज को संभालना, संघ के कार्यों का संपादन करना, आगंतुक दर्शनार्थी श्रावक-श्राविकाओं को नियमित दर्शन देना, सेवा करवाना अपने आप में बेजोड़ है। अमृत महोत्सव के इस महापर्व पर नमन, वंदन, अभिनंदन।

संसारपक्षीय भतीजी – रितु सुराणा

कोई भी इंसान जन्म से नहीं, कर्म से महान बनता है। आपश्री के बेजोड़ अनुशासन, वक्तृत्व कला, गुरु दृष्टि की आराधना, विनम्रता, आकी स्निग्ध मुस्कान, आपश्री की मनमोहक छवि, ऐसे बेजोड़ गुणों से आपने अपने व्यक्तित्व को नव आयाम दिए हैं। आपको पाकर, आपके माता-पिता, परिवार, कुल और सारा जेन समाज गौरवान्वित है। अमृत महोत्सव पर हे सती शेखरे! ममतामयी मां आपको वंदन, अभिनंदन! अभिनंदन!

संसारपक्षीय भतीजी – रश्मि नौलखा

साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने पूरे तेरापंथ समाज के दिल में अपनी अप्रतिम जगह बनाई है। नारी संसार के मानचित्र पर उभरने वाली महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी हमारे परिवार के लिए ही नहीं अपितु पूरे तेरापंथ समाज के लिये अमूल्य वरदान है। इनके पदचिंहो पर चलना हमारा कर्तव्य है एवं उनकी विचार धाराओं को धारण कर लक्ष्य तक पहुँचना उनके लिए हमारा सच्चा आभार प्रकट करना होगा। आपके लक्ष्य और स्वास्थ्य की मंगलकामना करते हुए पूरा दुगड़ परिवार आपकी स्वर्ण जयंती पर ढेरों बधाइयाँ देता है।

संसारपक्षीय भांजा – जुगल वित्नु दुगड़

अभिनन्दन श्वेत रश्मि का... जिनसे रोशनी का वरदान मिला

असाधारण साध्वीप्रमुखा के साध्वीप्रमुखा पद पर चयन दिवस की स्वर्ण जयंती के शुभ अवसर पर सादर वंदन, शत्-शत् अभिनंदन। आपश्री का सान्निध्य प्रेरक और आश्वस्तिकर है जैसे मां का अंतरंग नैकट्य आश्वस्त ओर प्रेरणा स्फूर्त कर देता है। आपकी छत्रछाया में 'मृत्यु से जीवन की ओर', 'घृणा से प्रेम की ओर', ' विष से अमृत की ओर', 'अधर्म से धर्म की ओर' जाने की कला सीख सकें और सुखद भविष्य का निर्माण कर सकें। वंदन, अभिवंदन।

संसारपक्षीय भांजा – नरपत दुगड

अप्रकंप संकल्प, सुदृढ़ निश्चय, कृतज्ञता की प्रतिमूर्ति, संघ-संघपति के प्रति आस्था, विश्वास, अद्भुत समर्पण, अनुशासन की सजग प्रहरी, तुलसी युग की तरुणिमा, मातृहृदया, असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री जी के साध्वीप्रमुखा चयन दिवस की स्वर्ण जयंती पर सादर नमन, अभिवंदन। आपश्री के सान्निध्य में सम्यक श्रद्धा की अनुभूति होती है। जिस तरह बहुत से वाद्यों के समाविष्ट होने पर संगीत सजीव हो जाता है, उसी तरह आपकी शीतल छांव में हमारा जीवन सजीव हो जाता है। श्रद्धा विनय सहित सादर वंदन। तव पदौमम हृदये, मम हृदय पदद्वय लीनम्।

संसारपक्षीय भांजे की बहू – शांति देवी दुगड़

तुम धर्मसंघ की हीर कणी, तुम चन्द्रकांता चंद्रमणि।
वात्सल्य भरा तेरी रग-रग में, हे तेरापंथ की महाश्रमणी।
तुम वीतराग की प्रतिनिधि, तुम बैद कुल की अमूल्य निधि।
पचासवें चयन दिवस पर स्वीकारो, अभिवंदन, वंदन शत्-शत् बार।

संसारपक्षीय भांजी – विजया ओसवाल

हे नारी लोक की शान! चयन दिवस की स्वर्ण जयंती की परिसंपन्नता पर आपका शत-शत अभिनंदन! शुद्ध साधुता की सफेदी में सिमटा एक विलक्षण व्यक्तित्व जिनकी एक झलक से नयनों को तृप्ति मिल जाती है एक जीकारे से लाखों हृदय आह्लादित हो जाते हैं। हे सती शेखरे! आपको शतश: नमन!

संसारपक्षीय भांजी – पल्लवी सेठिया

देखा नहीं हमने तेरा चयन दिवस मनहारा,
गुरु तुलसी ने अपनें मुख से कैसे नाम उचारा।
स्तम्भित दिल से स्तम्भित आँखें जिसने भी निहारा,
काश! वही दृश्य आज कोई फिर से हमें दिखाए ।।

संसारपक्षीय भांजी – शशि जैन

साध्वी प्रमुखा श्री जी के 51वें चयन दिवस की हार्दिक शुभ कामनाएं। आपका जीवन सभी साधु-साधवियों एवं श्रावक समाज के लिए एक अमूल्य निधि है। आपके ज्ञान का कोष समुद्र सा गहरा है। उनमें से कुछ बूँदे भी प्राप्त हो जाए तो हमारा जीवन की सार्थक हो जाएगा। यही कामना है कि आप इसी प्रकार हम सभी को धर्म की राह बताते हुए जीवन निर्वाह करने की सही राह दिखाते रहें।

संसारपक्षीय परिवार – इंदू, सौरभ, साकेत एवं हर्षिता दुगड़

जन्मस्थली लषति लाडनुपुण्यभूमि:
बैद: कुलं समुदितं मनितं पवित्रम्।
तातस्तु सूरजमलो जनयित्रि छोटी
साध्वीशिरोमणि महाश्रमणी प्रमुख्या।

नाम्ना कला वरकलामयजीवनश्च
कर्त्तृत्वकौशलमहो कमनीयमग्र्यम्।
व्यक्तित्ववैभवमनल्पसमुन्नतश्च
साध्वीशिरोमणि महाश्रमणी प्रमुख्या।

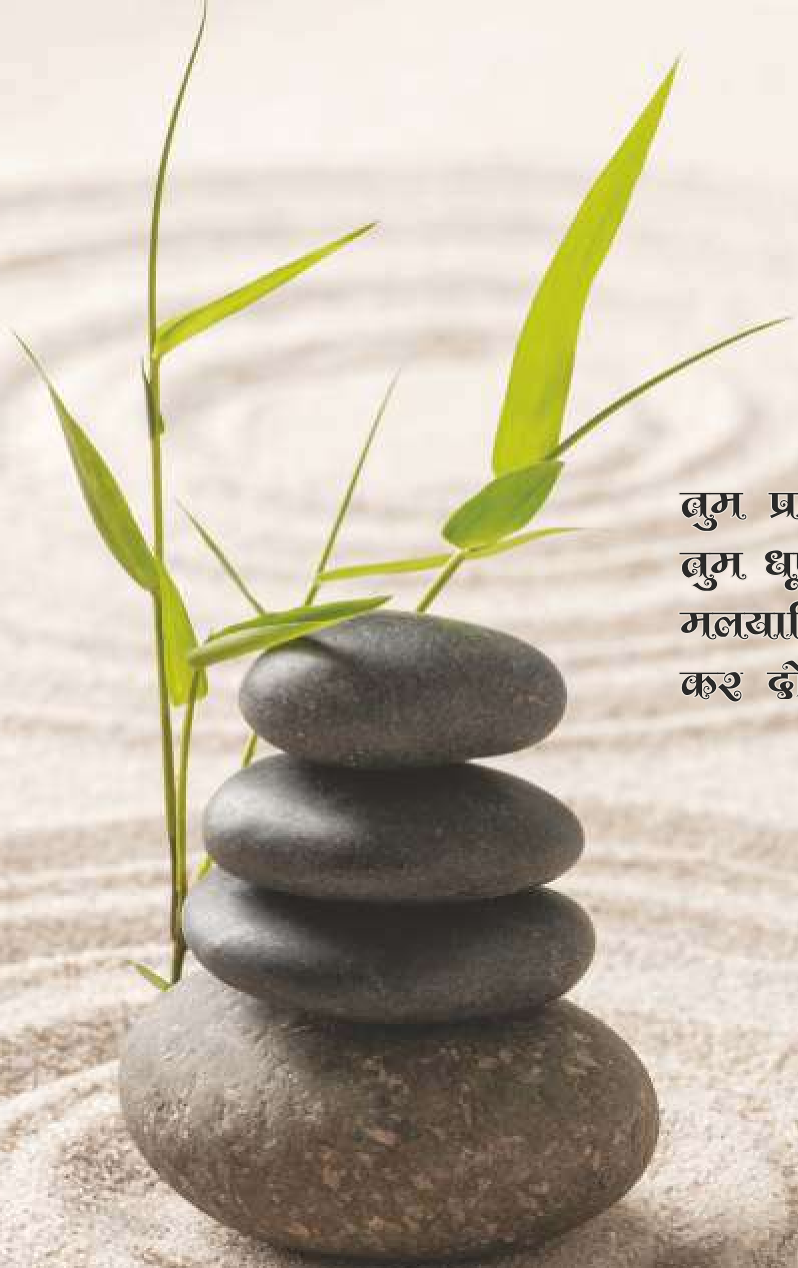

तुम प्रातः पवन जैसी, प्रतिपल प्रेरित करती,
तुम धूप भोर की हो, दुःख-रोग, शोक हरती।
मलयानिल चंदन तुम! प्रमुदित तन-मन कर दो,
कर दो पावन मुझको निर्मलता का वर दो।।

अभिवन्दना सरस्वतीतनयां महाश्रमणीवरं

[illegible]

मातृहृदया विलक्षण साध्वी प्रमुखाश्री जी की दूरदृष्टि को अंतर्हृदय से नमन, वंदन, अभिवंदन!

आप श्री का संसारावस्था में नाम कला था और इस नामारूप आपके विचार आपके कार्य और भी अधिक कलात्मक सिद्ध हुए। सरदारशहर – 2010 की बात है – आपने चिरसंजोई हुई ज्ञानाकर्षित अपनी अंत: इच्छा मेरे सम्मुख व्यक्त की। उसके फलस्वरूप 'जैन स्कॉलर परियोजना' का बीजारोपण हुआ। इस प्रस्तावित परियोजना को आपने एक बार में ही स्वीकृति दे दी। आपका यह विश्वास तेरापंथ समाज के लिए भविष्य में वरदान रूप सिद्ध होगा।

आपकी यह गहरी कल्पना शक्ति जहाँ एक ओर गुरुओं के स्वप्नों को साकार रूप देगी वहाँ तेरापंथ के श्रावक-श्राविकाओं को सुशिक्षित, भाषाविद् और तत्त्ववेत्ता विद्वान्/विदुषी बनने का सुअवसर भी प्रदान करेगी।

जैन स्कॉलर निदेशिका – मंजु नाहटा

अभिवन्दना सरस्वतीतनयां महाश्रमणीवरं

तव चरणसरोजे सततं श्रद्धासमर्पणम्।
प्रातः सायं प्रतिदिवसं, भक्तियुत वन्दनम्।।
महाश्रमणीसाध्वीप्रमुखा, कनकोपमा कान्ता।
सद्गुणसौरभसंवलितं, जीवनमस्ति विलक्षणम्।।
व्यक्तित्वमद्भुतञ्च, नेतृत्वकौशलम्।
कर्तृत्वमद्भुतं तव, विदध्यः पूजनम्।।
दिग्व्याप्ता गौरवगाथा, संस्तुत्या समुज्ज्वला।
अहो कथं भवेम समर्था, कर्तुं तद्वर्णनम्।।
अमृतमहोत्सवोऽयं, सुखदः, शुभदः, शिवदः।
गुरुकृपया संप्राप्तोऽतः, सर्वत्रानन्दनम्।।
मातु! संप्राप्नुयाम, तव पुष्टालम्बनम्।
निर्व्याजं संश्रयेम, शुभमंगलशंसनम्।।

जैन स्कॉलर प्रशिक्षिका – सुषमा आँचलिया

वंदे हे समण सेट्ठा! णाणं जाए आभरणं, दंसणं जाए सिंगारं, चारित्तो जाए सरीरं, जाए गुरुभत्ती पाणं, सम्प्पणं जाए सासं, अनुसासणं जाए विसासो, परिस्समं जाए अच्चा, अप्पा जाए पुज्जो जईण असहारण साहुणीपमुहा महासमणिवरं सय सय पणम। पत्थामि, तुमाइं वरहत्था सया जैणविउसीसुं वट्टउ। अमिमहोच्छवे सहस्सं सुहकामणं पेसइ।

जैन स्कॉलर प्रशिक्षिका – कनक बरमेचा

सम्यक् त्रिवेण्याः अप्रमत्त-साधिका महाश्रमणीवरा बारम्बार मम अभिवन्दना स्वीकरोतु। अमृत महोत्सवस्य शुभावसरे हार्दिकी शुभकामना। शिवास्ते सन्तु पन्थानः। भवती त्रिगुरूणाम् इंगितं लक्ष्यं कृत्वा प्रत्येक- स्वप्नं साकारं कृतवती। तुलसीकृति-कनकप्रभाया अथक श्रमेण तेरापंथ धर्म संघस्य यशःकीर्तिः वृद्धिंगता चापि जाता। भवत्याः वात्सल्यप्रसादं, मार्गदर्शनं च सदा मह्यं संप्राप्तं। अहं कुटुम्बेन सह पुनः 'सूरज भवने' तव चरणारविंदस्य प्रतिक्षाम् करोमि। भद्रं भूयात्, वर्धते जिनशासनम्।

जैन स्कॉलर प्रशिक्षिका – रंजना गोठी

जिनकी लेखनी में साक्षात सरस्वती विद्यमान हो, हृदय में संपूर्ण मानव जाति के प्रति करुणा, गुरु के प्रति अद्भुत समर्पण, नयनों में वात्सल्य, सुदृढ़ नेतृत्व क्षमता की धनी, आत्मबल से ओतःप्रोत, प्रभावशाली आकर्षक व्यक्तित्व, अदम्य साहस से गतिमान चरण, साध्वी समाज के विकास हेतु निरंतर प्रयत्नशील, असाधारण साध्वीप्रमुखाश्रीजी को अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य पर अभिनंदन, वंदन एवं आध्यात्मिक विकास की मंगल भावना।

जैन स्कॉलर प्रशिक्षिका – डॉ. वीरबाला छाजेड़

महानिद्देसिआ महासमणीवरा मे वंदणा-अहिवंदणा सीकरोतु!! गुरु-तुलसीए कलाए अब्भुयं कलं कणयप्पहा अहिहाणं दाअं, गुरुणो महापण्णस्स वीसासेण सुपुरिसत्थेण य साहुणीए समाजे नवउम्मेसं भरिउं णिय छमआओ संकमिआ। दिढसंकप्पेण, अणुसासेण, साहित्त-सज्जणेण, समप्पेण य चेयण्ण-रस्सिओ वित्थरिऊण नारीणं उत्थाणं कअं तओ आयरिय-महासमणेण असाहारण-साहुणि-पमुक्खाए बहुमाणं पत्तं। भवई सइ निरामयी भवेज्ज गुरु-किवं य लहेज्ज।

जैन स्कॉलर प्रशिक्षिका – राजु दूगड़

अल्प वयसि गृहं अत्यजत्। महापञ्चव्रतं स्वीकृतम्। यौवनकाले गुरोः आशीः प्राप्य साध्वी अभवत्।
प्रौढ़वयसि ग्रन्थरचनं कृत्वा
आगम – संपादनस्य महाकार्यं अकरोत्।
अष्टादश वयसि अपि अद्भुत कार्येण सह संघस्य मानं वृद्धिं करोति।

जैन स्कॉलर प्रेम चोरड़िया

वन्दन स्वीकार करें एक श्रावक का,
इतना सौभाग्य कैसे हुआ आपका ।
तीन – तीन आचार्यों को किया निश्चिंत,
साध्वी वर्ग भी रहा हमेशा पुलकित ।
ज्ञान-दर्शन-चारित्र को ससंघ बढ़ाया,
संघ को चारों दिशाओं में गतिमान बनाया ।
धन्य धरा है, धन्य गगन, धन्य-धन्य है जिन शासन,
पाकर आपको साध्वी जी
क्योंकि आप है, असाधारण – असाधारण !!

जैन स्कॉलर प्रशिक्षक – विकास गर्ग

ज्ञान की गंगोत्री जनकल्याणी कालिंदी, समता की सरस्वती,
महासती हे महाश्रमणी ।
त्याग, तपस्या और तितिक्षा, तेजस्विता तेरे गलहार
नारी शक्ति की अधिनायक, कल्पतरू सी हो सुखकार।
भैक्षव गण की शुभ्र चंद्रिका, शोभित सुरभित श्रेयसकार।
तव चरणों में भक्ति वंदन, स्वीकारो श्रद्धा उपहार।

जैन स्कॉलर पुखराज सेठिया

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी गण गणपति की शान
महानिदेशिका गण विकास में लगी बढ़ाया गण का मान
महाश्रमणी बन किया नव सृजन और आगम संपादन
असाधारण साध्वी प्रमुखा महाश्रमण गुरुवर फरमान
हे सतीशेखरे अमृत महोत्सव पर करती मैं आपका बहुमान
वंदन वंदन शत् शत् अभिवंदन।।

जैन स्कॉलर राजकुमारी सुराणा

अभिवन्दना सरस्वतीवनयां महाश्रमणीवरं

समता का जीवन्त रूप कोटि-कोटि वंदन।
क्षमा, दया, करूणा, ममता की मूरत का अभिनंदन।
अथक शक्ति, पुरुषार्थ प्रबल व्यक्तित्व सोने जैसा।
अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगा नेतृत्व आपके जैसा।
तेरापंथ का अहोभाग्य जो तुम जैसी प्रमुखा पाई।
तेरी अगुवाई में हमने आध्यात्मिक ऊर्जा पाई।
जन्म लिया तेरे युग में सौभाग्य अनूठा पाया है।
शुभ योग में जैन स्कॉलर बनने लाडनूं मन भाया है।
ममतामयी महाश्रमणी प्रमुखा अतिशीघ्र स्वास्थ्य का लाभ वरें।
काया कंचन हो जाए फिर से सब में पुरुषार्थ भरें।

जैन स्कॉलर सीता डागा

सत्य साधना के बल से आलोक अनोखा पाया,
जहाँ जहाँ थी रात अंधेरी तुमने आलोक फैलाया,
चाह तुम्हारी यह वसुधा अब स्वर्ग तुल्य बन जाए,
हे देवी! यह स्वर्ण जयंती आध्यात्मिक सोना बरसाये।

जैन स्कॉलर सुंदर हिरावत

असाधारण साध्वी प्रमुखा श्री कनक प्रभा जी के पास विविध विषयों का ज्ञान भंडार है। उनकी वाणी और लेखनी में ताकत है, प्रशासनिक क्षमता है, नेतृत्व की प्रबल शक्तिपुंज है। चारित्रिक दृढ़ता सहित नेतृत्व बहुत बड़ी तपस्या है। शतायु हो दीर्घायु हो शत् शत् वंदना।

जैन स्कॉलर बीना बोथरा

अरुण आभ मुखारविंद पर, नयनों में वात्सल्य अपार।
गुरुनिष्ठा, गण-निष्ठा गहरी, आस्था की हो अक्षय धाम।।
सूक्ष्म मनीषा जागृत मेधा, विविध मुखी प्रज्ञा का योग।
अन्तरंग व्यक्तित्व अगम्य है, मुखर रहा कर्त्तव्य बोध।।

मनोनयन की स्वर्णिम बेला में, नमन तुम्हें मूरत ममता की।
संघ महानिर्देशिका 'कनकप्रभा' महनीय कृति गुरुवर तुलसी की।

जैन स्कॉलर वीणा श्यामसुखा

गुरुवर तुलसी की अनुपम कृति, नारी जगत की मसीहा, हृदय में जिनके सरस्वती का वास है। संघ-संघपति के प्रति पूर्ण समर्पण, आत्मानुशासन संग प्रशासन उनकी मौलिक पहचान है। मातृहृदया, श्रावकवत्सल्या आठवीं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के स्वर्णिम मनोनयन दिवस पर अभिवन्दन है, शत-शत वन्दन है।

जैन स्कॉलर बिमला मणोत

गुरु चरणों में नत मस्तक छवि बनी उपहार,
विनय वादिता कर कमलों में कनक जुड़े है हाथ।
मातृत्व भाव बरसाती सब पर आशीर्वर जग त्राण,
मनोकामना है हम सबकी पायें स्वर्ण जयंती शत् शत् बार।

जैन स्कॉलर प्रतिभा कोठारी

महाश्रमणी की महिमा, हम गौरव गाते हैं।
भक्ति भावों से हम, नव छन्द सुनाते हैं।।
हमनें तुझमें देखी, फूलों सी कोमलता ।
तेरे नयनों में झलके, निर्झर सी निर्मलता ।
शीतल चन्दा जैसी, उजली उजली आभा ।
करुणा की प्रतिमूर्ति, करुणा बरसाते हैं।।
महाश्रमणी की महिमा, हम गौरव गाते हैं।।

जैन स्कॉलर सरला छाजेड़

णिप्पिहा, पगइभद्दा, अप्पमत्ता, संतरसं सोम्मं मुहमुद्दं, उज्जु-हियआ, वक्ककलाकुसला असाहारण साहुणी पमुहा अबीया अत्थि। ताए अंतरंगजागरणं अइनिम्मलं।गुरु पइ तस्स भत्ती, सद्धा, समप्पणभावणा य अबीआ।
महासमणी तेरापंथसंघस्स उज्जल-णक्खंतो अत्थि।
सा सव्वआ सुहचिंतणं करेई, विआर-संपेसणेण जणाण पेरणा देन्ति। सव्वे जणा ताए किवं दिट्ठी पाविऊणं तुट्ठं हवन्ति।
तेण वत्तितं कत्तितं अपुव्वं अत्थि।

जैन स्कॉलर बीना भांडिया

सम्यक् पुरुषार्थवान् पुमान् विन्दति साफल्यम्। तत्कृते श्रमशीलत्वं दृढ मनोबलं वा परमावश्यकम्। तत्संपन्नो ना कठिनकार्याण्यपि कर्तुमलं भवति। महाश्रमणी वरा! अपि सम्यक् एवं निरन्तरं-पुरुषार्थेण सफलतायाः उच्चश्रेणीं प्राप्तम्। यत् नुनम् अस्ति स्वशक्ति परेण अनंत आकाशाये यात्रायितः। तया व्यक्तित्वं, नेतृत्वं, कर्तृत्वं च कम् न आकर्षयति। तस्या प्रखरः मरिचयः सघनतिमिरं दुरं कुर्वन्ति। एषां साध्वीप्रमुखाम् एकपञ्चाशते चयनदिवसे श्रद्धासिक्त-अभिवंदना! अभिवंदना!

जैन स्कॉलर - निर्मला नौलखा

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभायाः जीवनं बहुविधगुणानां समवायः विद्यते। मम एक जिह्वा सर्वान प्रकटीकर्तुं नालम्। अहं तु एकं गुणं प्रकटीकृत्वा धन्या मन्ये। भवतीनाम मधुरमितसारभूतवाणी सर्व समस्थानां समाधातुं समर्था। विद्वद्वर्गोपि भवतीनाममि भाषणेन संतुष्टो संजायते। अस्मिन स्वर्णिमवासरे मम श्रद्धाप्रणतिं स्वीकुर्वन्तु।

जैन स्कॉलर पुष्पा बरड़िया

अभिवन्दना सरस्वतीतनयां महाश्रमणीवरं

तेरापंथ की द्विशताब्दी पर तुलसी गुरु कर दीक्षा पाई।।
अप्रमत चर्या सतिवर की चार तीर्थ के मन को भाई।
ग्यारह वर्षों में अपनी अतुलनीय पहचान बनाई।
तुलसी गुरु ने योग्य समझकर साध्वी प्रमुखा शीघ्र बनाई।।
महाश्रमणी व संघ निर्देशिका गुरुवर तुलसी ने बख्शाया।
असाधारण साध्वी प्रमुखा महाश्रमणगुरु ने फरमाया।।

जैन स्कॉलर सुनीता चोपड़ा

अभ्यर्थना की हर और गूंज है छाई,
श्रम, श्रुत का शृंगार कर सृजन की देवी आई।।
सेवाभावना समर्पण देख, पुरुषार्थ की प्रतिभा लहराई।
आचार व्यवहार कुशलता देख, विनम्रता की 'श्री, धी' विकसाई।
तुलसी युग की तरुणिमा, बनी महाश्रमण युग की स्वर्णिमा,
जीवन दर्शन समग्रता विलक्षण प्रतिभा को शत-शत अभिवंदना।।

जैन स्कॉलर पूर्णिमा कठोतिया

यस्याः जीवनं भक्तिमयं वर्तते,
या स्वजीवने कर्मयोद्धा रूपेण ज्ञाता।
सर्वदा आशावादी विचारैः युक्ता वर्तते ,
सेनापतिः इव या जीवनं यापयति।
शान्तिदूतरूपेण सर्वत्र प्रसिद्धा अस्ति,
यस्याः कीर्तिः सर्वत्र प्रसरिता वर्तते।
वात्सल्यमयी विचारैः प्रसिद्धा सा,
तत्वज्ञानी दूरदृष्टा खलु च एषा।
तस्यै असाधारण - साध्वी- प्रमुखा- कनकप्रभायै नमः ।

जैन स्कॉलर मंजु सेठिया

तुभ्यं नमाम्यहमसाधारण-साध्वीप्रमुखा! महाश्रमणीवर्या!
तुभ्यं वंदाम्यहमद्भुत-साहित्य-सृजिका! सरस्वतीस्वरूपा!
त्वमृजुतायाः प्रतिमूर्तिः, नयनतः प्रवहति वात्सल्यसुधा, वाण्याः पीयूषवर्षां करोति, श्रोतान् दर्शकान् भक्तान् चाभिभूता। आर्ये! अहं 'प्रेमलता' तव स्वर्णजयंत्यवसरे करोमि शुभाषया, आरोग्यं दीर्घायुष्यं च सम्प्राप्य चिरकालपर्यंतं कुरु जिनशासन-सेवां।।

जैन स्कॉलर प्रेमलता नाहर

गुरुदेव तुलसी की अनुपम कला- कृति,
पौरुष -प्रतिमा, शक्ति-स्वरुपा महासती।।
तुलसी-साहित्य संपादिका, वरद्-पुत्री सरस्वती,
श्रम-सेवा-सहकार- सम, नित नये स्वप्न उकेरती।।

जैन स्कॉलर विमला डागलिया

हे! नारी रत्नशिरोमणी,
नहीं मुझमें इतनी क्षमता, मैं तेरे गुण गाऊं,
पर अभ्यर्थना के पल को कैसे व्यर्थ गवाऊं।
क्षयोपशम हुआ कर्मों का, बना शुभ का योग,
वंदन कर क्षीण करुं मैं अशुभ-कर्म संयोग ।

जैन स्कॉलर मीना जैन

संसारतितीर्षुः-नरेभ्यः-उत्तम-साधना-स्थलः-तेरापंथः, तस्मिन अंतर्गते यस्याः सम्पूर्णः-चेतना-जागृता असाधारण साध्वीप्रमुखा, या समुद्रस्य गाम्भीर्यं मापिका, नभं स्पर्शिता, दीप्त-मणि इव अप्रकम्प स्थिरचित्ता, सुभग-धर्मरूपी-सलिले अवगाहय निरन्तर उत्कृष्टोध्यात्मः साधनायां प्रवर्त्य मुक्तौ बाधक कर्माणि वारयितुं सदैव तत्परा, एतावती समर्पिता, विनम्रा च कथयति अहं एकः पाषाणखंड आसम् गुरुकृपया निजस्वरूपं प्राप्तं। गुरुत्रयं आशीर्वादं प्राप्तम्, तस्यै नमः।

जैन स्कॉलर विमला जैन

त्यागतपस्यातितिक्षा, तेजस्विता, कुशलनेतृत्ववैचारिकोदात्तता ज्ञानस्यागाधता च।
आत्मनः पवित्रतासृजनधर्मिताप्रमत्तता, सत्यचारित्राध्यात्म-निष्ठा विनम्रता च।
एतैः गुणैः सह शुभ्रवसना सरस्वत्याः विग्रह धारिणी
दृढ़निश्चयीगहनाध्यवसायी पुरूषार्थ्यृषिः आत्मने निवसति।
तमात्मने नमामि।
एषां साध्वीप्रमुखाम् एकपञ्चाशते चयनदिवसे श्रद्धासिक्त -
अभिवंदना! अभिवंदना!

जैन स्कॉलर आशा गुंदेचा

सुरज-सुया पसरई अंतरणाणस्स जं कणग-रस्सीआ,
वीअसीआणि सुवण्णाणुभवाणि पुप्फाणि केअराणि
उप्पज्जयाणि पुण्णाणि, देदिप्पमाण- तेरापंथ सासणस्स सुआरा,
अब्भुयं कत्तितं, असाहारणं नेतित्तं, विअसीअ गण -पुप्फवाडिया।
अज्ज अहं ताए सत्थस्स मंगल-कामणं करेमि,
पणमामि,वद्धामि। भवइ णाण-दंसण-चरित्तस्स आराहिउं णियं
लक्खं पत्तं करेज्ज।

जैन स्कॉलर मीना दुगड़

गुरुभक्त्यामनन्या विनये, समर्पणे च उदात्त स्वरूपा,
वत्सलतायाम् अक्षुण्ण-भंडारः, सा शारदायाः प्रतिरुपा।
साध्वी-गण-शृंगारा, यतोहि तारेषु ध्रुवतारा,
तुलसी-कृतिः, महाप्रज्ञ-वत्सला, महाश्रमण-मान्यवरा
कुर्वीत शासनं शताब्दः-पर्यन्तं, संघ-संरक्षणं, परिमार्जनं, संवर्धनं च
हे श्रेयस्करी! शुभावसरे स्वीकुर्यात् अस्माकं वन्दनं अभिनन्दनं च।

जैन स्कॉलर स्नेहलता पुगलिया

अभिवन्दना सरस्वतीवनयां महाश्रमणीवरं

त्रयाणामाचार्याणां सामीप्यं प्राप्ता, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा असाधारणम्।
मातृहृदया, वात्सल्यमूर्तिः, कुशला प्रशासका अकरोत्कति तारणम्।।
अनुभवी वक्तृ, प्रबुद्धा विचारका, साहित्यकारा करोति धर्मस्य प्रसारणम्।
मनोनयने अमृते वर्षे भवत्याः कृपया भूयान्मम दोषान्निवारणम्।।

जैन स्कॉलर सुधांशु जैन

हे महाश्रमणीवरे ! भवत्यः कोटिशः वंदामि !!
स्वस्था भूयात् चिरायु भूयात्, पूज्ये सतीश्वरे। स्वीकरोतु कृपां कृत्वा, कमलेशाभिवंदनाम्। भवत्याः चयनदिवसे इमां मनोकामनां करोमि यत् भवती युगान् पर्यन्तं धर्मसंघं सेवेत, पिपासुभ्यः प्रेरणां प्रदायेत् च। भवत्याः मार्गदर्शने वयं आध्यात्मिकं विकासं कुर्याम। यथोक्तम् - प्रजहाति यदा कामान्, सर्वान् पार्थ! मनोगतान्। आत्मन्येवात्मातुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते।। भवती स्थितप्रज्ञा अस्ति, अस्मभ्यम् स्थितप्रज्ञतायाः आशीर्वादं प्रदायेत्, एभिः भावैः पुनः अभिवंदना!!

जैन स्कॉलर कमलेश रांका

इदानीं काले मम हृदये अतीव प्रसन्नता अस्ति। सकलसमाजः मिलित्वा साध्वी प्रमुखाया पंचाशत्वर्षाणां समापनावसरे स्वर्ण-जयन्त्या आयोजनं लाडनूनगरे गुरोः सन्निधौ आयोजिष्यति भवत्याम् अनेके विशिष्टाः गुणाःसन्ति। विनयेन, समर्पणेण सह अद्भुतवक्तृत्वशैल्या अनुशासनशैल्या इत्यादि गुणैः महाश्रमणी-असाधारण- साध्वी प्रमुखा पदं प्राप्तवती।। वयं भृशं -भृशं अनुमोदना कुर्मः! शुभं भूयात् कुशलं भूयात्। मम मंगलकामना स्वीकार्या।

जैन स्कॉलर अरविंद दोशी

आप की सत्य निष्ठा, चारित्र निष्ठा, सिद्धांत निष्ठा और अध्यात्म निष्ठा अद्भुत है। आप का आहार, वाणी, उपधि संयम अनुत्तर है। इसलिए आप के चारों ओर पवित्रताएं-उज्ज्वलताएं बिछी हुई सी प्रतीत होती है ।
पवित्रं चरितं यस्याः पवित्रं जीवनं तथा ।
पवित्रता स्वरुपिण्यै, तस्मै कुर्मो नमो नमः।।

जैन स्कॉलर सुनीता छाजेड़

प्रमुखाश्रीजी एक ऐसी रश्मि का उदय, जो तेरापंथ धर्म संघ को ही नहीं संपूर्ण विश्व को आलोकित करती है। उनका लिखा हर शब्द हमारी चेतना को जागृत करता है। युवाओं में नव उत्थान भरता है। आपकी चैतन्य रश्मियाँ भटके हुए राही का मार्ग प्रशस्त करती है जीवन जीने का सही मार्ग दिखाती है। आपके स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में ढेरों शुभकामनाएं मंगलकामनाएँ।

जैन स्कॉलर ज्योत्स्ना पोखरना

तुम,
यही कामना करते है, फैले प्रतिपल सुयश तुम्हारा,
अमृत महोत्सव की बेला पर, भाव भरा वंदन हमारा ।

जैन स्कॉलर अमिता जैन

आई आई चयन दिवस की स्वर्ण जयंती आई,
तेरापंथ उपवन में स्वर्ण कमलों ने ली अंगड़ाई,
पाकर आचार्य त्रय, जीवन यात्रा फूलों सी सरसाई,
स्वाध्याय ध्यान, जप, तप से कनक ज्योत जगमगाई।
एषां साध्वीप्रमुखाम् एकपञ्चाशते चयनदिवसे श्रद्धासिक्त-अभिवंदना!अभिवंदना!

जैन स्कॉलर रंजु बैद

अमृत महोत्सव की बधाई एवं शत् शत् वंदन
विधाता की सृष्टि का भव्य श्रृंगार है आप,
जीवन मरु में शीतल जलधार है आप।
असाधारण दिव्य गुणों की खान है आप,
माता-निर्माता व सृष्टि की शान है आप।।

जैन स्कॉलर बिन्दु बोथरा

तुलसी, महाप्रज्ञ की भक्ति समर्पण और योग साधना आपके रग-रग में समाहित है। आचार्य महाश्रमण सदृश उपशम कषायों की धनी महातपस्विनी है। सादगी, संयम और शुद्धाचरण से जीवन का प्रत्येक क्षण जिनका उज्ज्वल, निर्मल है - उन्हें मेरा अन्तहीन नमन-नमन-नमन।

जैन स्कॉलर सुनीता बैद

जो व्यक्ति नदी में नाव की तरह अपना जीवन जीता है, वह संसार की लहरों का भी आनन्द लेता है और संसार से ऊपर उठकर मुक्ति का भी पथिक बन जाता है। चंदेरी की इस अमल धवलचंद्रिका साध्वी प्रमुखा कनक प्रभा जी गण में 'रहूं निरदाव एकलो' की उक्ति चरितार्थ करती हुई संघ को सुशोभित कर रही है।

जैन स्कॉलर राजुला मादरेचा

असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री जी की करते हम वंदना,
इस पद की स्वर्णिम जयंती पर करते अभ्यर्थना।
तीन-तीन महान् आचार्यों की, की है सेवा,
आपने अद्भुत सौभाग्य है पाया।
हम पुलकित हो करते आपके कर्तृत्व की सराहना,
आप एकाभवतारी बनें यही दिनेश की शुभकामना।।

जैन स्कॉलर दिनेश कोठारी

अभिवन्दना सरस्वतीतनयां महाश्रमणीवरं

मातृहृदया वात्सल्यता की जीवंत एक मूरत हो आप।
अध्यात्म बाग में धर्म की सौरभ महकाएं वो सूरत हो आप।
पुरानी पीढ़ी में नई सोच का अवतार हो आप।
भागते जीवन में सुकून देनेवाली रफ्तार हो आप।
बहु आयामी प्रतिभाओं से भरा हुआ लावण्य है।
ऐसा कोहिनूर पाकर यह धरा हो गई धन्य है।
ऐसी नारी शक्ति को शत् शत् नमन।

जैन स्कॉलर चन्द्रप्रभा पुगलिया

तुलसी की अनुपम कृति, महाप्रज्ञ की प्रज्ञा से निखार पाया।
वक्तृत्व, कर्तृत्व, नेतृत्व और कवित्व से संघ में रंग खिलाया।
आपके मधुर व्यवहार में बहती है प्रेम की अविरल धारा।
मातृहृदया के प्रमुखा पद की स्वर्ण जयंती पर भावभरा वंदन हमारा।।

जैन स्कॉलर पुष्पा मेहता

यथार्थ चिंतन की धारा में सतत् प्रवाहमान।
निरंतर लेखनी गतिमान,
गण की सार-संभाल में विद्यमान।
ऐसी हमारी साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा महान।
करते उनके कनक (स्वर्ण) पदारोहण का सम्मान।

जैन स्कॉलर महेन्द्र संघवी

शब्द नहीं मैं लिखूं कैसे, व्यक्तित्व आपका सागर जैसे,
30 वर्ष की अल्पायु में, गुरु ने नवाजा प्रमुखा पद से।
डोर संभाली अजब गजब से, बेजोड़ लेखनी गीत बोल से ।
वर्धापित करते स्कॉलर मिल, अभिवंदन करते हृदय से।।

जैन स्कॉलर विमला गोलेछा

सूरजमल छोटीदेवी गृह दिव्यात्मा है आयी।
मनोमना वैराग्य से बाधाएं सारी है ठुकरायी।
पारमार्थिक संस्था में आ मेधावी है कहलायी।
सतत् ज्ञानोपयोग से बुद्धि निर्मलता है पायी।।
अष्टम् प्रमुखा कनकप्रभा गुरु तुलसी ने पायी।
सृजन क्षमता, निस्पृहता, सरदार सती सी आयी।
शिक्षा, संस्कार, साधना, सेवा गण में विकसायी।
संघ महानिदेशिका, महाश्रमणी सी विभूता लायी।।

जैन स्कॉलर शोभा डागा

कर्तृत्व, वक्तृत्व, लेखनकौशल, है मृदु, सौम्य, कोमल व्यवहार।
तुलसी की कृति 'कला' ने बनकर कनक चमकाया साध्वी परिवार।
कर विकास चहुंमुखी संघ में गुरुवर का किया स्वप्न साकार।
हर पल करते यही भावना जैन स्कॉलर परिवार।
युगों-युगों तक मिलता रहे पावन अविरल सान्निध्य सुखकार।

जैन स्कॉलर प्रमोदिता बोथरा

नीलिमा के शांत समुद्र से आकाश में ज्वलित है हीरक प्रभ सूर्य।
अंतर मन के झंझावातों से लड़कर, पाया स्थिर आत्मज्ञान।
गुणरुपी पुष्प गुल्मों की विथिका में चलकर सुस्मित, कुसुमित,
गुंजारित, अरुणिम, चंद्र कौमुदी सी स्फटिक मुस्कान।
कल नादिनी नारी जीवन की, प्रस्फुटित कुसुमों सी पहचान।
श्री चरणों में वंदन अभिनंदन, करते हैं हम सारे नादान।

जैन स्कॉलर ज्योति पुगलिया

एक ज्योति, हजारों रश्मियों को साथ लेकर गांव, नगर, महानगर सभी ओर बढ़ रही है।
अपनी वाणी और साहित्य-सृजन के प्रभाव से युग को गढ़ रही है।
एक मातृहृदया, नारी उत्थान हेतु प्रयत्नशील, सतत् निरंतर।
संस्कृत प्राकृत आगमज्ञान से, वे कर रही निज आत्मोत्थान उत्तरोत्तर।
साध्वी शिरोमणि को मेरा शत् शत् नमन।।

जैन स्कॉलर अरूणा संचेती

निज वैभव जिनका व्यक्ताव्यक्त, गुणगान हमें करना नहीं आता।
स्वप्रमाण सिद्ध करने हेतु, जो बने अर्धशतक में उत्कृष्ट प्रमाता।
अमूल्य है आपश्री का संयम, उत्कृष्टतापूर्वक पाली गुप्ति, समिति।
गौरवान्वित है आपका उज्ज्वल चारित्र, स्वयं ही प्रमाण स्वयं प्रमिति।
आप शासन की अनमोल धरोहर, आप वही कारण परमात्मा ।
जिनका सान्निध्य दे आत्मानुभूति, आप ज्ञान स्वरुपी चारित्रात्मा।

जैन स्कॉलर जिनी जैन

आप का व्यक्तित्व और कर्तृत्व आध्यात्मिक विभूतियों का पुंज है।
आप जगत की विशिष्ट शक्ति के रूप में हो । आप की गुरु-भक्ति,
आपकी संघ-निष्ठा, आपका विनय और आपका अनुत्तर संयम
तेरापंथ की बेमिसाल नज़ीर है। आप को वंदन, अभिनंदन।

जैन स्कॉलर चंद्रकला पुगलिया

कनकाभकनकप्रभा
निष्कामक्रोधा कल्याणकरा
क्षीणकल्मषा सुखदा
माता नः क्षेमकरा सदा।

जैन स्कॉलर मंजू बैद

अभिवन्दना सरस्वतीतनयां महाश्रमणीवरं

धरा कलकत्ता, केलवा, गंगाशहर की बड़ी सौभाग्यशाली,
अनवरत चलती कलम, कविता एवं साहित्य की सृजनकर्ता निराली।
तत्त्वज्ञानी, आगम-ज्ञाता, मनोवैज्ञानिक, सही सीख देने को तत्पर है जिनकी मधुर वाणी,
आई है मातृहृदया, संघमहानिदेशिका प्रमुखाश्री जी के अमृत महोत्सव की बेला सुहानी।

जैन स्कॉलर मीना बाफना

तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह के एतिहासिक अवसर पर केलवा में आचार्य तुलसी के करकमलों से दीक्षित, आचार्य त्रय की प्रज्ञा से सिंचित, श्रमशील, एकाग्रचित्त, ज्ञान का अक्षय कोष, आचार कुशल, विनम्र, सेवाभावी, शास्त्रों की मर्मज्ञ, अनुशासन से ओत:प्रोत, सरल, सत्य भाषी, साहित्य प्रेमी, 'मेरा जीवन : मेरा दर्शन' द्वारा विराट व्यक्तित्व के धनी गुरुदेव तुलसी से मेरा परिचय कराने वाली, केसर की क्यारी, वात्सल्य की प्रतिमूर्ति, असाधारण साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी को शत्-शत् वंदन।

जैन स्कॉलर मीना कोठारी

शरद पूर्णिमा के चन्द्र के समान उदार, जल की धारा सी विनम्र, आश्विन के निरभ्र आकाश सी निर्मल, कुन्दन सा मुख मण्डल, वीणा सा वाक् माधुर्य, बसन्त सा आकर्षण, वसुधैव कुटुम्बकम् स्वरूप वात्सल्य, सत्यं शिव सुन्दरम् की समन्वित कृति का नाम है साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा! उषा कालीन सूर्य सी विशालता तुम्हारे जीवन की धारा को इतना विशाल बना देती है कि इसमें निमज्जित हुए बिना कोई कैसे रह सकता है। हे साध्वी शिरोमणि! तुम्हारी संयम की शुभ्रता, शुक्लता, चन्द्रमा की कला के समान बढ़ती रहे।

जैन स्कॉलर डॉ. अमराव चोरड़िया

तेजस्वी तरुणिमा : श्रद्धासिक्त अभिवन्दना

विशिष्ट गणमान्य व्यक्तियों द्वारा

Sadvhi Kanakprabhiji is successfully leading the large group of Sadhvis of Terapanth organisation. She is continuously working for education and empowerment of women along with propagating high moral principles of Jain dharma. Her contribution for women welfare is commendable and will encourage other people of the society to do the same.

Rajnath Singh, Minister of Defence, India

साध्वी कनकप्रभाजी केवल नारी जाति ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव जाति का गौरव है। आपने स्वयं का विकास करते हुए, समग्र महिलाओं के विकास पर सम्पूर्ण चिन्तन किया एवं धर्मनिरपेक्ष, जाति-रंग भेदभावों से उपरत तथा अंधविश्वासों से जकड़ी नारी जाति को उबारा है। आपकी मार्मिक लेखनी ने साहित्य सृजन में अमिट छाप छोड़ी है।

कैलाश चौधरी, कृषि व किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार

At the outset, I would like to congratulate **Kanak Prabhaji**, the eighth Sadhvi Pramukha of Terapanth Dharma Sangh for dedicating her continuous service of 50 years as Sadhvi Pramukha in propagating the philosophy and spirituality in India. Her positive outlook towards the empowerment of women led to great progress in society. It is a moment of pride not only for Terapanth Dharma Sangh, but also for the whole Nation.

H.D. DEVE GOWDA, Former Prime Minister

Revered Sadhvi Pramukha Kanak Prabha ji's inspiring leadership and her role in intellectual development of the people in the society is incomparable. Moreover, she played an assiduous role in compiling and editing the Jain Agamas which contain the teachings of Mahaveera. Her prolific knowledge in the Sanskrit, Prakrit and Hindi language made her an acclaimed litterateur who also worked for the empowerment of women by encouraging them for education.

Dr. Himanta Biswa Sarma, Chief Minister, Assam

अहिंसा परमो धर्मः की भावना के साथ जैन श्वेताम्बर तेरापंथ संप्रदाय ने सर्वकल्याण का भाव जन-जन तक फैलाने के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के पावन दिशा-निर्देश में आप निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर रहे।

आचार्य देवव्रत, राज्यपाल - गुजरात

Sadhvi Pramukha Kanak Prabha ji is an affectionate and motivated leader. She is also a litterateur par excellence and has been a crucial part of the mammoth task of compiling and editing the Jain Agamas. She has always encouraged education and self-reliance in women and supported the eradication of superstitious beliefs.

Prof. Jagdish Mukhi, Governor of Assam

एक विशिष्ट साहित्य सृजिका, कवयित्री, प्रभावी वक्ता, अंधविश्वास और रूढ़ परंपराओं में जकड़ी नारी को उबारने में अपना विशिष्ट योगदान देने वाली असाधारण साध्वीश्रीजी धर्मसंघ की विशाल साध्वी समाज को नेतृत्व प्रदान कर रही है। इस अवसर पर मंगलकामना।

गणेशीलाल, राज्यपाल - ओड़िशा

साधु-साध्वी समाज में धर्म की स्थापना और आदर्श पथ पर चलने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। भारतीय संस्कृति नैतिक मूल्यों से जुड़ी धर्म प्रधान संस्कृति है। इसमें उदात्त जीवन मूल्यों पर सदा जोर दिया जाता रहा है। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी का व्यक्तित्व इस संदर्भ में प्रेरणा देने वाला है। उन पर प्रकाशित अभिनंदन ग्रंथ से पाठकों को भी धर्म के आलोक पथ पर चलने का मार्ग प्रशस्त होगा, ऐसा विश्वास है।

कलराज मिश्र, राज्यपाल, राजस्थान

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी के प्रमुखा पद की 50वीं वर्षगांठ को 'अमृत महोत्सव' के रूप में मनाया जा रहा है। साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी का प्रेरणादायी जीवन मानव कल्याण हेतु लोगों का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा।

सचिन पायलट, विधायक-टोंक राजस्थान

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने पुरुषार्थ, प्रतिभा एवं जागरूक प्रशासकत्व से साध्वी समाज को आगे बढ़ाने का बहुत प्रयास किया है। उनमें त्याग, तपस्या, तितिक्षा और तेजस्विता का अप्रतिम समन्वय है। आपने अपने आगमज्ञान, विपुल साहित्य सृजन और कुशल नेतृत्व के बल पर धर्मसंघ को अपार ऊंचाई दी है।

संगीता आर. पाटील, विधायक - गुजरात विधानसभा

तेरापंथ धर्मसंघ एवं साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी के बारे में जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता का अनुभव हुआ की आप संघ और समाज के बीच ऐसी सेतु हैं, जो सम्पूर्ण और परम उपकारी है। साध्वीश्री जैसी विरल व्यक्तित्व की धनी को मेरा सादर प्रणाम।

फिरहाद हाकिम, परिवहन और आवास मंत्री - पश्चिम बंगाल

तेजस्वी तरुणिमा : श्रद्धासिक्त अभिवन्दना

परम श्रद्धेय साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी नारी जाति के पथ प्रदर्शन का कार्य कर रही है। यह महिला शक्ति के लिए परम सौभाग्यशाली है। महिलाओं के सर्वांगीण विकास के शिखरों को छूने का प्रयास किया जा रहा है, वह नारी जाति ही नहीं संपूर्ण समाज के लिए गौरव की बात है।

ज्ञानचन्द पारख, सदस्य, राजस्थान विधानसभा

भौतिकतावादी इस वर्तमान युग में जहां त्याग, तपस्या, बलिदान, स्नेह, ममता, संस्कार, अचार विचार की भावनाएं लेश मात्र भी नहीं रह गई है, वहीं परम पूजनीय महाश्रमणीजी जैसी विभूति अपने वचनामृतों के माध्यम से लाखों बहनों के जीवन में एक नया उजाला देती है और उन बहनों के माध्यम से संपूर्ण भारतवर्ष में एक दिव्य ज्योति प्रस्फुटित होती है।

रफीक खान, विधायक – राजस्थान विधानसभा

तेरापंथ धर्मसंघ की साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी एक महान साहित्यकार, नारी उद्धार, करुणा की प्रतिमूर्ति, प्रबुद्ध विचारक एवं संघनिष्ठ साध्वी, विशिष्ट संपदा से संपन्न, गंभीर गुणों से युक्त, असाधारण पवित्रता से परिपूर्ण न केवल नारी जाति के लिए अपितु संपूर्ण मानव जाति के लिए गौरव है।

विजेंद्र गुप्ता, विधायक – रोहिणी

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी तेरापंथ धर्मसंघ की ही नहीं अपितु समस्त नारी समाज के लिए एक प्रेरणा है। आपका जीवन और आपके कार्य मानव मात्र के उत्थान और कल्याण की भावना से आपूरित है। महिलाओं को आगे बढ़ाने, परिवारों को संस्कारी बनाने तथा जीवन में सामंजस्य बनाए रखने की जो प्रेरणा आपके लेखन और प्रवचनों से मिलती है, वह प्रशंसनीय है। समाज और देश की सीमाओं से पार आपका संदेश विश्व की प्रत्येक महिला के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है।

अनुराधा कोईराला, संस्थापक – माइती नेपाल

जिन के स्वर्णिम आभा के आगे, सूरज भी शर्माता है,
जिनके चरण स्पर्श कर हवा भी धन्य हो जाती है।
क्या कहना उनके मर्यादित जीवन का सागर भी शशि नवाता है
चेहरे पर ले मीठी मुस्कान जो सदा करती रहती जन कल्याण।
कनक प्रभा जी सती महान, उनका नाम ही उनकी पहचान।।

पूजा कपिल मिश्रा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष – भाजपा महिला मोर्चा

सृजन के प्रत्येक पलों की साक्षी मां के प्रति अनन्त कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं आपने नारी उद्धारक बन सोयी शक्ति को जगाकर चेतना में नव प्राण प्रवाहित किये। समग्र जगत को गौरव की अनुभूति है कि तेरापन्थ के उपवन में कस्तूरी की मनमोहक सुवास फैला आप स्वर्णिम आभ निखार रही हो। आप स्वस्थ, निरामय एवं सदैव संघ हित कार्यों में नारी शक्ति का कुशल नेतृत्व करें व युगों–युगों तक धर्मसंघ की बगियां को सृजन से संवारें।

अद्भुत अनुपम स्मित से समता के सन्देश हम पाए
साध्वीप्रमुखा श्री के लेखन से अमृत सुधा रस हम पाए
मनोनयन वर्ष पर शक्ति की लिखते आप नयी ऋचाएं
स्वस्थ सुखमय जीवन आपका रहे निरामय आपकी काया

संजीव गणेश नाईक, माजी खासदार

नारी संसार के मानचित्र पर उभरने वाली महाश्रमणी ने साध्वी समाज के दिल में अपना अप्रतिम स्थान बनाया है। नारी सामज के साथ–साथ साध्वी समाज के चहुंमुखी विकास के स्वप्न निरन्तर इनकी आंखों में तैरते रहते हैं।

इनकी जीवनयात्रा एक संतता की, एक अध्यात्मदृष्टि संपन्न ऋषि की तथा एक समाज निर्माता की यात्रा है। इस यात्रा के अनेक पड़ाव है जहां इनकी सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, शैक्षणिक आदि क्षेत्रों से संबंधित बहुमूल्य दृष्टियां एवं अभिप्रेरणाएं उपलब्ध होती है। व्यक्ति एवं समाज निर्माण में भी आपके विचारों का क्रांतिकारी प्रभाव देखने को मिलता है।

प्रो. डी.एस. चूडावत,
उपचेयरमेन – राजस्थान राज्य उच्च शैक्षणिक कांउसिल

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने पांच दशक तक कुशल नेतृत्व कर एक अनुपम मिसाल कायम की है। धीर–गम्भीर कनकप्रभाजी में संयमनिष्ठा, गुरुनिष्ठा एवं श्रमनिष्ठा का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। इनकी प्रशासन कला, वाणी में वात्सल्य, प्रखर लेखनी तथा भावपूर्ण काव्यप्रभा सम्पूर्ण समाज के लिए अनमोल वरदान है।

प्रो. लाड कुमारी जैन,
पूर्व चेयरपर्सन – राजस्थान राज्य महिला आयोग

2016 में प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के कूल्हे एवं घुटने की स्थिति देखकर लगा कि इन्होंने कितनी असहनीय पीड़ा समभाव से सहन की। सदैव शांत व प्रसन्नचित्त रहते हुए साधुचर्या के प्रति पूर्ण सजगता। चिकित्सा परामर्श अक्षरशः पालन करना। अस्पताल के स्टॉफ पर अमिट छाप छोड़ना। ऐसी सहज, शानत, धीर, गंभीर, वात्सल्य मूर्ति की चिकित्सा मेरे लिए अविस्मरणीय प्रसंग है।

डॉ. धीरज मरोठी

तेजस्वी तरुणिमा : श्रद्धासिक्त अभिवन्दना

अनंत श्री विभूषिता साध्वीप्रमुखा महाश्रमणीजी के देदीप्यामन व्यक्तित्व, मधुर मोहनीय वाणी, संगठन कुशलता, उत्कृष्ट संयम साधना, असीम ऊर्जा से प्रमुखाश्रीजी ने मानो अमरत्व प्राप्त किया है।

अमृतलाल जैन, पूर्वाध्यक्ष – नाकोड़ा तीर्थ

साध्वीश्री कनकप्रभाजी ने मानव जाति और विशेष नारी जाति के विकास के लिए जो कार्य किया है, वो असाधारण है। उन्होंने नारी जाति को समाज में बहुत ऊंचाई प्रदान की है।

राजेश टोपे, सार्वजनिक आरोग्य मंत्री, महाराष्ट्र

शक्ति का प्रतिरूप, शान्ति की मिसाल, सृजन का समन्दर, वात्सल्य का आकश, जागरण का सूर्य, अनुशासन की कहानी जहां लिखी जा सके। जहां ऐश्वर्य, लज्जा, धृति और तेज का संगम है। ऐसे साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी का मनोनयन अमृत महोत्सव समग्र नारी जाति के लिए प्रेरणा एवं गौरव का विषय है। अपने सिद्धांतों पर अडिग रहकर आगे बढ़ना हम आपके जीवन से सीख सकते हैं। आपने 50 वर्ष तक प्रमुखा पद जैसे गुरुतर दायित्व को संकल्पित होकर सजगता से निभाया।

सुमित्रा देवी जैन, सभापति – नगर परिषद्, बालोतरा

महाश्रमणी साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा! एक महान साहित्यकार, नारी–उद्धारक, करुणा की प्रतिमूर्ति, प्रबुद्ध विचारक, मार्गदर्शक एवं संघनिष्ठ साध्वी। साध्वी प्रमुखा ने नारी समाज का जिस प्रकार उत्थान किया है वह कल्पनातीत है। संप्रदायतीत, धर्म निरपेक्ष, जाति–रंग के भेद–भावों से उपरत, साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने अंधविश्वासों और रूढ़–परम्पराओं में जकड़ी नारी को उबारा।

सारिका जय, प्रवक्ता दिल्ली प्रदेश – भारतीय जनता पार्टी

आपकी छत्रछाया
आपका मार्गदर्शन
आपका वरद हस्त
आपकी प्रेरणा
आप जनमानस की
अप्रतिम विभूति को
मेरा शत शत नमन

वीणा शर्मा – जिला उपाध्यक्ष महरौली

करुणा की मूर्ति
एक महान हस्ती
नारी जाति के लिए एक उदाहरण
अनेकों की मार्गदर्शक को मेरा
कोटि कोटि नमन

वंदना सराफ़ – कटरा मंडल प्रभारी, भाजपा जम्मू प्रदेश

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी प्रभुता, सहिष्णुता, संवेदनशीलता, मानवता की परम उच्चकोटी की मिसाल, इस युग को उपलब्ध एक ईश्वरीय प्रसाद है।

उषा बाजपेयी, राष्ट्रीय कार्यकारिणी – भाजपा

साध्वीप्रमुखा जैन शासन व तेरापंथ धर्मसंघ की असाधारण उपलब्धि है। वात्सल्य की प्रतिमूर्ति, सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण, हिंदी–संस्कृत–प्राकृत–अंग्रेजी भाषाओं पर एकाधिकार है।

एच.आर. कुड़ी
पूर्वाध्यक्ष – राजस्थान राज्य मानव अधिकार आयोग

साध्वीप्रमुखा समाज की सिरमौर, नारी शक्ति की प्रतिरूप, वात्सल्य की प्रतिमूर्ति, प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–अंग्रेजी भाषाओं की ज्ञाता, अनेक गुणों से परिपूर्ण है। जिससे उनकी क्षमताएं, कार्यशैली, त्याग, तपस्या, आदि अद्भुत, ऐतिहासिक व अविस्मरणीय है। आपने धर्म समाज, मानव जाति और विशेष तौर से नारी शक्ति के उत्थान के लिए कार्य किए हैं, वह आपके द्वारा महिला वर्ग को बड़ी ही महत्त्वपूर्ण देन है, जिसके लिए सदियों तक आपको याद किया जाएगा।

किरण चोपड़ा, निदेशक – पंजाब केसरी

यह भारत माता की मिट्टी का सौभाग्य है कि ऐसी महान विभूतियां यहां हुई है जिनका जन्म ही जनकल्याण के लिए हुआ है। ऐसी ही एक विभूति हैं साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी। मर्यादा और अनुशासन के लिबास में रहने वाली साध्वीप्रमुखा यूं ही साधना में लीन रहते हुए राष्ट्र व समाज के उत्थान के लिए गतिमान रहे।

प्रद्युमन कुमार, राष्ट्रीय संगठक – भारतजी जनता पार्टी

साध्वीप्रमुखा की कविताएँ अध्यात्म का पथ तो आलोकित करती ही हैं साथ में उसमें वर्तमान युग की चिंता भी स्वर पाती है। उनकी कविताओं में परमसत्ता, चराचर, प्रकृति का सहज गुंफन दृष्टिगत होता है। भाव, रस, राग–विराग का संतुलित समायोजन वाणी पाता है। साध्वीप्रमुखा कनक प्रभा की हर रचना में नैतिक मूल्य, प्रभु के प्रति समर्पण, मानवता का संवेद्य मंत्र साँस भरता है। उनकी कविताएँ मनुष्य को मुक्ति के मार्ग पर अग्रसर करती हैं।

डॉ. मंजु रुस्तगी, चेन्नै

जय जय ज्योतिचरण

आचार्य श्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, रतनगढ़

तेजस्वी तरुणिमा : श्रद्धासिक्त अभिवन्दना

श्रद्धेया साध्वीप्रमुखाश्रीजी के संपर्क में आने वाला हर व्यक्ति यही महसूस करता है कि प्रमुखाश्रीजी उनके प्रति अत्यन्त अनुग्रही है। वस्तुतः यह सहृदयता उनके स्वभाव का अंग है। मुझे अनेक बार चिकित्सकीय सेवाएं प्रदान करने का अवसर प्राप्त हुआ, अनंत कृतज्ञता।

डॉ. विजयसिंह घोड़ावत, लाडनूं

To perform optimally in any role, be that of a housewife, a doctor or a teacher or any other, for a period of fifty years, is worthy of commendation and admiration. More so if the role is that of a nun. To have abided by the strenuous discipline of an ascetic while also leading from the front for most part of these fifty years is awe inspiring and humbling. My personal experience with her has taught me that she places or calmness and gentleness above all other virtues.

Sudhamahi Regunathan, Former VC - JVBI

साध्वी प्रमुखा कनक प्रभाजी स्वयं साहित्यकार एवं कवयित्री और कुशल संघ संचालिका है। आप कुशल जीवन निर्माता है। साध्वी प्रमुखा ने अपने कार्यकाल में प्रत्येक साध्वी की प्रगति और उनके जीवन में अनुशासन की प्रेरणा कूट-कूट कर भरी है। प्रति दिन के आहार-विहार के बाद सभी साध्वियों के जीवन में त्याग, अनुशासन और संयम का निर्माण कर उच्चकोटि के जीवन दर्शन को स्थापित किया है।

पद्मश्री डॉ. चंद्रकांत मेहता, पूर्व कुलपति - गुजरात विश्वविद्यालय

साध्वी प्रमुखा श्री कनक प्रभा जी महाराज का नेतृत्व अत्यंत सात्विक है। उनके चिंतन में ताजगी महसूस होती है। जैसी प्रसन्न उनकी मुखमुद्रा है, वैसी ही प्रसादिक उनकी वाणी है। आपका जीवन चिराग जैसा है। आपके पास जाने वाला व्यक्ति चाहे किसी भी धर्म-पंथ-संप्रदाय का हो, उसे उजाला अवश्य मिल ही जाता है, नि:संदेह जिससे उसका पूरा जीवन पूर्ण आलोकित हो जाता है।

रोहित शाह, साहित्यकार एवं पत्रकार

सांसों का इकतारा, जीवन की एक-एक सांस को और सांसों से बने एक जीवन को जीवन जीने का संदेश देती है। लेखिका का शत् शत् अभिनंदन।

प्रो. कल्पना गगरानी

'साँसों का इकतारा' साध्वी प्रमुखा कनक प्रभा जी का एक ऐसा अनूठा, भावपूर्ण काव्य संग्रह है जिससे पाठक स्वयं उसके रसास्वादन से अभिभूत हो उसके आनंद में डूब जाता है। अद्भुत सृजन कौशल, प्रखर शब्दों का मधुर व कोमल ताना-बाना देखते ही बनता है। प्रकृति के अनुपम सौंदर्य के उपमानों का मनोरम वर्णन मंत्र मुग्ध कर देता है।

इस नश्वर संसार में आप की ज्ञान ज्योति सम्पूर्ण विश्व में प्रकाशित हो और सभी उससे लाभान्वित हों ताकि संसार से घृणा, द्वेष, क्रोध आदि तामसिक भावों का निवारण हो सके।

मनवीन कौर पाहवा, औरंगाबाद

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी तेरापंथ धर्म शासन की एक विभूति है। उनमें त्याग, तपस्या, तितिक्षा और तेजस्विता का अमृतम समन्वय है।

हेमानी बोघावाला, मेयर - सूरत म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन

प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी विलक्षण साध्वी है। साध्वीजी अध्यात्म की उच्चतम परंपराओं, संस्कारों और जीवन मूल्यों से प्रतिबद्ध एक महान व्यक्तित्व है। साध्वीप्रमुखाजी ने एक सफल साहित्यकार, प्रवक्ता व कवयित्री के रूप में साहित्य जगत में सुनाम अर्जित किया है।

सी.आर. पाटील, लोकसभा सांसद

साध्वीप्रमुखा स्वयं शिल्पकार है। उनकी अनेक साध्वी-कृतियां तेरापंथ धर्मसंघ में विद्यमान है। तिमिरनाशक साध्वी कनकप्रभाजी ने अपने पिछले छः दशकों में संघ में ज्ञान प्रकाश की किरणें फैलाई है। आपके विराट व्यक्तित्व क्षमताओं से परिपूर्ण है। साहित्य शृंखला की एक बड़ी सूची आपके भीतर की बहुमुखी प्रतिभा की द्योतक है।

संतोष कुमार सुराणा, संपादक - नूतन भाषा सेतु

'सांसों का इकतारा' पढ़कर एक साहित्यकार के नाते मेरी आत्मा तृप्त हो गई, मानो मैंने भी अमृत पी लिया हो। ऐसा प्रतीत होता है मानो साध्वीश्रीजी ने एक-एक शब्द खदान से ढूंढ कर निकाले हो और उन्हें हीरे की तरह तराश कर, कविता रूपी माला में पिरोए हो।

डॉ. प्रतिभा जैन, साहित्यकार, इन्दौर

महाश्रमणी साध्वीश्री कनकप्रभाजी के प्रमुखा पद ग्रहण का अमृत महोत्सव हो रहा है, यह परम संतोषदायक मंगल समाचार है। देवी सद्गुणों से अलंकृत भक्ति ज्ञान कर्म की साक्षात् करुणामयी चैतन्यदायिनी साध्वीप्रमुखा के निरामय जीवन की कामना।

राम हरकरे, प्रांत संघचालक - राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

तेजस्वी तरुणिमा : श्रद्धासिक्त अभिवन्दना

'सांसों का इकतारा' काव्य संग्रह साध्वीप्रमुखाश्रीजी द्वारा रचित एक उत्कृष्टतम काव्य कृति है। यह कृति अत्यंत ही उत्कृष्ट उपमाओं से अलंकृत रचना के रूप में साहित्याकाश में ध्रुव नक्षत्र के सम देदीप्यमान है।

श्रीमती हिमांशु सुमत जैन, इंदौर

आचार्य तुलसी के कर कमलों से दीक्षित परम श्रद्धेय साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी की बेजोड़ नेतृत्व कला, हृदय में ममता का सागर, वाणी में मृदुता, लेखनी की विद्वता और काव्य शैली तेरापंथ धर्म संघ की ही नहीं सभी के लिए अनमोल रत्न है और आपका जीवन सत्यम शिवम सुंदरम का स्वरूप है, जो समाज और विश्व को अहिंसा और शांति का संदेश दे रहा है।

अंश दीप, कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट – पाली (राजस्थान)

भगवती स्वरूपा मातृहृदया साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी के प्रथम दर्शन ने ही आपकी वात्सल्य पूर्ण प्रेरणा एवं ममता ने हमें सदैव के लिए आपसे जोड़ दिया। आपने गुरुदेव तुलसी के सपनों के अनुरूप ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र में उत्तरोत्तर विकास करते हुए धर्मसंघ की अनेक साध्वियों में साधना, साहित्य, सहिष्णुता, संस्कार, कला, प्रबंधन, कार्यकुशलता एवं अनुशासन क्षमता का विकास एवं निर्माण किया।

गौतम चौरडिया, न्यायाधीश, उच्चन्यायालय – छत्तीसगढ़

आस्था के विराट सुमेरू, जैन धर्म की ध्वजवाहक, विश्व शांति से अनुप्राणित सत्य, अहिंसा की प्रचारिका, ममता की जीवंत प्रतिमूर्ति परम श्रद्धेय साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी को अभिनंदन-वंदन।

भूपेन्द्र कुमार दक, महानिदेशक कारागार, जयपुर

साध्वी प्रमुखा विदुषी कनकप्रभा के साहित्य के पावन पृष्ठों को उलटे-पलटे और अध्ययन-मनन-मंथन-चिंतन करें तथा उनके कनक-सरोवर में गोते लगाये तो अनमोल मोती मिलते हैं। शांति, अहिंसा और प्रेम के त्रिवेणी तीर्थ की संज्ञा है – 'कनक प्रभा'। विद्युत की कौंध का नाम है – 'प्रभा कनक'। अणु-परमाणु की सूक्ष्म विवेचना है- 'साध्वी प्रमुखा'। 'चैतन्य रश्मि' में प्रभा-पुंज से सृजन, कर्त्तव्य, विकास, नेतृत्व, व्यक्तित्व, दायित्व व संन्यास के सतरंगी इन्द्रधनुष सा व्यक्तित्व निखरा तो सांसों से सितार के साथ बुद्धि के इक तारा संग झंकृत कर जीवन का संगीत गाया।

पद्मश्री डॉ. अर्जुनसिंह शेखावत, राजस्थान ज्ञानपीठ, पाली

आधुनिकता व परंपराओं पर संतुलन बनाने वाली नारी शक्ति, चरित्र संपन्न, शील संपन्न, ज्ञान संपन्न तेरापंथ धर्म संघ की साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के नेतृत्व के 50 वर्षों को 'अमृत महोत्सव' के रूप में मनाना जन-जन के लिए कल्याणकारी हैं। आप सहज, सरल, विनम्र, अच्छे वक्ता व लेखिका है। हर नारी के लिए आप प्रेरणा है, आपका जीवन जन उद्धारक है। आपके नेतृत्व के 50 वर्ष सफल व सार्थक रहे हैं।

हेमाराम चौधरी, वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग
राजस्थान सरकार

महाश्रमणी कनकप्रभा जी अपने वचनामृतों से जीवन में एक नये उजाले का संचार कर देती है तथा इस भौतिक युग में उनके त्याग, तपस्या, बलिदान व संस्कार जैसी भावनाओं से एक दिव्य ज्योति प्रस्फुटित होती है साथ ही संयम के पथ पर चलते हुए महान साहित्यकार साध्वी प्रमुखा ने नारी के उत्थान हेतु कार्य किया और नारी जाति को उबारा है।

महाराजा गजसिह, मारवाह-जोधपुर

श्री, धी, धृति और ऐश्वर्य से सम्पन्न तेरापंथ धर्मसंघ की साध्वी प्रमुखा कनक प्रभाजी चन्द्रमा के समान शीतल और सागर के समान गंभीर है। आप नारी जाति के लिए प्रेरणा है कुरूढ़ी में जकड़ी नारी के लिए उद्वारक और आपकी सृजनशीलता कल्पना शक्ति विशिष्ट है। आपकी नेतृत्व शक्ति हर नारी को शक्ति प्रदान करे, उनमें साहस भर दे।

मेवाराम जैन, विधायक, बाड़मेर

संकल्प के साथ सही दिशा में किया गया पुरुषार्थ व्यक्ति को किन ऊंचाइयों तक पहुंचा सकता है इसका साक्षात उदाहरण है साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी। जिस प्रकार शरीर की संपूर्ण इंद्रियों को निश्चित लक्ष्य पर केंद्रित कर व्यक्ति आत्मसाक्षात्कार चित्त समाधि तक पहुंचता है, ठीक इसी प्रकार साध्वी प्रमुखा श्री की संपूर्ण एकाग्रता तेरापंथ धर्मसंघ की साध्वी-समणी समाज के विकास-उर्ध्वगामी संस्कार निर्माण में समर्पित थी। साध्वी प्रमुखा श्री कनक प्रभा जी की लेखनी द्वारा साहित्य सृजन उनकी वाणी एवं व्यवहार से उनकी प्रतिभा के स्पष्ट दर्शन होते हैं। जब वे व्याख्यान देती है तो जिस सरसता की अनुभूति होती है।

विजयकृष्ण नाहर, अध्यक्ष, मरूधर विद्यापीठ समिति, पाली

मातृहृदया असाधारण साध्वी प्रमुखा श्री कनक प्रभा जी ने चतुर्विध धर्म संघ के चहुंमुखी विकास के स्वप्न निरंतर अपनी आंखों में सार्थक होते देखे हैं। कलम की धनी, सरस्वती की वरद् पुत्री की साहित्य साधना अपने आप में बेजोड़ है। अनकेश विशेषताओं से मंडित असाधारण साध्वी प्रमुखा जी शतायु हो, निरामय हो, यही मंगल कामना।

डॉ. कुसुम लता भंडारी, सह-आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

तेजस्वी तरुणिमा : श्रद्धासिक्त अभिवन्दना

असाधारण साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी ने सर्वांगीण विकास के शिखरों को छूने का प्रयास किया है। केवल नारी जाति ही नहीं, संपूर्ण समाज ने भी चहुंमुखी विकास की डगर पर चरण न्यास किया है।

रेखा भाटी, सभापति, नगर परिषद्, पाली

तेरापंथ धर्म संघ की आठवीं साध्वी प्रमुखा महाश्रमणी कनकप्रभाजी के दायित्व काल के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में स्मारिका के प्रकाशन में नारी उत्थान, संप्रदायतीत, धर्म निरपेक्ष, जाति-रंग के भेद-भावों से उपरत, साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा द्वारा अंधविश्वासों और रूढ़-परम्पराओं के क्षेत्र में किये गये विशेष प्रयासों एवं उपलब्धियों को उजागर किया जाएगा, सफल प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रताप सिंह खाचरियावास, खाद्य व नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले विभाग - राजस्थान सरकार

Sadhvi Pramukha Kanak prabha ji is an eminent writer. Had an opportunity to read a few books, I found the depth of her thoughts coinciding with wonderful combination of words. Why the whole sect is so excited to celebrate Amrit Mahotsav, is now very well known to me after reading her views. Much regards.

Tishani Doshi, Poet & Journalist

Oh! Its so overwhelming to read and know a personality who is so much clear in her vision.
I am thankful to Neelam Sethia for sharing her discourses and articles. Humble suggestion to compile all her writings for new generation to get clarity about difference between spirituality & being religious. My regards to the icon of jains Sadhvi Pramukha Kanak Prabha.

C S Lakshmi, Feminist Writer

Kalakshetra Foundation, is an arts and cultural academy dedicated to the preservation of traditional values in Indian art and crafts. It was enlightening to know and read about this eminent personality, whose name was Kala in her homely days and it reflects in her stream of thoughts. Salutations to intellect creative thinking. Knowledge imparted by her through her articles have left imprints to carry throughout. Kudos to Smt. Neelam ji for sharing articles. Hope to read her books soon.

Revathi Ramchandran, Director, Kalakshetra

Revered Sadhvi Pramukha ji has acquitted herself creditably by rendering religious and spiritual service unceasingly for a long period of Five decades in the capacity of an able leader by motivating, guiding and encouraging her fellow Jain Nuns to devotedly serve the religion and society. It is verily a mammoth task worthy of admiration and praise. Undoubtedly the Revered Sadhviji has made a great historical achievement by creating a record in this sphere.

Dr Sreedharan, Chennai

As a family and as doctors in a profession that serves the sick, it is an honor and privilege to write a few words about Sadhvi Pramukha Shriji. It was fortunate that we had the opportunity to meet her in the first place, the meeting was memorable for many reasons, most of all was the indelible impression she left on our minds. Her warmth, her kindness and her spirit are inspiring and makes her special. Her literary and artistic skills are unique and need no mention, but they in many ways add to her personality and give her the special ability to touch many lives and impact them in special ways. We believe, she can be equated to a shepherd that continually looks out, tends, nurtures, caresses and guards her flock. Our lives have changed immeasurably by her grace and her presence, we consider ourselves very fortunate to be considered in her flock.

Dr. Sandeep Attawar
Dr. Pinkoo Attawar

साध्वी प्रमुखा जी श्रमणी गण का शृंगार होती है। कनकप्रभा जी ने अपनी कोमल हृदयता के साथ-साथ अनुशासन के सम्मिश्रण, प्रशासनिक दक्षता एवं गुरु के प्रति असीम श्रद्धा एवं विनय के बल पर इस दायित्व को बखूबी पूर्ण कुशलता के साथ निभाना प्रारंभ किया जिसमें उत्तरोत्तर दिन-प्रतिदिन निखार ही आया है एवं आज वो स्वर्णिम आभा के रूप में महक रहा है।

ओ.पी.जैन, अति आयुक्त - देवस्थान विभाग, राजस्थान

दुर्गास्ति या विमलदुर्लभशक्तिरूपा
लक्ष्मीर्वरा सकलवाञ्छितसिद्धिरूपा।
ब्राह्मीव भाति शुभशास्त्रनिधिस्वरूपा
साध्वीशिरोमणि महाश्रमणी प्रमुख्या।

इस धरा से उस गगन के
पार तक तेरी कहानी ।
हे प्रभा के वलय ! चारों
ओर देती है सुनाई ।।

रच दिया इतिहास स्वर्णिम
शासना की अर्द्ध सदी का ।
भर दिया आलोक उसमें
सत्य, शिव, सुंदर मति का ।।

रोहिणी में अमृत वर्धापना

अपरिमित प्रज्ञा: पांच दशकों की
साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के मनोनयन अमृत महोत्सव पर श्रद्धासिक्त अभिवंदना - ३०.०१.२०२२

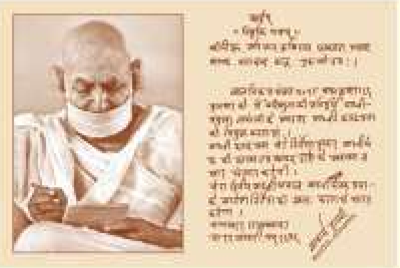

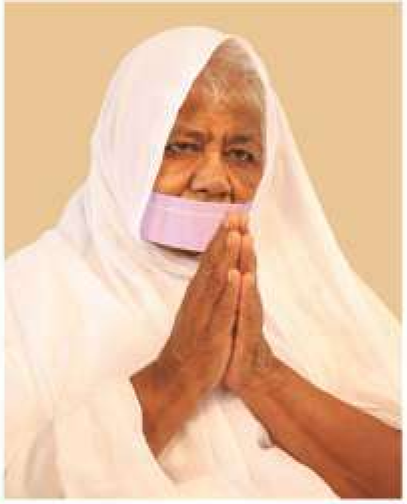

गुरुदेव श्री तुलसी ने साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा के रूप में एक व्यक्तित्व को धर्मसंघ के सम्मुख प्रस्तुत किया जो अष्टम साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा के रूप में संघ को अपनी सेवाएं दे रही हैं। गुरुदेव श्री तुलसी के समय आपको खूब सेवा और उनके चरणों में बैठकर कार्य करने का मौका मिला। ऐसा स्वर्णिम अवसर हर किसी को नहीं, किसी भाग्यशाली साध्वी को ही मिलता है। उनमें एक नाम साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी का है। गुरुदेव श्री तुलसी ने आपको आचार्यों के सामने पट्ट पर बैठने की बख्शीश प्रदान कर दी, इस प्रकार आप असाधारण साध्वी प्रमुखा हैं।

आचार्य महाश्रमण

आपने (साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी) २६ वर्ष गुरुदेव तुलसी के सान्निध्य में कार्य किया। १३ वर्ष आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के उपपात में कार्य किया। अब आपकी सेवा हमें प्राप्त हो रही है। यह दीर्घकाल तक मिलती रहे।

आचार्य महाश्रमण

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा को मैंने जब से देखा, सहज भाव से विनम्र पाया। इसका समर्पण अनिर्वचनीय है। सत्यनिष्ठा और पापभीरुता इसे प्रकृति से प्राप्त है। अभिमान तो इसे छू भी नहीं सका। मैंने अपनी पारदर्शी दृष्टि से इन सबका आकलन किया। मुझे स्पष्ट दिखाई दिया कि यह साध्वी समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है। इसी चिंतन के आधार पर इसे साध्वीप्रमुखा का गरिमापूर्ण दायित्व मैंने सौंपा है।

आचार्य तुलसी

दायित्व उन्हें सौंपा जाता है, जिनमें क्षमता हो, योग्यता हो। कनकप्रभाजी में दोनों हैं। इनमें प्रबुद्धता है, कर्मठता है, लेखन की, वक्तृत्व की क्षमता है। कर्तव्यनिष्ठा है। मुझे प्रसन्नता है कि साध्वी प्रमुखा उत्तरोत्तर योग्यता को बढ़ा रही हैं। इनकी विनम्रता को प्रथम श्रेणी में रखा जा सकता है। साध्वी प्रमुखा ने योग्यता की कसौटी में शत प्रतिशत नहीं, सदा सौ नम्बर प्राप्त किए हैं, हर दृष्टि से खरी उतरी है। सहिष्णुता में वे नम्बर वन हैं। वैराग्य व साधुत्व के प्रति इनकी निष्ठा बेजोड़ है।

आचार्य महाप्रज्ञ

असाधारण साध्वी प्रमुखाश्रीजी

दि. 30 जनवरी 2022

श्रद्धासिक्त वन्दन एवं सुखपृच्छा।

हे सती शेखरे। पिछले पचास वर्षों से आप तेरापंथ के साध्वी समुदाय और महिला समाज को सक्षम नेतृत्व प्रदान कर रही हैं। अनगिन उपकारों से आपने हमारी झोली भर दी। आनन्द, गौरव, आह्लाद, कृतज्ञता आदि अनेक भाव भीतर उमड़–घुमड़ रहे हैं। सोचा, क्यों न एक पाती के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति दें।

महाश्रमणीवरा! भावों के निरभ्र आकाश में उड़ान भरने के लिए आप जैसी समृद्ध और प्रांजल भाषा के पंख हमारे पास नहीं हैं। ये पाती सीधे–सादे शब्दों में अपने हृदय के भावों को उडेलने का प्रयास भर है।

हे कुशल प्रशासिका! 30 वर्ष की उम्र में जहां महिलाएं अपने परिवार की जिम्मेदारी भी ठीक से नहीं संभाल पाते, वहीं आपने इतने विशाल साध्वी समुदाय और महिला समाज को सक्षम नेतृत्व प्रदान कर सबको विस्मय विमुग्ध कर दिया। गुरु निष्ठा, संघ निष्ठा, कर्त्तव्यनिष्ठा, शुचिता और समर्पण के न जाने कितने प्रतिमान आप रोज गढ़ती हैं। आखिर कौन से दिव्य परमाणुओं से आप निर्मित हैं... यह हम सबके लिए आश्चर्य की बात है।

हे ममता की मंदाकिनी! महाश्रमणी स्पर्श का जादू तो हमने खूब अनुभव किया है। मन विचलित हो, अधीर हो, चिन्तित हो... सिर पर आपके जादुई हाथ का एक स्पर्श मन को एक नई ऊर्जा से भर देता है। आधुनिकता की आंधी में हमारे कदम भी बार–बार डगमगाते हैं। कभी–कभी लगता है हमारी नादानियों पर आपको क्रोध क्यों नहीं आता। पर आप तो चेहरे पर स्मित मुस्कान लिए, कोमल और मृदु अनुशासन के साथ हमारे भटके कदमों को सही दिशा में प्रवृत्त कर देती हैं। हमें जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सुरक्षा का पाठ पढ़ाकर आप निरन्तर हमारी नींव को सिंचन दे रही हैं और हमारा वर्तमान ही नहीं, सुन्दर भविष्य भी गढ़ रही हैं। आपके इस अमूल्य श्रम की महत्ता का सही अंकन तो आने वाला युग ही कर पाएगा।

हे सरस्वती स्वरूपा! हमने जब भी आपको देखा है, हमेशा सृजनरत ही देखा है... सुबह, दोपहर, शाम। जिन्दगी के हर पल को सृजनात्मक बनाने की एक जीवन्त पाठशाला हैं आप। आपका अद्भुत प्रेरक व्यक्तित्व और आपकी ये संक्रामक सृजनशीलता हमें भी गतिशील ऊर्जा से भर देती है। आपके पावन सान्निध्य में बिताए पल हमारे जीवन के सर्वोत्तम क्षण हैं जिनके सामने दुनिया के तमाम वैभव फीके व छोटे पड़ जाते हैं।

हे जगवत्सला! आप हमारी प्रेरणा हैं, ऊर्जा हैं, संबल हैं, विश्वास हैं। आपके असीम वात्सल्य के लिए आभार शब्द बहुत छोटा है। आपकी उदात्त उदारता के लिए धन्यवाद शब्द बहुत कम है। आपके सतत मार्गदर्शन के लिए कृतज्ञता शब्द अपर्याप्त है। आपके ऋण से उऋण होने के प्रयास में हम आजीवन आपके बताए मार्ग पर चलते रहें, इतना आशीर्वाद आप हमें अवश्य दें।

धरती, अम्बर और दसों दिशाओं के साथ मिलकर पूरा महिला समाज एक स्वर में बस यही अभ्यर्थना कर रहा है–

संघ महानिदेशिका चिरायु हों, चिरायु हों।

श्रद्धानत
समस्त महिला समाज

जवाबी
REPLY

पोस्ट कार्ड POST CARD

ममतामयी मां

मातृहृदया के हृदयद्वार

पैगाम लिये जो जाती।

अन्तरमन की श्रद्धा को दे शब्द,

लिखें इक पाती॥

पिन PIN

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के मनोनयन अमृत महोत्सव पर हार्दिक अभिनन्दन

स्मृति में

श्रीमती मोहनीदेवी बाफना – श्री प्रकाशचन्द्र बाफना

शुभकामनाओं सहित

श्री भेरुलाल बाफना

श्रीमती विमलादेवी बाफना

सुनील–रीना, भरत–चेतना, निर्मल–रूपल, दीपक–सोनल,
प्रज्वल, खुश, रिसिका, प्रांजल, मंथन, अवधि, किवान, धृति
एवं समस्त बाफना परिवार

लावासरदारगढ़ – राजाजीनगर (बेंगलुरु)

प्रेमलता–शान्तिलालजी लोढ़ा, बेंगलुरु

लीलावती–पारसमलजी सिंघवी, अहमदाबाद

सज्जन–सुरेशजी सोलंकी, कांकरोली

हेमा–नेमीचन्दजी धाकड़, मुम्बई

prajwal group

PRAJWAL
SURGICALS & SCIENTIFICS
DEEPAK 9880038255

MANJUSHREE
MEDICALS
BHARATH 9886114333

Rehamo
Rehab & Mobility Concept Store

REHAMO
First Mobility
Healthcare Store of India
SUNIL 9900065130

मनोनयन वर्ष

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी
के मनोनयन अमृत महोत्सव
पर श्रद्धाप्रणत अभिवन्दना

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

पंजीकृत कार्यालय
रोहिणी भवन, जैन विश्वभारती
लाडनूं – 341 306. जिला : नागौर (राज.)

www.abtmm.org | Mobile App : abtmm | facebook.com/abtmmjain/ | instagram@abtmmterapanth

लिखें शक्ति की नई ऋचाएं, अनुशासन के दीप जलाएं

KHATER 98400 85004